मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 54 | अंक : 8 | फरवरी, 2014 | मूल्य : ₹10

शिविरा, फरवरी–2014

चित्र समाचार

41वीं शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता 2013-14

27–30 दिसम्बर 2013 सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर

राजकीय सादुल स्पोर्ट स्कूल के विशाल मैदान में मंत्रालयिक कर्मचारियों की 41वीं खेलकूद व सांस्कृतिक प्रतियोगिता के शुभारम्भ अवसर पर भव्य मंच का भाव पूर्ण दृश्य।

शुभारम्भ अवसर पर मुख्य अतिथि श्री मगनसिंह राजवी कर्मचारी खिलाड़ियों को सम्बोधन प्रदान करते हुए।

मुख्य अतिथि महोदय के उद्बोधन को श्रवण करते कर्मचारी खिलाड़ी।

जीवन में खेल की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए मोहम्मद इदरीस खान, तत्कालीन प्रधानाचार्य एवं उपनिदेशक खेलकूद, माध्य. शिक्षा निदेशालय

कैरम प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त टीम को सम्मानित करते मुख्य अतिथि डॉ. गोपाल जोशी, माननीय विधायक एवं अधिकारीगण।

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 64 | अंक : 8 | माघ–फाल्गुन २०७० | फरवरी, 2014

प्रधान सम्पादक
विकास एस. माली

वरिष्ठ सम्पादक
ओमप्रकाश सारस्वत

सहायक
सांव सिंह
सुकेशा व्यास
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 10

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 50
- संस्थाओं/विद्यालयों/अन्य व्यक्तियों के लिए ₹ 100
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम देय है।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक
शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334 011
दूरभाष : 0151–2528875
फैक्स : 0151–2201881
E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –वरिष्ठ संपादक

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- गुणवत्ता की ओर बढ़ें कदम 5
  आदेश
- पहुंचाना होगा विज्ञान को जन–जन तक 6
  हरि कृष्ण आर्य
- विज्ञान बनाम चमत्कार 9
  मोहम्मद फारुक चौहान
- सितारों के लिए बनी हूँ मैं 11
  विश्वनाथ भाटी
- ज्ञान की वीणा, प्रेम की वेणु 12
  प्रकाश पंड्या
- वैदिक ऋषि का वाचकन्वी–गार्गी 14
  राम जीवन सारस्वत
- प्रार्थना की अभ्यर्थना 16
  डॉ. वाक्यपाल गुप्ता
- प्रार्थना की ताकत 19
  चेतना उपाध्याय
- स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचार 21
  सुरेशचन्द्र खटीक
- स्काउट व गाइड के संस्थापक लार्ड बेडेन पावेल 23
  डॉ. राजेन्द्र श्रीमाली
- समुद्री पर्यावरण : एक विवेचन 29
  रामगोपाल राही
- फूलों शिक्षण द्वारा भावनात्मक एकता 30
  शिवचरण मंत्री
- माँ जीजाबाई ने बनाया शिवा को शिवाजी 32
  साधना गर्ग
- गणित में विचित्रता 33
  एम.एस. कश्वां
- अथर्ववेद का शिक्षा दर्शन 34
  शिवचर प्रसाद बिस्सा शास्त्री
- मरुधरा को मिलकर स्वर्ग बनाएंगे 37
  डॉ. आर.पी. कर्मयोगी
- प्रेम बिना यह जीवन तो अनजाना है 39
  डॉ. कमलालाल बाबली
- हरि को भजे सो हरि का होई 40
  महेश कुमार चतुर्वेदी
- पढ़ाने के जुनून से मिला यश 44
  बुद्धि चन्द गोदवाल
- शिक्षा : क्या, क्यों और कैसे 45
  उदयलाल सेन

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

- बस नगरी है भीलवाड़ा 41
  ओमप्रकाश ढ़ौंचर

उपाध्याय

- आदेश–परिपत्र 25–28
- निबालय प्रसारण कार्यक्रम 46
- शिविरा पंचांग 46
- रपट । वीरेन्द्र सिंह पंवार 36
- हमारे मामाशाह 49
  इस माह का गीत
- नई किरण विज्ञान की 20
  प्रो. हरिराम आचार्य

पुस्तक समीक्षा 47–48

- आगी नाफता पांखड़ा : पुष्पलता कश्यप
  समीक्षक । मंजू सारस्वत
- काव्य सुमन : चेतना उपाध्याय
  समीक्षक । मोनिका गौड़
- परम्परागत आलोचना । आलोचना रै आंगणै
  –डॉ. नीरज दइया
  समीक्षक : राजेन्द्र जोशी

विविध

- शिक्षकों के लिए सुप्रकाश निर्देशित सपथ 13
- शिविरा शान है 22
- जश्न–ए–जोश : डॉक्टर बने एरिक 24
- सरस्वती पुत्र सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' 31
- कार्टून 35
- सही दिशा, बेहतर जीवन 43

प्रतिध्वनि

- विज्ञान और दर्शन में अन्तर्सम्बन्ध 50

आवरण :
अभिनाश कुमावत, जयपुर
मो. 09261355185

▼ **विचार**

यह उन्नत आकाश हमारे यश
की व्यापक परिधि बने,
तेज हमारा देवों से भी
उत्तम हो, अत्युत्तम हो।
—ऋग्वेद

पाठकों की बात

- जनवरी 2014 (नववर्ष) का शिविरा अंक प्राप्त हुआ। आवरण पृष्ठ पर स्वामी विवेकानन्द, सुभाषचन्द्र बोस, महात्मा गांधी के चित्रांकन मनोहारी लगे। महात्मा गांधी का प्रसंग 'अप्पमेव जयते' पाठकों के लिए यथार्थ में प्रेरक व सीख देने वाला है। मकर संक्रान्ति, स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक चिन्तन, स्वामी रामतीर्थ, दरवाजा खुला है, नववर्ष का संकल्प रम्य रचनाएं हैं। अटलजी की कविता 'जंग न होने देंगे' प्रकाशित कर संपादकजी ने पाठकों के मन को हर्षित, उमंगित कर दिया है।

—**टेकचन्द शर्मा**, पूर्व शिक्षा अधिकारी
शर्मा सदन, मुनि आश्रम के पास, झुंझुनू

- शिविरा जनवरी 2014 का अंक देखने का मौका मिला, आनन्द की अनुभूति हुई। मुखावरण मनमोहक व आकर्षक लगा। पत्रिका दिनोंदिन अपने नये आयामों को छू रही हैं। लेखों व अन्य प्रकाशित सामग्री का चयन, दिशाकल्प, प्रतिध्वनि, प्रकाशित रचनाओं की सटीक क्रमबद्धता सब कुछ उत्कृष्ट है। आप स्वयं श्रेष्ठ चिंतक, प्रखर साहित्यकार और सबको साथ लेकर चलने वाले व्यक्ति हैं। पत्रिका उत्तरोत्तर प्रगति करें, ऐसी मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें।

—**इन्द्रा शास्त्री**, प्रधानाध्यापिका
बाबा श्री सोमनाथ रा.उ.प्रा.संस्कृत वि., सरदारशहर

- शिविरा पत्रिका जनवरी 2014 अंक बहुत ही अच्छा लगा। मैं शिविरा पत्रिका का पिछले 18 वर्षों से नियमित पाठक हूँ। कवर पृष्ठ पर स्वामी विवेकानन्द एवं नेताजी सुभाष चन्द बोस का सुन्दर चित्र युवा वर्ग के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। पानी की बचत सम्बन्धी प्रेरणा देती कहानी—"बूस्टर" के लिए श्री ओमप्रकाश सारस्वत का प्रयास बहुत ही सराहनीय हैं। विद्यालयों से प्राप्त विभिन्न समाचार हेतु प्रारम्भ किया गया नया कॉलम "शाला प्रांगण से" अच्छा लगा। कैरियर-डे विशेष पर 'जो चाहे बन जाये बालक' उषा टेलर का प्रयास प्रेरणादायक एवं प्रशंसनीय हैं।

—**जगदीश सेन**, बूबैला (पाली)

- शिविरा पत्रिका जनवरी 2014 के आकर्षक मुखावरण के लिए बधाई। दिशाकल्प के अन्तर्गत निदेशक महोदया का कथन "आगामी तीन माह मनोयोग-पूर्वक अध्ययन-अध्यापन के होगें" शिक्षकों मे स्वाध्याय के प्रति प्रेरणा प्रदान करता है। श्रीमती निर्मला देवी द्वारा बालिका शिक्षा के अन्तर्गत "करे हम बेटी का सम्मान" घटते लिंगानुपात के प्रति सावचेत करते हुए बालक-बालिका को समान अवसर उपलब्ध कराने हेतु भावी पीढ़ी को प्रेरित करती है। साथ ही "स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक चिन्तन" शिक्षक समाज विद्यार्थी वर्ग के लिए प्रेरणा स्रोत रहेगा। —**हरिसिंह प्रजापत**

रा.उ.मा.वि. नयागांव बौल्का (अलवर)

- "सफलता की सीढ़ी : आत्म विश्वास" लेख पढ़ने के पश्चात् पाठक में स्वतः ही आत्म विश्वास पैदा होता है। भागीरथ का लक्ष्य गंगा को पृथ्वी पर लाना था किंतु उसमें आत्म विश्वास भी था। महावीर स्वामी और महात्मा बुद्ध ने कैवल्य प्राप्त किया, आत्मविश्वास उनके साथ था। आत्मविश्वास का बीजारोपण बालक में माँ और शिक्षक ही कर सकते हैं। आज एक बार फिर बीजा बाई और स्वामी रामकृष्ण परमहंस की आवश्यकता हैं।

—**महेन्द्र कुमार शर्मा**

रा.उ.मा.वि. बाघसूरी (अजमेर)

- नव वर्ष के प्रथम अंक में निदेशक महोदया द्वारा शिक्षा जगत को प्रेषित मंगल कामना में निहित अमूल्य विचार प्रत्येक जन को आत्म मंथन का अवसर प्रदान करते हैं। वास्तव में शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षक, अभिभावक, विद्यार्थी तथा समाज में परस्पर सामंजस्य पर निर्भर है, विद्यार्थी ज्ञान ग्रहण कर समाज का उपयोगी सदस्य बने, इस दिशा में शिक्षकों की अग्रणी भूमिका नितान्त आवश्यक है।

—**गुलशन मेहरा**

गोपुन्दा (उदयपुर)

- नव वर्ष के शुभागमन पर जनवरी 2014 का अंक मुझे प्राप्त हुआ। मन में लगा कि शिक्षा विभाग से सुखद भावनाओं की सौगात देने वाली यह पत्रिका वह सब हमें उपलब्ध करा देती है, जिससे मन में ऊर्जा का संचार होता है, साथ ही विभिन्न विषयों के संबंध में व्यक्त विचार शिक्षा जगत के संकल्प को पूरा करने में सहायता करते हैं। अपनी अनवरत लम्बी इस यात्रा में परम्परागत गौरवान्वित पृष्ठभूमि में शिविरा पत्रिका अब व्यापक साहित्यिक परिवेश में अनुकरणीय बोध करा रही है। दिनो दिन पत्रिका अपनी गहरी छाप पाठकों के मन पर छोड़ रही है। हृदयस्पर्शी, जिन्दगी को संवारने वाली पत्रिका के लिए शुभकामनाएँ।

—**महेशचन्द्र श्रीमाली**

प्रताप नगर, उदयपुर

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

गुणवत्ता की ओर बढ़ें कदम

विकास एस. भाले
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

राजस्थान के कोने-कोने में शिक्षा की अलख जगा रहे शिक्षक भाई-बहनों के विशाल परिवार से जुड़कर मुझे आत्मिक हर्ष की अनुभूति हो रही है। इससे पूर्व मुझे प्रारम्भिक शिक्षा के निदेशक पद पर कार्य करने का अवसर मिला था। इस प्रकार स्कूल शिक्षा की दोनों धाराओं के साथ कार्य करने का मौका मिलना मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ। सर्वप्रथम मैं सभी शिक्षक साथियों का अभिनन्दन करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

शिक्षा को जीवनदायनी कहा जाता है। शिक्षा से ही उस योग्यता व क्षमता का विकास व्यक्ति में होता है जो अन्ततः उसके सुखी व समृद्ध जीवन का आधार बनता है। यही कारण है कि शिक्षा व शिक्षकों को हमारे समाज में बहुत गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। शिक्षक अपना कार्य मिशन भावना के साथ करते हुए अपने संकल्प में सिद्धि प्राप्त करें, मेरी परम पिता परमात्मा से यही प्रार्थना है।

वर्तमान शैक्षणिक सत्र 2013-2014 का अधिकांश समय व्यतीत हो चुका है। मुझे विश्वास है कि विगत महीनों में बालक-बालिकाओं के प्रभावी अध्ययन-अध्यापन का कार्य विद्यालयों में हुआ है। हमारा उद्देश्य शिक्षा के संख्यात्मक विकास के साथ गुणात्मक विकास का भी होना चाहिए। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की प्रायोगिक परीक्षाओं की शुरुआत से इस सत्र की वार्षिक परीक्षाओं का आगाज हो चुका है। अगले माह सैद्धान्तिक परीक्षाएं शुरू हो जाएंगी। मेरी शिक्षकों से अपील है कि वे पूर्ण मनोयोग के साथ बालक-बालिकाओं का शैक्षिक मार्गदर्शन कर उनकी सफलता सुनिश्चित करें।

याद रखिए, माँ-बाप अपने बच्चों को शिक्षकों को सौंपकर एक बड़ा उत्तरदायित्व उनके नाम लिख देते हैं। सभी अभिभावक अपने बच्चों की सफलता चाहते हैं। यह सफलता गुरुजन के समर्पणपूर्वक परिश्रम में निहित रहती है। मैं अपने विद्यार्थी काल का जब स्मरण करता हूँ तो ऐसे समर्पित शिक्षकों की छवि मानस पटल पर सहज ही में उभर आती है। दरअसल आज मैं जो कुछ भी हूँ, उन गुरुजन की कृपा से ही हूँ। आज की पीढ़ी के शिक्षकों को पुरातन गुरु-शिष्य परम्परा को स्मरण कर स्वयं को आदर्श शिक्षक के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।

बोर्ड परीक्षा की सुनियोजित तैयारी करवाने के लिए विशेष उपचारात्मक कक्षाएं प्रत्येक माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय में लगाने के निर्देश निदेशालय से प्रसारित हुए हैं। मेरी अपील है कि संस्था प्रधान एवं शिक्षक पूर्ण रुचि लेकर इन कक्षाओं का आयोजन करें। इससे आपके परीक्षा परिणाम का निश्चय ही उन्नयन होगा। और हाँ, ऐसा करने से जो सुख व आत्मसन्तुष्टि आपको मिलेगी, उसको शब्दों में व्यक्त किया ही नहीं जा सकता।

विद्यालयों को महज अंक-अक्षर का ज्ञान सिखाने वाली संस्थाओं से ऊपर उठकर बालक-बालिकाओं के शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक एवं सांस्कृतिक सभी पक्षों को ध्यान में रखकर उनके सर्वतोमुखी विकास का मंच बनना चाहिए और यह सब आप शिक्षकों की मेहनत, अध्यवसाय, प्रतिबद्धता एवं समर्पण में निहित है। आप खूब पढ़ें और अपने ज्ञान की गहराई से विद्यार्थियों के पथ प्रदर्शक बनें, बस मैं यही चाहता हूँ।

अन्त में एक बार पुनः आप सभी के प्रति अनन्त शुभकामनाओं के साथ,

(विकास एस. भाले)

▼ परिचय

श्री विकास सीताराम जी भाले ने दिनांक 20 जनवरी 2014 को निदेशक, माध्यमिक शिक्षा एवं पदेन राज्य परियोजना निदेशक, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद् का पद भार ग्रहण किया। आपका जन्म 6 जून 1967 को महाराष्ट्र राज्य में हुआ। इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग में स्नातक तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय (International Business) में अधिस्नातक की उपाधि प्राप्त श्री भाले का भारतीय प्रशासनिक सेवा में वर्ष 1999 में चयन हुआ। आप दौसा, बांसवाड़ा, चूरू, उदयपुर एवं नागौर में जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, निदेशक, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा सचिव, राजस्थान लोक सेवा आयोग सहित विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत रहे हैं। आप शैक्षिक गुणवत्ता एवं प्रशासनिक तंत्र को मजबूत करने के पक्षधर हैं।

विज्ञान दिवस विशेष

पहुंचाना होगा विज्ञान को जन-जन तक

□ हरि कृष्ण आर्य

श्री हरिकृष्ण आर्य आदर्श शिक्षक, कुशल प्रशासक एवं दक्ष प्रशिक्षक हैं। शिक्षण व अधिगम में सूचना, संचार एवं प्रौद्योगिकी के द्वारा श्री आर्य कम्प्यूटर क्षेत्र में महारत हासिल है। आपको कम्प्यूटर के क्षेत्र में कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें राष्ट्रपति द्वारा प्रदत्त कम्प्यूटर सिटीजनी टेक्नोलॉजी अवार्ड 2004, शिक्षा में आई.टी.सी. के सर्वोत्तम उपयोग के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार 2012 तथा माइक्रोसॉफ्ट द्वारा प्रदत्त अन्तर्राष्ट्रीय इनोवेटिव टीचर लीडरशिप अवार्ड 2012 प्रमुख है। आप शिविरा के नियमित लेखक एवं शुभचिन्तक हैं। -सम्पादक

विगत शताब्दी को यदि विज्ञान की शताब्दी कहा जाय तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। पिछली शताब्दी में विज्ञान ने जो चमत्कारी उपलब्धियां हासिल की हैं, उन्हें तत्कालीन सोच के धरातल पर देखा जाए तो ऐसा कभी संभव हो सकेगा, यह अकल्पनीय ही लगता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने पूरी दुनिया को बदल दिया है। दूरियां सिमट गई है। संपूर्ण भूमंडल एक विश्वग्राम में परिवर्तित हो रहा है। भूगर्भ से लेकर धरातलऔर आसमान और बाह्य अंतरिक्ष तक मानव की पहुंच और दखल हो गई है। आज वह सौरमंडल के दूसरे ग्रहों की ओर रुख किए हुए है। वहां मानव बस्तियां बसाए जाने की तैयारी है। सौरमंडल से बाहर जीवन की खोज हेतु यान भेजे जा रहे हैं। ये चीजें जो आज हकीकत हैं, एक सदी पहले के विज्ञान लेखकों के लिए गल्प का विषय हुआ करती थीं। लेकिन वैज्ञानिक क्रांति ने कल्पना को सच्चाई में बदल दिया है। इंसान के हजारों साल के इतिहास में उतना बदलाव नहीं हुआ जितना पिछली शताब्दी में हुआ, मुमकिन है इतना ही इक्कीसवीं सदी के चतुर्थांश में हो जाय। यानी एक पीढ़ी के अंतराल में ही आश्चर्यजनक परिवर्तन देखने को मिलें।

अब अहम प्रश्न यह है क्या इतनी वैज्ञानिक प्रगति के बाद समाज में वैज्ञानिक चेतना और जागरूकता आ पाई है? यदि हां तो कितनी, और नहीं तो क्यों नहीं। अब यह जानना भी आवश्यक होगा कि यह वैज्ञानिक चेतना है क्या? वैज्ञानिक चेतना का अर्थ है रोजमर्रा के जीवन में विज्ञान सम्मत ढंग से सोचने, तर्क करने और घटनाओं तथा प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण करने की प्रवृत्ति का जागरण। आज विज्ञान हमारे घरों में तथा रसोई तक में दाखिल हो चुका है। मिक्सर ग्राइंडर, जूसर, कुकर, इलैक्ट्रिक तथा माइक्रोवेव ओवन, और न जाने क्या-क्या उपकरण आम आदमी के घर की जरूरत हो गए हैं। रेडियो, टी.वी. म्यूजिक सिस्टम, घड़ियां, डिजिटल कैलेंडर, कैल्कुलेटर घर-घर में आम होते जा रहे है। संचार के साधनों में बेसिक टेलीफोन, मोबाइल फोन, स्मार्ट फोन, इंटरनेट, ई-मेल, फैक्स जरूरत बनते जा रहे हैं। दुनिया भर में कहां क्या हो रहा है, इसे जानने के लिए बस एक बटन दबाने भर की जरूरत है। यातायात में तीव्र क्रांति हो गई है घंटे भर में कहीं से कहीं पहुंचा जा सकता है। चिकित्सा के क्षेत्र में कितना बदलाव आया है। एक से एक अधुनातन तकनीकों के आ जाने से कठिन से कठिन शल्य क्रिया आसान होती जा रही है। कृत्रिम अंग बनाने लग गए हैं। कृषि के क्षेत्र में जुताई-बुआई से लेकर निराई-गुड़ाई, खरपतवार नियंत्रण, फसल की कटाई और मड़ाई, अन्न भंडारण आदि सभी में यांत्रिक साधनों का प्रयोग हो रहा है। क्या-क्या नहीं बदला है तेजी से। इन आविष्कारों के मूल में कुछ वैज्ञानिक सिद्धांत होते हैं जो सार्वत्रिक होते हैं। एक आम आदमी भी अपने अंतर्मन में इसे कहीं न कहीं महसूस करता है।

आज इतनी वैज्ञानिक प्रगति के बाद भी हम अंधविश्वास में डूबे हुए हैं। हमारे देश का तो कमोबेश हर नागरिक इसकी गिरफ्त में है। चाहे कितना ही बड़ा आदमी हो, बिल्ली रास्ता काट जाए या सामने से कोई छींक दे, तो वह तुरंत गाड़ी से उतर जाता है। आज भी धन और पुत्र प्राप्ति हेतु नरबली की सैकड़ों घटनाएं समाचार के माध्यमों से सुनने को मिलती हैं। लोग अपने बच्चे की बलि तक दे देते हैं। यह अन्धविश्वास की पराकाष्ठा का नमूना है। नर बलि के ज्यादातर शिकार मासूम बच्चे होते हैं। सुदूर ग्रामीण अंचलों में खास कर जनजातीय क्षेत्रों में चुड़ैल और डायन घोषित कर किसी महिला को सरेआम मार डालने या अपमानित करने की घटनाएं किसी के लिए नयी नहीं हैं। भूत-प्रेतों की बातें भी खूब सुनते हैं। तांत्रिकों, ओझाओं और बाबाओं के गारंटी सहित सर्वमनोकामना पूर्ण करने के दावे वाले विज्ञापन देश के प्रायः हर शहर, हर कस्बे में देखने को मिल जाएंगे। ये नौकरी, धंधा, कर्ज मुक्ति, जादू-टोना से लेकर कोर्ट-कचहरी के मामले को भी मनोनुकूल हल करने का दावा करते हैं। यही नहीं इन्हीं के साथ हस्तरेखा देखकर भविष्य बताने वाले भी डेरा डाले सहज मौजूद रहते हैं। एक छोटी-सी खबर जंगल की आग की तरह फैला दी जाती है कि गणेश जी दूध पी रहे हैं। अफवाह फैलती है कि रात को सोए तो पुतले बन जाएंगे, मूर्तियाँ बन जाएंगे तो लोग सारी रात जागते हैं। दीवारों पर हवेलियों की छाप लगा कर भूत-प्रेतों से बचने का उपाय किया जाता है। हम इतनी मामूली-सी विज्ञान की समझ भी लोगों में अभी तक नहीं डाल पाए। विज्ञान युग का यह दूसरा स्याह पहलू है।

हमारे देश का समाज बहुत पहले से ही परंपरावादी रहा है। समय के साथ इसमें रूढ़ियां और दकियानूसी विचारों ने घर कर लिया। यद्यपि यह तथ्य है कि एक समय भारतीय समाज ज्ञान-विज्ञान की पराकाष्ठा पर था जब गणित, चिकित्सा और खगोल-विज्ञान में दुनिया उसका लोहा मानती थी। यह दुनिया की दूसरी सभ्यताओं से कदाचित उच्चतर पायदान पर थी। लेकिन मध्यकाल के दौरान ऐसा सामाजिक संक्रमण का काल आया जब इन विधाओं पर मानों एक तरह से ग्रहण-सा लग गया। यह एक निर्विवाद तथ्य है कि आधुनिक विज्ञान में भारत का योगदान अत्यल्प है। यूरोपीय नवजागरण से लेकर आज तक की तीन सदियों के दौरान विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जो कार्य हुए हैं उनमें पश्चिम का ही ज्यादातर योगदान है।

कहने को आज हम विज्ञान युग में रह रहें है, किन्तु यह सच है कि हमारी सोच अभी वैज्ञानिक नहीं हो पाई है और हम में वैज्ञानिक जागरूकता का अभाव है। वैज्ञानिक सोच और वैज्ञानिक जागरूकता के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण का होना नितांत आवश्यक है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण तर्क आधारित दैनिक जीवन में निर्णय लेने की प्रवृति का मूलाधार होता है। इसमें पक्षपात और पूर्वाग्रहों का कोई स्थान नहीं होता. है। जिस मनुष्य ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण को आत्मसात कर लिया है उसका मस्तिष्क अति जिज्ञासु और ग्रहणशील हो जाता है। इसके बाद वह किसी भी बात को आँख मूंद कर स्वीकार नहीं करता बल्कि वह सबसे पहले स्वयं उस मुद्दे पर चिंतन मनन करता है और तदानुसार अपने विवेक से निर्णय लेता है। जीवन के हर मोड़, हर निर्णय में तार्किक ढंग से विचार करना और उस पर चलना ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण होता है। यदि वैज्ञानिक दृष्टिकोण किसी व्यक्ति, समुदाय या समाज में आ गया तो वहां मौजूद अन्धविश्वास स्वत: ही धीरे-धीरे निर्मूल होने लगेंगे।

विज्ञान सत्य का उद्घाटन करता है और प्रकृति तथा उसमें दिन-रात होने वाली घटनाएं सत्य का ही स्वरूप होती हैं। वस्तुत्व: विज्ञान प्रकृति में छिपे रहस्यों पर से पर्दा हटाता है। पर सही मायने में यह इतना आसान काम नहीं है। प्राकृतिक रहस्यों को समझना और उसके बारे में एक व्यक्ति के मन में उठी जिज्ञासा को पूर्ववर्ती अवधारणाओं से जांचना-परखना भी आवश्यक है। दूसरे शब्दों में कहेंगे कि किसी भी तथ्य या नियम को तब तक सच नहीं मानना चाहिए जब तक कि उसकी पूरी जाँच-परख करके उसे सत्यापित नहीं कर लिया जाए। यह वैज्ञानिक विधि का प्रथम चरण है। प्रेक्षण द्वारा आंकड़े एकत्र करना, प्रयोग करना, पूर्ववर्ती अवधारणाओं से तुलनात्मक अध्ययन करना और अंत में किसी विज्ञान सम्मत (तर्कसम्मत) निष्कर्ष पर पहुंचना वैज्ञानिक विधि के अन्य प्रमुख चरण होते हैं। वैज्ञानिक विधि वास्तव में जाँच-पड़ताल की विधि है। इस विधि द्वारा प्रकृति में निहित घटना के होने का कारण जानने की कोशिश की जाती है या पहले से ज्ञात किसी प्राकृतिक/वैज्ञानिक तथ्य में सुधार-संशोधन किया जाता है।

हजारों साल पहले जब विज्ञान और वैज्ञानिक विधि की जानकारी किसी को नहीं थी, उस समय लोग समस्त प्राकृतिक घटनाओं को ईश्वर से जोड़कर देखते थे और उसी के द्वारा नियंत्रित अलौकिक घटना मानते थे। प्रकृति में होने वाली घटनाओं को लेकर कुछ लोगों के मन में सवाल उठाने लगे। वे उन सवालों का समाधान जानना चाहते थे। कुछ ने वर्षों के अध्ययन-अवलोकन के बाद अपने तार्किक निष्कर्ष भी दिए लेकिन धर्मावलम्बी सत्ता विज्ञान की बात को सिरे से ख़ारिज कराती रही, क्योंकि वे विश्व का नियंत्रक ईश्वर को मानती थी। विज्ञान और धर्म के संघर्ष में ब्रूनो नामक वैज्ञानिक को घोर यातनाएं सहनी पड़ी। आखिर उसे जिन्दा जला दिया गया। सच के लिए उसने मौत की भी परवाह नहीं की। गैलीलियो और चार्ल्स डार्विन को भी सत्य की खोज करने पर धर्मावलम्बियों के घोर विरोध का सामना करना पड़ा था। अभी कुछ ही माह पूर्व अपने इसी प्रयास के चलते महाराष्ट्र के डॉ. नरेन्द्र दाभोलकर को भी अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

हमारे देश में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की बात सबसे पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने की थी। उन्होंने देश में वैज्ञानिक वातावरण के विकास के लिए 1958 में ससंद में विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति प्रस्तुत की जिसे संसद ने पारित किया। संसद में विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति पारित करने वाला भारत विश्व का पहला देश है। नेहरू ने देश में आधुनिक विकास के लिए राष्ट्रीय विज्ञान प्रयोगशालाओं की नींव रखी। वे मानते थे कि प्राचीन रुढ़िवादी सोच को बदलने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण जरूरी है।

समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करने तथा विज्ञान की गूढ़ जानकारी आम आदमी तक पहुँचाने की विधि को विज्ञान लोकप्रियकरण, विज्ञान संचार, विज्ञान की जन समझ जैसे कई नामों से जाना जाता है। इन सबका अर्थ और उद्देश्य लगभग एक समान है। भारत में राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद्, विज्ञान प्रसार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग जैसी सरकारी संस्थाओं के अलावा अनेक गैर राजकीय संगठन और स्वयंसेवी संस्थाएं विज्ञान लोकप्रियकरण का कार्य कर रही हैं।

हाल के वर्षों में सूचना जगत में एक क्रांति-सी आ गई है। बड़े जोर-शोर से कहा जा रहा है कि यह सदी सूचना की सदी है वही समाज, वही राष्ट्र विकास की दौड़ में अव्वल रहेगा जो सूचना के मामले में आगे रहेगा। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने लंबी छलांग लगाई है। टी.वी., इंटरनेट और दूसरे माध्यमों ने समाचार जगत का स्वरूप ही बदल दिया है। होना तो यह चाहिए था कि समाचार माध्यमों की पहुंच से लोगों में वैज्ञानिक चेतना का संचार होता. आखिर ये इलेक्ट्रॉनिक साधन स्वयं विज्ञान की देन ही तो हैं। चौबीसों घंटे चलने वाले चैनल अविराम जारी हैं। लेकिन अफसोस कि जनमानस में वैज्ञानिक दृष्टि जगाने से उनका दूर-दूर तक कोई वास्ता नहीं है। हाल के सर्वेक्षण के जो परिणाम आए हैं वे उल्टी कहानी कहते हैं। धारावाहिकों में वही पुरानी दकियानूसी बातें, वही भेड़ चाल, वही अंधविश्वासों को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम छाए हैं। अब तो बाकायदा इन चैनलों पर लोगों को सुबह-सुबह उनका राशिफल बताया जाता है। वास्तु का इन दिनों बड़ा जोर है। इसमें चीन से आए फेंग सुई ने रही-सही कसर पूरी कर दी है। हमारे समाज में ये चीजें फैशन का रूप ले रही हैं। अब जनता को असुरक्षित, धर्मभीरू और ज्यादा से ज्यादा अवैज्ञानिक बनाने की कवायद हो रही है। देखा-देखी अखबार वालों और पत्रिकाओं ने भी वहीं राह पकड़ ली है। आखिर उन्होंने वैज्ञानिक चेतना जगाने का कोई ठेका थोड़े ही ले रखा है। लोगों को जो पसंद आए, वही परोसो की नीति बाजार में सफलता की नीति है. धारा के विपरीत जाने की जहमत कौन ले।

सुबह-सुबह टी.वी. खोलिए तो सत्संग के नाम पर कोई न कोई प्रवक्ता ज्ञान की गंगा बहाते मिलेगा। आज टी.वी. चैनलों में हर तीसरे चैलन पर कोई न कोई ज्ञानी संसार की निःसारता पर व्याख्यान देते देखा जा सकता है। ये इंसान के इस लोक की कम, परलोक की चिंता ज्यादा करते हैं, आज के दौर में ये तथाकथित गुरु भी हाईटैक हो गए हैं। हवाई जहाज में उड़ते हैं, पंचतारा होटल में ठहरते हैं, महंगी कारों मेंदौड़ते हैं और संचार के नवीनतम साधनों से लैस हैं। वास्तव में हो यह रहा है कि विज्ञान और तकनीकी साधनों के बढ़ने से धर्म-कर्म के बारे में रूढ़ियां घटने की बजाय बढ़ती जा रही हैं। संचार

के साधनों की अंध श्रद्धा बढ़ाने में क्या भूमिका है, यह जानने के लिए एक उदाहरण काफी है। 1995 की बात है, कहीं से यह खबर आई कि गणेश जी साक्षात दूध पी रहे हैं। बस क्या था, गणेश मंदिरों में दुग्धप्राशन कराने वालों का तांता लग गया। यह खबर चली कहां से थी, यह नहीं मालूम। लेकिन जंगल की आग की तरह घंटे भर मं देश के करीब सभी महानगरों, शहरों और कस्बों में पहुंच गई। जिसे भी यह ख़बर मिली वह बिना सोचे-समझे पास के मंदिर में दूध पिलाने पहुंच गया। ऐसे देश का लाखों लीटर दूध बरबाद हो गया जहां आज भी करोड़ों बच्चों को एक बूंद दूध नसीब नहीं हो पाता। यह है हमारी अंधश्रद्धा कानमूना। धर्म नितांत वैयक्तिक मामला है। ईश्वर पर विश्वास एक बात है तथा अवैज्ञानिकता के चलते दूध पिलाना दूसरी बात है। लेकिन आज धर्म और आस्था का घनघोर प्रदर्शन हो रहा है। कुछ धार्मिक चैनल तो चौबीसों घंटे यह ज्ञान का प्रकाश फैला रहे हैं। भावी पीढ़ी कैसी होगी, कल्पना की जा सकती है।

अब तो घर बैठे इंटरनेट के जरिए ऑनलाइन पूजा, आरती और कुंभ स्नान भी किया जा सकता है। वेबसाइट पर सारी सुविधाएं मौजूद हैं। ये चीजें बताती हैं कि धार्मिक चेतना किस तरह विज्ञान युग में भी प्रसार कर रही है। बंबइया फिल्मों ने आम जनता में मौजूद अंधविश्वासों और रूढ़ियों का बखूबी दोहन किया है। बालीवुड की फिल्मों के कथानक में जादू-टोना, पुनर्जन्म और दैवीशक्तियों की बातें बड़ी आम हैं। उन्होंने तो सांपों के बारे में फैले मिथ का जमकर नगदीकरण किया है। सांपों पर बनी फिल्में चली भी खूब हैं।

भारत जैसे पारंपरिक देश में जनमानस में वैज्ञानिक चेतना पैदा करना कोई सरल कार्य नहीं है। मीडिया की इस में सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। वैज्ञानिक समुदाय को इसमें अपने दायित्व का निर्वहन करना पड़ेगा। विज्ञान लेखकों द्वारा देश भर में व्याख्यान, पोस्टर, प्रदर्शन, चर्चा, बहस करने की आवश्यकता है। यह निरंतर चलने वाला कार्यक्रम होगा। यह सब जनभाषा में होना चाहिए। विज्ञान जत्था गांव-गांव घूमे, हाथ की सफाई से भोली-भाली जनता को गुमराह करने वालों का भंडाफोड़ करे। लोगों को तांत्रिकों, बाबाओं की काली करतूतों से अवगत कराया जाय। तब कहीं धीरे-धीरे लोगों के जेहन में सही बात उतरेगी।

आमतौर पर विज्ञान को कठिन और जटिल समझा जाता है। जबकि, ऐसा है नहीं। अगर विज्ञान को प्रकृति और जीवन से जोड़ कर समझाया जाए तो वह किस्से-कहानियों-सा रोचक लगेगा। कौन नहीं जानना चाहेगा कि सूरज क्या है, तारे क्या हैं, बादल कहाँ से आते हैं, वर्षा क्यों होती है, अन्न कहाँ से आया, फूल क्यों खिलते हैं, बीमारियाँ क्यों होती हैं, धातुएं कहाँ से आईं, कंप्यूटर क्या है, मोबाइल क्या है और यह भी कि हमारा शरीर क्या है? ये बातें रोचक तरीके से बताई जाएं तो सभी समझना चाहेंगे। विज्ञान को आम आदमी तक पहुँचना ही चाहिए।

विज्ञान के सच को फैलाने के लिए हर सम्भव माध्यम का उपयोग किया जाना चाहिए। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से जिस तरह अंधविश्वासों को फैलाया जा रहा है, इस पर सरकार को पाबंदी लगानी चाहिए। यह देखना चाहिए कि इससे समाज में अविज्ञान फैल रहा है, अंधविश्वास फैल रहा है। जब विज्ञान का सच मालूम होता है तो लोगों में जागरूकता आती है। इसका एक उदाहरण देना चाहूँगा। 16 फरवरी 1980 को भारत में जब पूर्ण सूर्यग्रहण लगा तो पूरे देश में लोग घरों में बंद रहे। सड़कें खाली थीं। बाहर कोई दिखाई नहीं देता था। ग्रहण का इतना भय था। लेकिन, 25 अक्तूबर 1995 में पूर्ण सूर्यग्रहण लगा तो देश में काफी लोगों ने उसे सुरक्षित तरीके से देखा। तब इतनी जागरुकता आ चुकी थी कि सूर्यग्रहण एक प्राकृतिक घटना है और इससे कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा। ये लोग इसलिए सूर्यग्रहण को देखने के लिए तैयार हुए क्योंकि उन्हें ग्रहण का सच मालूम हो गया था।

लेकिन, अगर हम मास मीडिया के माध्यम से इनके खिलाफ अंधविश्वास फैलाते हैं तो मुश्किल होगी। खगोलीय और अन्य प्राकृतिक घटनाओं की व्याख्या तक के लिए टीवी चैनल ज्योतिषियों, टैरो कार्ड और न्यूमरोलॉजी वालों को बुला रहे हैं। अखबारों में भविष्य फल बाँचा जा रहा है। यह सब निराधार है। इसका कोई परीक्षण और प्रयोग नहीं किया गया है, बस आस्था के नाम पर चल रहा है। इसको महसूस किया जाना चाहिए और इसमें कमी लानी चाहिए। कुँडली मिला कर विवाह करने के बावजूद बहू-बेटियों का जीवन संकट में पड़ रहा है क्योंकि कुँडली सुखद जीवन की गारंटी नहीं है। इसके लिए तो आपसी प्रेम और समझ जरूरी है।

रेडियो पर विज्ञान के अनेक सीरियल आ रहे हैं। टेलीविजन पर भी कुछेक कार्यक्रम दिए जा रहे हैं, लेकिन ये नगण्य हैं। उनकी तुलना में अवैज्ञानिक कार्यक्रम कहीं ज्यादा दिए जा रहे हैं. इस समय देश की बड़ी जरूरत है एक विज्ञान चैनल की, जो विज्ञान का प्रचार-प्रसार करे. उसमें यह सुनिश्चित किया जाए कि वह नेशनल ज्योग्राफी या डिस्कवरी की तरह रोचक और ज्ञानवर्धक सामग्री देने वाला चैनल बने। उसमें बच्चों, आम लोगों, विद्यार्थियों और वैज्ञानिकों की भागीदारी हो। उसका समय-समय पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए कि किस कार्यक्रम को दर्शकों ने अधिक देखा। किसको कितनी टीआरपी मिल रही है।

वैज्ञानिकों और विशेषतौर पर भारतीय वैज्ञानिकों की जीवनियाँ बच्चों को बहुत प्रेरित कर सकती हैं। उन्हें जिंदगी में अपने सपने पूरा करने की राह दिखा सकती हैं। प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक मेघनाथ साहा जब इंटर की कक्षा में पढ़ते थे, तब भी नंगे पैर स्कूल जाते थे। एक बार स्कूल में अंग्रेज गवर्नर आया। मेघनाथ को जूता न पहनने के जुर्म में स्कूल से निकाल दिया गया। इसे गर्वनर के प्रति असम्मान माना गया। लेकिन, मेघनाथ के पास तो जूता था ही नहीं, वे कहाँ से पहनते। वे तैर कर नदी पार अपने गाँव जाते थे क्योंकि नाव के लिए पैसे नहीं थे। ऐसे हालतों में भी वे हमारे देश की ही नहीं विश्व की वैज्ञानिक विभूति बने। ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, सी.वी. रमन, रामानुजन की जीवनियाँ भी ऐसी ही प्रेरणास्पद हैं, जिन्होंने कठिनाइयों में भी कभी हार नहीं मानी।

यह केवल सरकार की ही नहीं हम सबकी जिम्मेदारी है कि विज्ञान की जानकारी का प्रसार करें। हम लोगों को समझाएं कि मनुष्य सिर्फ मनुष्य है। उसमें जाति, धर्म का कोई भेद नहीं है। विज्ञान की इतनी-सी बात हम अभी तक लोगों को नहीं समझा पाए हैं। सच यह है कि मनुष्य की केवल एक जाति है-होमोसेपिएंस।

-निदेशक एवं प्राचार्य,
श्री नेहरू बाल वाटिका उ.मा.वि., नोहर (हनुमानगढ़)
मो. 9414202796

विज्ञान दिवस विशेष

विज्ञान बनाम चमत्कार

□ मोहम्मद फारूक चौहान

अठारहवीं शताब्दी में विज्ञान की बहुत से खोजें और आविष्कार हुए हैं जिनसे आम जनता को लाभ मिला, भौतिक सुख-सुविधाएँ बढ़ीं। तकनीकी क्रांति और मशीनीकरण युग ने कार्य को और आसान बना दिया। श्रम व शक्ति की बचत होने लगी और उपभोक्ताओं को सामान सस्ती दरों पर उपलब्ध होने लगा। इस वैज्ञानिक युग में भी सीधे-सादे व्यक्तियों को ढोंगी व पाखण्डी व्यक्तियों द्वारा ठगा जाता रहा है। चमत्कार की आड़ में उनका आर्थिक, मानसिक व शारीरिक शोषण हो रहा है। महात्मा बुद्ध ने कहा है कि व्यक्ति इस बात को न माने कि फलां किताब में लिखा है, फलां धर्म गुरु ने कहा है बल्कि उसको न मानकर तर्क की कसौटी पर परखे, प्रयोग करे, फिर उसे माने।''

चमत्कार कभी नहीं होते हैं, ना हुए हैं और न होंगे। चमत्कार कुछ भी नहीं है बल्कि ये या तो विज्ञान के मौलिक सिद्धान्तों पर या रासायनिक क्रियाओं या हाथ की सफाई अथवा विशेष कला के माध्यम से प्रदर्शन मात्र है जिसे लोग चमत्कार समझकर नमन करने लगते हैं। ऐसे चमत्कारों से हमें भ्रमित नहीं होना चाहिए। इस क्षेत्र में बहुत सारी स्वयंसेवी संस्थाएँ, विज्ञान प्रौद्योगिकी व संचार परिषद, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार, तर्कशील सोसाइटी हरियाणा व पंजाब बेहतर ढंग से कार्य कर रहे हैं। 'सच तो कुछ और है' और 'चमत्कारों की वैज्ञानिक व्याख्या' कार्यक्रम के माध्यम से वैज्ञानिक चेतना का विकास किया जा रहा है।

कुछ चमत्कारों का वर्णन वैज्ञानिक व्याख्या सहित प्रस्तुत किया जा रहा है जिससे पाठकगण अवश्य लाभान्वित होंगे-

(अ) मौलिक सिद्धान्त पर आधारित कौशल/चमत्कार/खेल

प्रयोग 1- हथेली पर कपूर जला कर आरती करना-

कुछ पाखण्डी धार्मिक स्थान पर देवता के आगे हथेली पर जलता हुआ कपूर रखकर आरती करते थे और ये कहते थे कि उन्होंने सिद्धि प्राप्त कर यह विशेषता प्राप्त की है जबकि यह चमत्कार नहीं है। इसका भण्डाफोड़ किया गया। यह हमारे शरीर की विशिष्टता है और विज्ञान के मौलिक सिद्धान्त के माध्यम से इसे किया जा सकता है।

प्रायोगिक सामग्री-शुद्ध कपूर का टुकड़ा, स्टील या धातु की प्लेट, माचिस की डिब्बी

विधि-स्टील या धातु की प्लेट पर कपूर का टुकड़ा रखकर उसे जला लेते हैं और हाथ से उठाकर हथेली पर रख लेते हैं और आरती के रूप में हाथ को हिलाया जाता है।

व्याख्या-हमारी त्वचा तीन सैकण्ड तक 800 डिग्री सेल्सियस ताप सहन कर सकती है। जलते हुए कपूर को हथेली पर स्थिर न रखकर इधर-उधर खिसकाते रहें। तीन सैकण्ड से पहले उसकी जगह बदल लें। हथेली गर्म होने पर दूसरी हथेली पर रख लें। वह हथेली गर्म होने पर पुनः पहली हथेली पर रख लें। इस प्रकार विज्ञान के मौलिक सिद्धान्त पर प्रयोग कर इस चमत्कार का प्रदर्शन कहीं भी किया जा सकता है। कपूर के प्रयोग करने का एक कारण यह है कि कपूर में उर्ध्वपातन का गुण होता है अर्थात गर्म करने पर ठोस से सीधा गैस व ठंडा करने पर गैस से सीधा ठोस बन जाता है। कपूर को जलाने पर उसकी लौ ऊपर की ओर ही जाती है।

सावधानियाँ-इस प्रयोग में हम अंगारे या ऐसी और कोई चीज जो पिघलती हो, का प्रयोग नहीं करना चाहिए हमारे शरीर की चमड़ी को जलन बिन्दु तक पहुँचने के लिए तीन सैकण्ड तक लगातार आग से सम्पर्क में होने की जरूरत है। उससे पहले ही हमें हथेली की स्थिति को बदल लेना चाहिए।

एक और विशेष बात है कि जलते हुए कपूर को मुँह में भी लिया जा सकता है। हमारी जीभ गीली होती है अतः जलते हुए कपूर को जीभ पर लोगों के सम्मुख 'आग खाने' का प्रदर्शन किया जा सकता है। जब ताप अधिक महसूस हो तो मुंह बंद करने ऑक्सीजन न मिलने की वजह से कपूर जलना बंद हो जाएगा और लोग आश्चर्य चकित होकर ताली बजाने से न चूकेंगे।

प्रयोग-2 अग्नि स्नान

आवश्यक सामग्री-लकड़ी का डंडा लगभग 10 से 12 इंच, चपटा नाड़ा सूती, कैरोसिन तेल, सुई-धागा, माचिस की डिबिया

विधि-तकरीबन एक इंच व्यास के 10 से 12 इंच लम्बे गोल लकड़ी के डंडे पर करीब एक इंच चौड़ा चपटा नाड़ा या पट्टी दोहरी लपेट कर किनारे को धागे से सिल देते हैं। इसके पश्चात नाड़े की पट्टी लगे क्षेत्र तक को कैरोसिन तेल से भिगोकर उसमें माचिस की तीली से आग लगा दें। इसके बाद शरीर के खुले भाग हाथों-पैरों पर जल्दी स्नान करने की प्रक्रिया करते हुए घुमाएं।

व्याख्या-हमारी शरीर की त्वचा तीन सैकण्ड तक 800 डिग्री सेल्सियस ताप सहन कर सकती है। त्वचा को छूते हुए डंडे को घुमाते हुए (रोल करते हुए) स्थान बदलते रहें। इससे सिर्फ बाल ही जलेंगे, त्वचा नहीं।

सावधानियाँ-(1) डंडा फेरते समय यह ध्यान रखें कि हाथ नीचा रखें व डंडा ऊपर हो अगर हाथ ऊपर होगा और डंडा नीचे होगा तो लौ से हाथ जल जाएगा। (2) कैरोसिन तेल निकल जाए व त्वचा पर टपके नहीं। (3) डंडे पर लपेटे नाड़ा पट्टी पर दोनों हथेलियों के बीच रखकर उसे बुझाया जा सके। (4) डंडा तेल जलने तक ही शरीर पर घुमाएँ। डंडे पर नाड़ा पट्टी के जलने से त्वचा झुलस सकती है। जब तक लपेटी नाड़ा पट्टी पर तेल जलता रहेगा, त्वचा को कोई नुकसान न होगा। (5) एक्सपर्ट व्यक्ति के सामने ही यह प्रयोग प्रदर्शन करना चाहिए, अकेले नहीं।

प्रयोग 3- त्वचा पर वजन लटकाना-

आवश्यक सामग्री-8-10 नींबू या

500 ग्राम तक का वजन, 8 नं. हाथ से कपड़ा सिलने की पतली सुई, पतला सूती धागा, स्प्रिट

विधि–सर्वप्रथम सुई में धागा पिरोकर अंतिम सिरे पर गांठ बांध दे। अब हाथ की त्वचा की सबसे ऊपर परत में सुई डालकर थोड़ी दूरी से त्वचा से बाहर निकाल लें। त्वचा में धागे की गांठ तक सुई को आने दें। फिर एक-एक करके नीबुओं में से सुई को पार कर लें। 8-10 नींबू हो जाएं तो उन्हें धीरे से छोड़ते हुए लटका दें। त्वचा में खिंचाव करते हुए नींबू लटकते रहेंगे।

व्याख्या–हमारे शरीर की त्वचा में तीन पर्तें होती हैं ऊपर की त्वचा यानि पहली परत से 500 ग्राम तक, दूसरी पर्त से 35 किग्रा तथा तीसरी पर्त से 75 किग्रा तक भार अभ्यास से आसानी से उठाया जा सकता है। त्वचा की पर्त को कुछ देर तक रखने से विज्ञान के नियमानुसार वह थोड़ी सुन्न हो जाती है फलस्वरूप सुई लगने पर उसमें दर्द नहीं होता। दर्द का अनुभव तभी तक होता है जब तंत्रिकाओं द्वारा संदेश मस्तिष्क तक पहुँचता है। त्वचा की ऊपर की पर्त कुछ देर दबाने से वह सुन्न हो जाती है जिस कारण दर्द का संदेश मस्तिष्क तक नहीं पहुँचता है।

सावधानी–भार को धीरे से लटकाएं। धागे की लम्बाई तक उसे सहारा देते रहें झटका नहीं देवें।

प्रयोग 4 –उबलते तेल में हाथ डालना

सामग्री–सबसे पहले नीबूओं को काटकर, निचौड़ कर उसका रस कढ़ाही में डाल दें। उस पर वनस्पति तेल डाल देवें और जलते हुए स्टोव पर रख देवें। थोड़ी देर बाद तेल उबलने लगता है उस वक्त हाथ डाला जा सकता है।

व्याख्या–नींबू का रस भारी होने के कारण नीचे बैठ जाता है, उसके ऊपर तेल तैरता रहता है। गर्म करने पर नींबू रस पहले उबलने लगता है और भाप के कारण तेल में बुलबुले उठने लगते हैं जिससे ऐसा लगता है कि तेल उबल रहा है जबकि वह थोड़ा ही गर्म होता है जिसमें आसानी से हाथ डाला जा सकता है।

सावधानियाँ– (1) नींबू के बीज कढ़ाही में नहीं रहने चाहिए तथा पहली बार उबलते तेल में ही हाथ डालना है। (2) हाथ को सीधा ही तेल में डालना चाहिए व कढ़ाही की पर्त से हाथ छूना नहीं चाहिए।

(ब) रासायनिक पदार्थों की प्रतिक्रियाओं पर आधारित प्रायोगिक चमत्कार

प्रयोग–1 मंत्र शक्ति से अग्नि प्रज्वलित करना

आवश्यक सामग्री–हवनकुण्ड, पतली लकड़ियां या कागज के टुकड़े, ग्लिसरीन, पोटेशियम परमेंगनेट, छोटा चम्मच।

विधि–सर्वप्रथम कागज के टुकड़े कर उसमें पोटेशियम परमेंगेट पीस कर डाल दें। मंत्र पढ़ने का झूठा नाटक करते हुए ग्लिसरीन की अल्प मात्रा चम्मच की सहायता से पोटेशियम परमेंगनेट पर डाल दें। थोड़ी देर में अपने आप ही अपने आप आग लग जाती है।

व्याख्या–पोटेशियम परमेंगनेट ग्लिसरीन की रासायनिक क्रिया द्वारा ऊष्माक्षेपी अभिक्रिया होती है जिसके फलस्वरूप अग्नि प्रज्वलित होती है।

सावधानियाँ– (1) पोटेशियम परमेंगनेट के दानों को प्रयोग प्रदर्शन से थोड़ी देर पूर्व ही पीस कर डालना चाहिए। (2) ग्लिसरीन की 2-3 बूंदें ही डालें।

प्रयोग–2 नारियल से भूत भगाना

आवश्यक सामग्री–जटा वाला नारियल, सोडियम के छोटे टुकड़े, पानी से भरा गिलास

विधि–सूखे नारियल की जटाओं में पहले से ही सोडियम के छोटे-छोटे टुकड़े छिपा दें। फिर हाथ में जल लेकर मंत्र पढ़ने का नाटक करते हुए किसी व्यक्ति के सिर के चारों ओर नारियल घुमाएँ और जल को सोडियम वाले स्थान पर छिड़कें। नारियल तेजी से जल जाती है और कहा जाता है कि व्यक्ति में उपस्थित भूत नारियल में कैद कर जल छिड़क कर मंत्र पढ़कर जला दिया गया।

व्याख्या–सोडियम और जल की रासायनिक क्रिया से हल्का सा विस्फोट होता है और जलने लगता है।

सावधानियाँ–(1) सोडियम के टुकड़ों को हाथ से न छूकर चिमटी की सहायता से ही नारियल की जटा में छुपाना चाहिए। (2) सोडियम को हमेशा कैरोसिन तेल में ही रखें। (3) सोडियम टुकड़े चना या मटर के दानों से बड़े नहीं होने चाहिए। (4) नारियल सूखा व जटादार होना चाहिए। (5) सोडियम को नमी से दूर रखें और प्रयोग करने से थोड़ी देर पूर्व ही जटा में छिपाएं।

प्रयोग–3 आत्म शक्ति से मोमबत्ती जलाना

आवश्यक सामग्री–दो रंगीन मोमबत्ती क्रोमिक एसिड मैथिल अथवा एथिल एल्कोहल

विधि–सर्वप्रथम एक मोमबत्ती को हाथ में लेकर उसकी बत्ती पर पिसा हुआ क्रोमिक एसिड लगा दें। दूसरी मोमबत्ती के मुख पर मैथिल एल्कोहल लगाकर क्रोमिक एसिड लगी मोमबत्ती पर लगाते हैं तो वह जल उठती है। इस प्रकार बिना माचिस के मोमबत्ती जलती देखकर दर्शक आश्यचर्यचकित हुए बिना नहीं रह सकते।

व्याख्या–क्रोमिक एसिड तथा मैथिल या एथिल एल्कोहल की रासायनिक क्रिया के कारण ऊष्मा उत्पन्न होती है जो आग का कारण है।

सावधानियाँ–(1) एल्कोहल वाष्पशील पदार्थ है अत: कांच की बोतल में अच्छी तरह बंद रखें। (2) प्रयोग करने के बाद हाथों को अच्छी तरह धो लें।

प्रयोग–4 जलाने पर भी कपड़े का न जलना

आवश्यक सामग्री–कार्बन डाई सल्फाइड, कार्बन टेट्रा क्लोराइड, रुमाल, माचिस डब्बी

विधि–सबसे पहले कार्बन डाई सल्फाइड और कार्बन टेट्रा क्लोराइड सम मात्रा में लेकर इनका मिश्रण बना लेते हैं। रुमाल तेजी से धधक कर जल उठता है जब हम रुमाल में लगी आग को बुझाते हैं तो रुमाल पर आग का निशान तक नहीं होता।

व्याख्या–दोनों रासायनिक पदार्थ हल्के व ज्वलनशील होते हैं। अत:कपड़े में आग लगाने से पहले पदार्थ जलते हैं।

सावधानियाँ–(1) दोनों रसायनों का मिश्रण सम मात्रा में हो। (2) ये रसायन विषैले होते हैं अत: सावधानी रखें। (3) आग रुमाल में तब तक ही लगी रहने दें जब तक रुमाल उक्त मिश्रण से गीला रहे। सूखने के बाद कपड़ा जलने लगेगा।

इस तरह अनेक प्रयोग हैं जिनमें रासायनिक पदार्थों का उपयोग किया जाता है। हर चमत्कार के पीछे कोई न कोई वैज्ञानिक कारण होता है जिसकी तह तक जाना जरूरी है। सिर्फ रासायनिक पदार्थ ही नहीं, अन्य कारणों से चमत्कारों का पर्दाफाश किया जा सकता है।

(लेखक राज्यस्तरीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त हैं।)
-व्याख्याता (से.नि.)
कसाइयों की बारी के अन्दर, बीकानेर
मो. 9414430077

कल्पना चावला पुण्यतिथि विशेष

सितारों के लिए बनी हूँ मैं

❒ विश्वनाथ भाटी

'मैं सितारों के लिए बनी हूँ। प्रत्येक पल अंतरिक्ष के लिए ही बिताया है और इसी के लिए ही मरूँगी।' ये शब्द एक दिन अक्षरशः सत्य हो गए। हरियाणा के करनाल में 1 जुलाई, 1961 ई. को पिता श्री बनारसी लाल चावला व माता संयोगिता रानी के गर्भ से जन्मी कल्पना चावला अंतरिक्ष के लिए ही सोचा करती थीं और एक दिन अंतरिक्ष की गोद में ही समा गईं।

पूत के पाँव पालने में ही दिखाई दे जाते हैं। प्रकृति से प्रेम करने वाली कल्पना का बचपन से ही प्रकृति की तरफ झुकाव था। प्रकृति में पेड़-पौधों की हरियाली को देखते रहना, पक्षियों की क्रियाओं को निहारते हुए उनमें डूब जाना, साँझ ढलते ही घर की छत पर बैठकर सितारों की दुनिया में खो जाना आदि कल्पना के शौक थे। आकाश में उड़ता हुआ हवाई जहाज उसके लिए अरमानों का संदेश दे जाता था। कक्षा में चित्रकला के कालांश में केवल हवाई जहाज का ही चित्र बनाने वाली कल्पना के अवचेतन मन में हर घड़ी हवाई जहाज ही बसता था। कौन जानता था कि यही कल्पना एक दिन आकाश में उड़ान भरेगी और एक नया इतिहास रचेगी। दार्शनिक सेनेका के विचार, 'मैं एक कोने के लिए पैदा नहीं हुआ। पूरी दुनिया मेरी सरजमीं है' से कल्पना सर्वाधित प्रभावित हुई। वह अक्सर खुले आकाश के नीचे सोते हुए एकटक आकाशगंगा, उल्काओं, सितारों आदि को निहारते हुए उनकी दुनिया में खोयी रहती थी। खगोलीय दुनिया कल्पना को विस्मय से भर देती थी। देश में पहली बार विमान उड़ाने वाले उद्योगपति जे.आ.डी. टाटा कल्पना चावला के लिए प्रेरणास्रोत बने। यहीं से कल्पना के मन में एयरोनॉटिक्स को कैरियर के रूप में चुनने का विचार पैदा हुआ।

वह एयरोनॉटिकल इंजीनियर बनने के लिए इतनी दृढ़ संकल्प हो गई थी कि अन्य किसी ट्रेंड को स्वीकार ही नहीं किया। कल्पना को अनेक अवसरों पर नसीहतें मिलीं कि एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग का क्षेत्र लड़कियों के लिए ठीक नहीं है, मगर धुन के धनियों को सीमाओं में बाँधकर रख सकना किसके वश में होता है। सबके विरोध और अपने पिता की इच्छा के विपरीत कल्पना ने इस क्षेत्र में प्रवेश किया। वह आम लड़के-लड़कियों की तरह आरामपरस्त नहीं थीं और कठिन मेहनत करने में विश्वास करती थीं। वह सदैव बेहतर करना चाहती थीं। संतुष्ट होकर बैठ जाना उसकी प्रकृति नहीं थी। एकान्त प्रिय कल्पना को चुहलबाजी करके समय गँवाना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। वह समय के प्रत्यक्ष क्षण का सदुपयोग करने में विश्वास करती थीं। उसका अधिकांश समय अपनी जिज्ञासाओं की शान्ति के लिए बीतता था।

कल्पना ने टैगोर बाल निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय, करनाल (हरियाणा) से 1978 ई. तक स्कूली शिक्षा प्राप्त की। कल्पना ने जब अपने पिता से इंजीनियरिंग की पढ़ाई की इच्छा जताई तो पिता ने इसके लिए मना करते हुए डॉक्टर या शिक्षक बनने की बात कही। पंजाब विश्वविद्यालय में प्रवेश के समय भी अपनी माँ के साथ गई कल्पना को कॉलेज के ही एक पुरुष प्रोफेसर ने बताया कि 'इंजीनियरिंग महिलाओं के लिए नहीं है'; मगर धुन के धनियों को भला कभी कोई रोक पाया है? कल्पना ने हर चुनौती को स्वीकार करते हुए प्रवेश ले लिया तथा बैचलर ऑव इंजीनियरिंग की उपाधि प्राप्त की और मास्टर ऑव इंजीनियरिंग के लिए अमेरिका भी गई। एयरोनॉटिकल क्षेत्र में पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज, चंडीगढ़ से बैचलर ऑव इंजीनियरिंग (1982), टैक्सास विश्वविद्यालय (अमेरिका) से मास्टर ऑव इंजीनियरिंग (1984 ई.) तथा कोलोरेडो विश्वविद्यालय (अमेरिका) से डॉक्टर ऑव फिलासफी की उपाधि (1988) प्राप्त की। कल्पना ने वर्ष 1988 ई. में एम्स रिसर्च सेंटर, नासा से फ्लूड डायनामिक्स के क्षेत्र में अपना कैरियर शुरू किया। इसी क्रम में कैलिफोर्निया के ओवरसेट मैथड्स इनकारपोरेशन में वर्ष 1993 ई. में अनुसंधान वैज्ञानिक के रूप में काम किया। नासा ने ही इन्हें 1994 ई. में अंतरिक्ष वैज्ञानिक के रूप में चुना। 1995 ई. में कल्पना को पन्द्रह सदस्यीय अंतरिक्ष यात्रियों के समूह में सम्मिलित किया गया और 1996 ई. में मिशन स्पेशलिस्ट का दायित्व सौंपा गया। 1997 ई. में पहली उड़ान के साथ ही कल्पना का सपना पूरा हुआ।

वह कहा करती थी, 'मैं सितारों के लिए बनी हूँ, उन्हीं में खो जाऊँगी।' कल्पना ने अपने दूसरे अभियान पर रवाना होने से पहले कहा था, 'यह दोबारा अच्छा सपना आने के समान है ऐसा फिर से करना सपने को जीने जैसा है, एक अच्छा सपना एक बार फिर।'

कल्पना चावला का विवाह जीन पियरे हैरीसन से 1984 ई. में हुआ, जो एक फ्रांसीसी-अमेरिकी थे। हैरीसन टैक्सास विश्वविद्यालय में स्वतंत्र उड़ान प्रशिक्षक थे। कल्पना इसी विश्वविद्यालय में पढ़ती थी। कल्पना ने विदेश में रहते हुए भी भारतीय संस्कृति से प्रेम बनाये रखा। भारतीय भोजन पसन्द करना, शाकाहारी रहना आदि कल्पना के स्वभाव में था। अपना भोजन भी वह स्वयं बनाना पसन्द करती थी।

कोलम्बिया का 16 दिन का अभियान पूरा कर **1 फरवरी, 2003** को कैनेडी स्पेस सेंटर पर उतरने से मात्र 16 मिनट पहले भारतीय समयानुसार सायं 7.30 बजे वाशिंगटन में स्थित नेशनल एयरोनॉटिक एण्ड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (नासा) से सम्पर्क टूट गया। उस समय कल्पना 63 कि.मी. की ऊँचाई पर थी गति 20,000 किलोमीटर प्रति घण्टे थी, तभी टैक्सास नगर के आकाश में एक जोरदार विस्फोट हुआ और विमान नष्ट हो गया। साथ ही उसमें सवार सातों अंतरिक्ष यात्री मौत के आगोश में समा गए। 1 फरवरी, 2003 को कल्पना के निधन से भारत को गहरा सदमा लगा। उनके असामयिक निधन पर तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति महान् वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अपने शोक संदेश में कहा था, 'सभी भारतवासियों को इस बात पर गर्व है कि हमारी अपनी 'कल्पना' इस अंतरिक्ष मिशन में शामिल थी लेकिन यह अत्यंत दुखद है कि हमने उसे खो दिया है। हम 'कल्पना' को सलाम करते हैं।' कल्पना चावला अपने सपनों के लिए जिन्दा रही और इसी दिशा में बढ़ते हुए उसने आखिरी साँस ली।

कल्पना ने प्रथम भारतीय अंतरिक्ष महिला का खिताब पाकर अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित करा लिया है। आज वह नारी शक्ति का प्रतीक और विश्व परिवार की धरोहर है।

वार्ड नं. 8, तारानगर (चूरू)-331304
मो. 9413888209

बसंत पंचमी विशेष

ज्ञान की वीणा, प्रेम की वेणु

❑ प्रकाश पंड्या

श्री प्रकाश पंड्या सतत स्वाध्यायी शिक्षक एवं कुशल शिक्षा अधिकारी हैं। वैदिक एवं पौराणिक साहित्य के मनीषि श्री पंड्या अधुनातन व पुरातन में जबरदस्त सामंजस्य बिठाए हैं। तभी तो कम्प्यूटर क्रीडन में उन्होंने प्रवीणता प्राप्त कर ली है। आपने कई महत्वपूर्ण पुस्तकों का सृजन किया है। आप शिक्षिका के नियमित पाठक व लेखक हैं। -सविनय सम्पादक

प्रकृति निर्मित भौगोलिक व्यवस्था एवं ऋतुचर्या की दृष्टि से विश्व में भारत एक मात्र देश है जहां 6 ऋतुएं लयबद्ध तरीके से अपने अस्तित्व का आभास कराती हैं। इसीलिए भारत प्रकृति की विविध प्रकार की अठखेलियों और नटी रूप में नृत्य करने वाली ऋतु पर्व संस्कृति की जननी माना जाता है। यों तो प्रत्येक ऋतु का आगमन और प्रस्थान अपना महत्व रखता है लेकिन इन 6 ऋतुओं में बंसत ऋतु का तो कहना ही क्या ? कलमकारों ने इसे ऋतुराज, मधुमास, कुसुमाकर और बसंत आदि नामों से अभिहित किया है । बसंत की छटा चर-अचर, स्थावर-जंगम, सजीव-निर्जीव सभी पर अपना प्रभाव डालती है । इसी माह की पंचमी तिथि बसंत पंचमी के रूप में समूचे भारत में पूर्ण श्रद्धा और भक्तिभाव से मनाई जाती है। "अपूर्व कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारती। व्ययतो वृद्धिमायाति, क्षयमायाति संचयात।।" यही विद्या की अधिष्ठात्री देवी मां सरस्वती का मूल स्वभाव और स्रोत है।

दस्तक बसन्त की

बसंत के उल्लास से प्रकृति का कोई भी तत्व अछूता नहीं रहता । बसंत की दस्तक के साथ ही प्रकृति का कण-कण कहने लगता है- वृक्षों पर फूलकान्त, फूलों में रंग रे, हवा मंद-मंद बहे, लेकर सुगंध रे, आमों पर छा जाये मोर मकरंद रे, डालों पर छा जाये कोयल नवछंद रे, मन ही मन भर जाये रूप रस गंध रे, बिन बाजा बिना ध्वज आया बसंत रे । यूं तो मधुमास पर्यन्त उल्लास का प्रभुत्व प्रकृति में सर्वव्यापी होने का आभास देता है लेकिन शास्त्रीय परम्परा और भारतीय चिरन्तन चिन्तन पद्धति ने बसंत पंचमी को महिमावंत स्वरूप प्रदान किया है । यह दिन पौराणिक, आध्यात्मिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व लिये हुए हैं तथा इसकी प्रामाणिकता में कवियों, शायरों, कलाकारों और बुद्धिजीवियों ने इतना कुछ लिखा है कि बसंत और बंसत पंचमी का भारतीय संस्कृति में माहात्म्य सर्वविदित और सर्वज्ञात है । बसंत पंचमी को श्रीपंचमी के रूप में भी माना जाता है । बसंत पंचमी और मधुमास ज्ञान की साधना और प्रेम की पूजा का पर्व है । एक ओर ज्ञान पिपासु ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी मां सरस्वती की आराधना के साथ ज्ञानोपासना का श्रीगणेश करते हैं तो दूसरी ओर प्रकृति का चरम सौन्दर्य प्रेम के पुजारियों को प्रीत के गीत गाने को व्यग्र करता है । यह ऋतु ज्ञान और प्रेम की मिश्रित धारा प्रवाहित करते हुए सम्पूर्ण प्रकृति को अकूत आनंद में आप्लावित करती है । आइये कुदरत के इस बेमिसाल वरदान में हम दीदार करें ज्ञान की वीणा के संगीत का और आनंद लें प्रेम के वेणु वादन का जिसे सुनने को लेकर स्वयं प्रकृति भी लालायित रहती है ।

वाग्देवी की वीणा से प्रकट हुई वाणी

बसंत पंचमी की कथा भी बड़ी रोचक और आध्यात्मिक ज्ञान से समृद्ध है । भगवान विष्णु की आज्ञा से सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा ने समस्त जीवों के साथ मनुष्य की रचना की तो वाणी रहित मनुष्य अपने सृजन से सन्तुष्ट नहीं था। शब्दनाद ब्रह्म की अनुपस्थिति के कारण सृष्टि में पसरे सन्नाटे से मनुष्य बड़ा ही विकल और उदास रहने लगा तभी विष्णु की अनुमति से ब्रह्माजी ने अपने कमण्डल से पृथ्वी पर जल छिड़का। उन जल कणों की दिव्य शक्ति से एक अद्भुत शक्ति प्रकट हुई । मूर्त रूप में प्रकट हुई शक्ति का स्वरूप भी दिव्य और मनोहारी था । चतुर्भुज मातृशक्ति के रूप में प्रकट उस स्त्री के

एक हाथ में वीणा और दूसरा हाथ वरमुद्रा में था। दो अन्य हाथों में एक में पुस्तक तथा दूसरे में माला लिये प्रकट हुई उस शक्ति ने ब्रह्मा के अनुरोध पर वीणा वादन प्रारंभ किया। देवी सरस्वती का वाहन हंस है जो नीर-क्षीर विवेक का प्रतीक है। देवी का शुभ्र परिधान शुचिता और शान्ति का सूचक है। देवी के वीणा झंकृत मधुर नाद से संसार के समस्त जीव जन्तुओं को वाणी प्राप्त हुई । जल में कोलाहल और पवन में संगीतिक हलचल ने अब तक व्याप्त निस्तब्धता को सुर और शब्द प्रदान किये । इसी चमत्कृत वरदान के कारण ब्रह्माजी ने प्रकट हुई देवी को वाणी की देवी सरस्वती कहा । बसंत पंचमी का दिन देवी सरस्वती के प्राकट्य के कारण उनके जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। ऋग्वेद में सरस्वती के लिए वागीश्वरी, भगवती, शारदा, वाग्देवी और अमिताक्षरा नाम भी प्रयुक्त हुए हैं। ऋग्वेद के इस सूक्त में देवी सरस्वती का आराधन कुछ इस प्रकार किया गया- प्रणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती धीनामणित्रयवतु । भगवान श्री कृष्ण ने भी देवी सरस्वती को वरदान दिया था कि बसंत पंचमी के दिन उनकी विशेष पूजा अर्चना और आराधना होगी ।

राम शबरी के, कृष्ण शिक्षा के द्वार

बसंत पंचमी के संदर्भ में एक पौराणिक प्रसंग रूमात और प्रचलित है । कहते हैं त्रेता युग में दशानन रावण ने जब जनकनंदिनी सीता का हरण किया इसके बाद भगवान श्रीराम सीता की खोज में दक्षिण की तरफ बढ़े। राम ने अरण्य क्षेत्र में जहां-जहां पड़ाव डाला और सीता की खोज में जिस वन क्षेत्र की खाक छानी उनमें दंडकारण्य

का उल्लेख भी है । इसी दंडकारण्य में अगाध श्रद्धा की प्रतिमूर्ति शबरी भी रहती थी । शबरी को उसके गुरु ने कहा था एक दिन तुम्हारी कुटिया पर राम आएंगे । पौराणिक मान्यता के अनुसार शबरी के गुरु वचन सिद्ध हुए और राम उसकी कुटिया पर पहुंचे । वह दिन भी बसंत पंचमी का ही था । यही नहीं द्वापर में भगवान श्रीकृष्ण अपने बाल सखा सुदामा के साथ ज्ञानार्जन के लिए बसंत पंचमी को ही सप्तपुरियों में से एक उज्जयनी के निकट स्थित महर्षि सांदीपन के आश्रम में पहुंचे थे । सांदीपनी आश्रम के निकट आज भी उस कुण्ड में अपने लाडलों को प्रज्ञा सम्पन्न बनाने की भावना के साथ बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं और बसंत पंचमी के दिन यहां स्थित कुण्ड के जल में अपने पुत्र-पुत्रियों के हाथों सलेट पर लिखे अक्षर धुलवाते हैं । मान्यता है कि, भगवान कृष्ण ने भी बसंत पंचमी के दिन इसी कुण्ड में सलेट पर लिखे अक्षरों को धोया था । शबरी के द्वार पर राम और शिक्षा के द्वार पर श्रीकृष्ण की दस्तक के कारण बसंत पंचमी शिक्षक और शिक्षार्थियों के लिए विशेष महत्व रखती है। वर्षभर मेहनत करने वाले परीक्षार्थी मुख्य परीक्षा के ठीक पहले आने वाली बसंत पंचमी से अपने ध्येयसिद्धि के लिए आज भी उसी उल्लास और उत्साह के साथ जुटना शुरू हो जाते हैं । इक्कीसवीं सदी के इस आईटी युग में भी भारतीय ज्ञानार्थियों के मनमस्तिष्क में बसंत पंचमी का दिन पठन-पाठन की तैयारी की दृष्टि से शबरी की कुटिया में राम और सांदीपन के आश्रम में कृष्ण के आगमन का आनंदबोध कराता है ।

बसंत पंचमी की महिमा का ऐतिहासिक साक्ष्य

बसंत पंचमी का दिन ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में भी अपना खास महत्व रखता है ।चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाणता ऊपर सुल्तान है, मत चूको चौहान । महान भारतीय योद्धा पृथ्वीराज चौहान के साथ जुड़ा है यह यादगार घटनाक्रम । हमलावर मोहम्मद गौरी जब उन्हें अफगानिस्तान ले गया तब हमलावर ने पृथ्वीराज चौहान को मृत्युदण्ड देने से पूर्व उनकी शब्दभेदी शरसंधान कला को देखना चाहा । हमलावर गौरी ने पृथ्वीराज चौहान के साथी कवि चन्दबरदायी के परामर्श पर ऊँचे स्थान पर बैठकर बाण चलाने का संकेत दिया तभी उपरोक्त पंक्तियों के साथ चन्दबरदायी ने पृथ्वीराज चौहान को शरसंधान के लिए कहा इस पर पृथ्वीराज चौहान के धनुष से निकला शर हमलावर के सीने में जा धसा । वह दिन भी बसंत पंचमी का ही था । कलमकार हो या कलाकार आज भी बसंत पंचमी के दिन अपने पवित्र साधनों की पूजा करना नहीं भूलते । योद्धाओं के लिए शस्त्र पूजन की दृष्टि से जो महत्व विजयदशमी का है वही महत्व कलम और कला के उपासकों के लिए बसंत पंचमी का है । मंत्रविदों के अनुसार बसंत पंचमी पर पवित्र स्नान ध्यान के बाद द्वादश नामावली का शुद्ध उच्चारण के साथ पाठ करने पर देवी सरस्वती प्रसन्न होती है।

प्रकृति प्रेम और सौन्दर्य पूजा का दिन

बसंत पंचमी आध्यात्मिक पौराणिक और सांस्कृतिक दृष्टि से तो महिमाप्रधान है ही, यह दिन प्रकृति के प्रति प्रेम और सौन्दर्य की पूजा का दिन भी है । साहित्य जगत के लिए बसंत पंचमी इसलिए और भी अधिक वरेण्य और वन्दनीय है क्योंकि महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का जन्मदिन भी है । निरालाजी का साहित्य प्रकृति पूजा और सौन्दर्य के सात्विक प्रेम से ओतप्रोत है। प्रकृति का कण-कण प्रेम की सात्विकता और शुचिता का संदेश देता है। बसंत प्रेम की निश्छल अभिव्यक्ति का पर्याय भी है । प्रकृति तथा मानव और मानव-मानव के बीच प्रेमपूर्ण संबंधों के निर्वहन में ही बसंत का सच्चा और कालजयी उल्लास निहित है । प्रकृति तथा मानव के बीच प्रेम की अमर कथा तथा बसंत के यथार्थ को इन पंक्तियों में बड़ी खूबसूरती से बयां किया गया है -

महलों की कतारों में हो झोंपड़ी खड़ी,
उसका न हो उपहास तो समझो बसंत है
राम और रहीम में अन्तर नहीं कोई,
हो जाये यह अहसास तो समझो बसंत है ।

प्रतिवर्ष अपनी चित्ताकर्षक छटा और चहुँ ओर सौन्दर्य रसप्रवाह से प्रकृति की खिलखिलाती, उल्लसित और पुलकित छवि प्रदान करने वाले बसंत तथा मन, बुद्धि, चित्त, चेतना में निरन्तर पवित्रता की धारा प्रवाहित करने वाली बसंत पंचमी पर वाग्देवी से ही यही प्रार्थना करें कि-

सबके दिलों में संवेदना की राह हो,
तुमको हमारी चाह हो, हमको तुम्हारी चाह हो।

-कार्यक्रम अधिकारी
राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, बांसवाड़ा
मो. 9414101657

शिक्षकों के लिए सुकरात निर्देशित शपथ

□ पी. डी. सिंह

- मैं हमेशा मेरे द्वारा संरक्षित बच्चों की हर बात सुनूंगा और कक्षा को आतंकित नहीं करूंगा।
- मैं एक बच्चे की दूसरे बच्चे से तुलना नहीं करूंगा या उनको कोई रैंक नहीं दूंगा और मैं कक्षा में लिंग,वर्ण या जाति के प्रति पूर्वाग्रह नहीं पनपने दूंगा।
- कक्षा के नियमित कार्य-संचालन हेतु कुछ नियम आवश्यक होते हैं यह मानते हुए भी मैं सदैव परिस्थिति के अनुसार नियमों में कुछ समन्वय के लिये स्वयं को तैयार कर लूंगा।
- इस मान्यता के साथ कि बच्चे सृजनशील एवं मौलिक होते हैं, मैं एकरसता व नीरसता को टालूंगा और बच्चों की स्वयं की अभिव्यक्ति को प्रेरित, चेतन और विकसित करने हेतु विभिन्न स्थितियां प्रस्तुत करूंगा।
- मैं किसी भी बच्चे को शारीरिक दंड नहीं दूंगा और तिरस्कृत व अपमानित नहीं करूंगा यह ध्यान में रखते हुए कि करुणा और उचित तथा न्यायसंगत व्यवहार ही अनुशासन के सर्वोत्तम साधन हैं।
- बच्चों के माता-पिता व अभिभावकों के साथ मित्रवत व्यवहार करूंगा जो कि अपने बच्चों के विकास एवं कल्याण के प्रति सजग होते हैं।
- विकलांगों एवं किसी भिन्नता वाले बच्चों के संबंध में मैं अपनी सोच में संतुलित रहूंगा और किसी भी बच्चे को परित्यक्त और अकेला नहीं रहने दूंगा। मेरा प्रयास रहेगा कि मेरी कक्षा के सभी बच्चे सदैव प्रसन्न रहें।

-निदेशक, टैगोर पब्लिक स्कूल, जयपुर
मो. 9829014513

गार्गी चिन्तन

वैदिक ऋषि का वाचक्नवी-गार्गी

□ रामजीवन सारस्वत

श्री रामजीवन सारस्वत शिक्षा विभाग में प्रशासनिक अधिकारी पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। कार्यालयी कार्यों में दक्षता के साथ पढ़ना व लिखना आपका नितांत शौक रहा। आपने विविध विधाओं में लिखकर अपनी लेखकीय मेधा का परिचय दिया है। आपका लेखन पुस्तक रूप में प्रकाशित हुआ है। आप आकाशवाणी के भी नियमित वार्ताकार एवं समीक्षक हैं। -वरिष्ठ सम्पादक

वैदिक साहित्य-जगत में 'विदुषी गार्गी' का नाम अन्य विदुषियों की तरह प्रसिद्ध है। इनके पिताश्री का नाम वचक्नु था, जिसके कारण इनका नाम वाचक्नवी पड़ गया, किन्तु इनका मूल नाम क्या था, का उल्लेख कहीं नहीं मिलता। इनके पिताश्री वचक्नु गर्ग-गोत्र के होने के कारण ही, इन्हें जन साधारण में गार्गी नाम से ही प्रसिद्धि प्राप्त हुई लगती है। महिला-रत्न गार्गी के बारे में कहा जाता है कि वह हर क्षण अधिक से अधिक ज्ञान की खोज में रहती थी। एक बार उसे ज्ञात हुआ कि चंगल में एक सच्चे ब्रह्मज्ञानी ठहरे हुए हैं। गार्गी अपने स्वभाव के अनुसार जिज्ञासावश उनके सत्संग और सम्भाषण से लाभ उठाने के उद्देश्य से चंगल की ओर चल दी। ब्रह्मज्ञानी के आश्रम के पास पहुंचकर बाहर बैठे ब्रह्मज्ञानी के शिष्य से गार्गी ने कहा-'मुझे ब्रह्मज्ञानी जी के दर्शन करने हैं।' ब्रह्मज्ञानी के शिष्य ने आश्रम में जाकर गार्गी के संदेश को बताया। थोड़ी देर बाद आश्रम से बाहर आकर शिष्य ने कहा-'गुरुजी संन्यासी है और स्त्री का दर्शन नहीं करेंगे।' गार्गी इतना सुनकर पलटकर जाने लगी। शिष्य पुनः आश्रम में जाकर ब्रह्मज्ञानी से गार्गी ने जो कहा बताया। ब्रह्मज्ञानी को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्हें यह जानने की उत्कण्ठा हुई कि जो व्यक्ति इतना परिश्रम करके इतनी दूर चलकर आया था, उसे मेरे निषेध करने पर जरा भी निराशा क्यों नहीं हुई? अब तो ब्रह्मज्ञानी गार्गी के पीछे भागे और बहुत दूर जाकर ही उसे पकड़ पाए। ब्रह्मज्ञानी ने गार्गी से पूछा-'कहो देवी! तुम तो मेरे दर्शन करने इतनी दूर आई थी, फिर तुमने क्यों कहा कि तुम मेरे दर्शन नहीं करना चाहती।' गार्गी ने उत्तर दिया-'मैंने सुना था कि आप सच्चे ब्रह्मज्ञानी है। इसलिए मैं आपके दर्शनों के लिए उत्कण्ठित थी, लेकिन अब मुझे ज्ञात हो गया है कि आप सच्चे ब्रह्मज्ञानी नहीं हैं।' ब्रह्मज्ञानी ने रोष में आकर कहा-'देवी! मैं सच्चा ब्रह्मज्ञानी नहीं हूँ, यह तुम कैसे कह सकती हो?' गार्गी ने उत्तर दिया-'सच्चे ब्रह्मज्ञानी स्त्री और पुरुष का भेद भूल जाते हैं, और आप यह भेद नहीं भूले हैं।' गार्गी ऐसी ब्रह्मनिष्ठा विदुषी थी। गार्गी वैदिक साहित्य जगत की विदुषी रही हैं, इस बात की पुष्टि बृहदारण्यकोपनिषद् में गार्गी के शास्त्रार्थ प्रसंग से होती है। गार्गी का शास्त्रार्थ प्रसंग इस प्रकार वर्णित है।

विदेहराज जनक ने एक बहुत बड़े यज्ञ का आयोजन किया। इस यज्ञ में आने के लिये अनेकानेक ऋषियों तथा ब्रह्मवेत्ताओं को आमंत्रित किया गया था। कुरू से पाँचाल देश तक के विद्वानों ने इस यज्ञ में अपनी भागीदारी प्रस्तुत की। राजा जनक स्वयं भी बड़े ही विद्या-व्यसनी तथा सत्संग प्रेमी थे। उन्हें शास्त्रों के गूढ़ तत्वों का विवेचन और परमार्थ-चर्चा अधिक प्रिय रहे हैं। इसलिये उनके मन में यह जिज्ञासा हुई कि इस यज्ञ में आये हुए विद्वानों से सबसे बढ़कर तात्विक विवेचन करने वाला कौन है? इस बात की परीक्षा के लिये उन्होंने अपनी गौशाला में एक हजार गायें बंधवा कर प्रत्येक गाय के सींगों में दस-दस पाद सोना जड़वा दिया। इस प्रकार की व्यवस्था कर राजा जनक ने यज्ञ में उपस्थित ब्रह्मवेत्ताओं से कहा कि 'आप लोगों में जो सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मवेत्ता हो, वह इन सभी गायों को ले जाए।' राजा जनक की यह घोषणा सुनकर उपस्थित किसी भी ब्रह्मवेत्ता में वह साहस नहीं हुआ कि वे इन गायों को ले जाए। सभी विद्वानों को अपने ब्रह्मवेत्तापन में संदेह होने लगा। प्रत्येक विद्वान मन ही मन सोचने लगा कि यदि गायें ले जाने के लिये आगे बढ़ा तो अन्य विद्वान अभिमानी समझेंगे और शास्त्रार्थ करने लगेंगे। यदि ऐसा होता है तो शास्त्रार्थ में इन सबको जीत पाना संभव होगा अथवा नहीं, इस बात की अनिश्चितता सब विद्वानों के मन में बैठ गई। सबको मौन देखकर ब्रह्मवेत्ता याज्ञवल्क्यजी ने सामवेदपाठी अपने ब्रह्मचारी शिष्य से कहा-'सोम्य। तू इन सब गायों को हाँक ले चल।' शिष्य ने वैसा ही किया।

यह सब देख उपस्थित अन्य सभी ब्रह्मवेत्ता क्षुब्ध हो उठे। विदेहराज जनक का होता (पुरोहित) अश्वल याज्ञवल्क्य से पूछ बैठा-'क्यों? तुम्हीं हम सब में बढ़कर ब्रह्मवेत्ता हो?' याज्ञवल्क्यजी ने विनम्रता पूर्वक कहा-'नहीं, ब्रह्मवेत्ताओं को तो हम नमस्कार करते हैं। हमें तो केवल गायों की आवश्यकता है। अतः ले जाते हैं।' फिर क्या था, शास्त्रार्थ आरम्भ हो गया। यज्ञ का प्रत्येक सदस्य याज्ञवल्क्यजी से प्रश्न करने लगा। ब्रह्मवेत्ता याज्ञवल्क्यजी किंचित भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने धैर्यपूर्वक सबसे प्रत्येक प्रश्न का उत्तर क्रमशः देना आरम्भ किया। राजा जनक के होता (पुरोहित) अश्वल ने चुन-चुन कर अनेक प्रश्न किये, किन्तु उचित उत्तर मिलने के कारण अन्ततः वे चुप होकर बैठ गये। इसके बाद जरत्कारु गौत्र में उत्पन्न आर्तभाग ने प्रश्न किया। उनको भी यथार्थ उत्तर मिल गया। अतः वे भी मौन हो गये। तदनन्तर क्रमशः भुज्यु, चाक्रायण, उषस्त, कौषीतकेय, कहोल आदि अनेक ब्रह्मवेत्ताओं ने प्रश्न पूछे, जिन्हें यथोचित उत्तर देकर मौन कर दिया। इसके बाद वाचक्नवी गार्गी बोली-'भगवन्! यह जो कुछ पार्थिव पदार्थ है, वह सब जल से ओतप्रोत है, किन्तु जल किसमें ओतप्रोत है।' याज्ञवल्क्यजी ने उत्तर दिया 'जल वायु में ओतप्रोत है।' इस प्रश्न के बाद गार्गी ने क्रमशः वायु, आकाश, अन्तरिक्ष, गंधर्वलोक, आदित्यलोक, चन्द्रलोक, नक्षत्रलोक, देवलोक, इन्द्रलोक और प्रजापतिलोक के संबंध में प्रश्न किये जिनका यथेष्ट प्रत्युत्तर मिला।

इसके बाद गार्गी ने पूछा कि 'ब्रह्मलोक किसमें ओतप्रोत है?' इस प्रश्न के उत्तर में याज्ञवल्क्यजी ने कहा-'गार्गी! यह अति-प्रश्न है। यह उत्तर की सीमा है। अब इसके आगे प्रश्न नहीं हो सकता।' गार्गी! 'अब तू प्रश्न न करे, नहीं तो तेरा मस्तक गिर जायेगा।' वाचक्नवी विदुषी थी, वह ब्रह्मवेत्ता याज्ञवल्क्यजी के अभिप्राय को समझकर चुप हो गईं। तदनन्तर और कई विद्वानों ने प्रश्नोत्तर किया और वे अपने-अपने प्रश्नों का यथेष्ट उत्तर मिलने के कारण मौन होकर बैठ गए।

अंत में विदुषी गार्गी ने सभी उपस्थित ब्रह्मवेत्ताओं की स्वीकृति लेकर ब्रह्मवेत्ता याज्ञवल्क्यजी से दो प्रश्न और करने की इच्छा व्यक्त की, साथ ही कहा कि इन दो प्रश्नों के प्रश्नोत्तर के बाद इस यज्ञ में सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मवेत्ता होने का निर्णय भी मेरे द्वारा किया जायेगा। उपस्थित सभी ब्रह्मवेत्ताओं ने विदुषी को दो प्रश्न और करने तथा यज्ञ के सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मवेत्ता होने का फैसला करने की सहमति दे दी। तदनन्तर विदुषी गार्गी ने ब्रह्मवेत्ता याज्ञवल्क्यजी से कहा-'जिस प्रकार काशी या विदेह का रहने वाला कोई वीर-वंशज पुरुष धनुष पर डोरी चढ़ाकर शत्रुओं को अत्यन्त पीड़ा देने वाले दो फल वाले बाण हाथ में लेकर खड़ा होता है, उसी प्रकार मैं दो प्रश्न लेकर उपस्थित हूँ, मुझे उनके उत्तर दो।'

इस पर गार्गी ने पहला प्रश्न पूछा, 'महर्षि! जो द्युलोक से ऊपर है, जो पृथ्वी से नीचे है और जो द्युलोक और पृथ्वी के बीच में है और स्वयं भी जो ये द्युलोक और पृथ्वी है, भूत, वर्तमान, भविष्य है, वे किसमें ओतप्रोत है।' महर्षि ने उत्तर दिया-'ये सब आकाश में ओतप्रोत है।' इसके बाद गार्गी ने अपना दूसरा और अंतिम निर्णायक प्रश्न पूछा-'आकाश किस में ओतप्रोत है।' महर्षि ने उत्तर दिया-'गार्गी! आकाश जिसमें ओतप्रोत है, उस तत्व को ब्रह्मवेत्ता 'अक्षर' कहते हैं। वह अक्षर न मोटा है, न पतला, न छोटा, न बड़ा, न ठोस, न तरल, न छाया, न अंधकार, न वायु, न आकाश। वह न रस, न गंध, न नेत्र, न कान, न वाणी, न मन, न तेज, न प्राण, न मुख और न भाव, कुछ भी नहीं है। उसमें भीतर बाहर कुछ भी नहीं है, वह कुछ भी नहीं खाता, उसे भी कोई नहीं खाता। गार्गी! और भी सुनो-इस अक्षर के ही प्रशासन में सूर्य और चन्द्रमा स्थिर और स्थित रहते हैं। द्युलोक और पृथ्वी भी इसी तत्व में स्थित है। मुहूर्त, दिन, रात, पक्ष, मास, ऋतु, संवत्सर सभी इसी के प्रशासन में स्थित है। नदी, पर्वत, दिशा जो कुछ भी है, सभी इसके वश में है। जो कोई इस लोक में इस अक्षर को न जानकर हवन करता है, यज्ञ करता है और हजारों वर्षों तक तप करता है, उसका वह सब अन्त होने वाला ही होता है, सब व्यर्थ हो जाता है। अक्षर को जाने बिना ही जो मरकर अन्य लोक में जाता है, वह अभागा है, जो इसे जानता है, वह सौभाग्यशाली है, ब्रह्मवेत्ता है। हे गार्गी! यह अक्षर स्वयं दृष्टि का विषय नहीं है, किन्तु दृष्टा है, श्रवण का विषय नहीं है, किन्तु श्रोता है, स्वयं विज्ञाता है, किन्तु दूसरों से अविज्ञाता (अनजाना) रहता है। इससे अलग दूसरा कोई भी दृष्टा, श्रोता और विज्ञाता नहीं है।'

अपने दोनों प्रश्नों का उत्तर सुनकर गार्गी ने यज्ञ में उपस्थित सभी ब्रह्मवेत्ताओं से निवेदन किया-'उपस्थित विद्वानो! आप लोग इसी को अपना सौभाग्य माने कि आप महर्षि याज्ञवल्क्य को नमस्कार करें, इसी से आपका छुटकारा हो जाए। यह तो निश्चय है कि ब्रह्म संबंधी वाद में महर्षि याज्ञवल्क्यजी को कोई नहीं जीत सकता।' गार्गी के इस कथन के बाद सभी विद्वानों ने इस यज्ञ के ब्रह्मवाद का सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मवेत्ता महर्षि याज्ञवल्क्यजी को स्वीकार किया और उनकी विद्वता से प्रसन्न होकर उन्हे बहुत सी गायें और अनेक उपहार देकर वहां से विदा किया। इसके साथ ही महाराज ने इस पवित्र प्रसंग में गार्गी को अल्पायु और मात्र अध्येता होते हुए भी निर्णायक की भूमिका जिस निष्पक्षता के साथ निभाई, के हेतु गार्गी को महान् न्यायविद् विदुषी गार्गी सम्मान से सम्मानित किया गया।

वैदिक साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि पूछे गये गंभीर प्रश्नों से उनके अध्ययन की जानकारी मिलती है। इतने पर भी उनके मन में अपने पक्ष को अनुचित रूप से सिद्ध करने का दुराग्रह नहीं था। वह विद्वतापूर्ण उत्तर पाकर संतुष्ट हुई और दूसरे की विद्वता की भी उन्होंने मुक्तकंठ से प्रशंसा की।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि नारी शिक्षा की ओर वैदिक काल से ही पर्याप्त जागरुकता थी और शिक्षित नारी का समाज में सम्मानजनक स्थान था। मध्यकाल में नारी शिक्षा की ओर समाज का ध्यान हटा हुआ पाया जाता है। उन्नीसवीं शताब्दी में नव-जागरण एवं पुनरुत्थान की प्रवृत्ति से प्रभावित होकर महिलाओं से संबंधित रूढ़िवादी धारणाएं शनैः शनैः समाप्त हुई है और नारी शिक्षा का प्रचार प्रसार होने लगा है। वर्तमान में शिक्षित नारी की उपलब्धियां बढ़ती जा रही हैं। हर क्षेत्र में, यहां तक कि सेना, पुलिस, प्रशासन, रेल सेवा, हवाई सेवा, परिवहन सेवा में नारी प्रवेश कर रही है। साहित्य के क्षेत्र में भी नारी की उपलब्धियां उल्लेखनीय हैं। वर्तमान की शिक्षित महिला समर्थ है और आत्मनिर्भर भी है। शिक्षित युवती तर्कशील एवं स्पष्टवादी है। गार्गी भारतवर्ष की स्त्रियों में रत्न थीं। आज भी उनकी जैसी विदुषी एवं तपस्विनी कुमारियों पर इस देश को गर्व है।

-प्रशासनिक अधिकारी (से.नि.)
एफ-93, मुरलीधरव्यास नगर, बीकानेर
मो. 9460078624

अध्यात्म-विज्ञान

आस्थावानों का दिमाग मजबूत

ईश्वर के प्रति यकीन करने वाले और अपने धर्म में आस्थावान लोगों का दिमाग मजबूत है यह विश्वास उनके स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद है। कोलविया विश्वविद्यालय के शोधकर्ता प्रोफेसर डॉ. मायरा वेजमैन के अनुसार ''हमारा दिमाग बहुत अलग तरीके का शरीर है। यह न सिर्फ हमारे शरीर को नियन्त्रित करता है बल्कि कई बार हमारे स्वभाव को भी नियंत्रित करता है। डॉ. वेजमैन के अनुसार गहरे कोर्टेक्स वाले लोग अवसाद के शिकार नहीं होते जबकि धर्म के प्रति आस्था न रखने वाले व्यक्ति अपनी परिस्थितियों से जल्दी हार मान लेते हैं।

हाल ही में किये गये शोध के मुताबिक धार्मिक लोगों का दिमाग अधिक मजबूत होता है। उन्हें अवसाद का खतरा अपेक्षाकृत बहुत कम होता है। धार्मिक लोगों के दिमाग में कोर्टेक्स वाला भाग अधिक गहरा होता है इस कारण वे लोग दूसरों की अपेक्षा मानसिक रूप से अधिक मजबतू होते हैं।

संकलनकर्ता :
नारायण लाल टाक (माली)
वरिष्ठ लिपिक, छीपों का मौहल्ला, बीकानेर
मो. 9252726037

प्रार्थना विज्ञान

प्रार्थना की अभ्यर्थना

❑ डॉ. दाऊदयाल गुप्ता

विद्या के विषय में यह सूक्ति बहुप्रचलित है–

विद्या ददाति विनयम्,
विनयात् याति पात्रताम,
पात्रत्वाद् धनम आपनोति,
धनादि धर्मः ततः सुखम्।

तब विनय के मूल में विद्या है ! विद्या ही व्यक्ति को विनयी बनाकर उसे सुपात्र बनाती है, जिससे धन का अर्जन धर्म की साधना के लिये होता है जो अनेक प्रकार के सुखों का प्रदाता है। पर, विद्या जब अहंकार व प्रमाद का कारण बन जाती है तो मानवीय गुण लुप्त होने लगते हैं। मन विकारयुक्त हो जाता है तथा अविवेक सिर पर सवार होकर शिक्षा को निरुद्देश्य बना देता है। अतः मन के प्रमाद और अहंकार को गलाने, आत्मविश्वास को जगाने, परस्पर प्रेम को बढ़ाने तथा स्वकर्त्तव्य का भान कराने का काम 'प्रार्थना' द्वारा ही संपादित होता है। सौभाग्य से हम महान देश भारत के वासी हैं किन्तु विश्व के निवासी हैं। इसीलिये हमारी प्रार्थना का स्वरूप भी यह है–

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामयाः।
सर्वेभद्राणि पश्यन्तुमा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्।।

अर्थात सब सुखी हो जाएँ, सब नीरोग हो जाएँ, सबके आनन्दमंगल हो तथा कभी किसी को किंचितमात्र कष्ट न हो– प्रार्थना का यह मनोभाव बन जाये तभी हम मानवता के पुजारी बन सकेंगे। और यह भाव अपने किये सहज नहीं होता। ऐसे उच्चभाव को जगाने के लिये उस परम सत्ता के प्रति नतमस्तक होना पड़ता है जो हमारी श्रद्धा व विश्वास का प्रतीक है। कहा गया है कि–

बुद्धिर्विकुण्ठिता नाथ समाप्त मम युक्तयः।

अर्थात् अपनी बुद्धि कुंठित हो जाय, अपनी युक्तियाँ, अपना उद्योग सब असफल हो जाएँ, ऐसे समय में उसकी प्रार्थना होती है वहीं वे अपने बल आदि के मिथ्या अभिमान का अंश रहने से प्रार्थना नकली होती है और असली प्रार्थना करते हुए प्रार्थी यही कामना करता है–

असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्माअमृतगमय।।

वस्तुतः मोरारीबापू का यह कथन सौ टंच सही है कि शिक्षा सत्य की, दीक्षा प्रेम की तथा भिक्षा करुणा की हो, यही प्रार्थना की सार्थकता है। 'प्रार्थना, में यह ताकत है जो छोटे व्यक्तियों में भी उच्च विचार जन्मित होते हैं, जिनसे सर्वकल्याण की भावना पालित–पोषित होती है।

प्रार्थना सभा में बापू– यह सर्वविदित है कि पूज्य बापू के दैनिक जीवन में 'प्रार्थना', एक अभिन्न अंग बनकर रही। उनकी दैनंदिनि प्रार्थना अविकल रूप से हार्दिक होती थी। प्रार्थना से वे अद्भुत शक्ति प्राप्त करते थे। यह शक्ति, यह बल समस्त प्राणियों में बीच बाँटना उनका उद्देश्य था। अतः सामूहिक रूप से सबको साथ लेकर वे नित्य प्रार्थना करते थे। वे अपने मन, प्राण और तन को इस सेवा का माध्यम मानते थे तथा इसे अत्यन्त सजगता के साथ उपयुक्त रखते थे। कहना न होगा कि बापू का समग्र जीवन प्रार्थनामय या यों कहिये कि प्रार्थना उनके जीवन का संगीत थी। 'बापू और उनकी दिनचर्या' पुस्तक में पृ.20 पर यशस्वी लेखक गौरीशंकर गुप्त ने स्पष्ट लिखा है–

'प्रार्थना से अंतरात्मा की पुकार परमात्मा तक पहुँच जाती है। ...जिस प्रकार बिना स्नान या स्वच्छता से शरीर मलीन बना रहता है, उसी प्रकार प्रार्थना रूप जल के बिना स्वच्छ आत्मा भी मलीन हो जाती है किन्तु प्रार्थना हार्दिक हृदय या मन से–होनी चाहिए, अन्यथा उससे पूरा लाभ नहीं मिल पाता।'

सामूहिक प्रार्थना के प्रति दृष्टिकोण– बापूजी वैयक्तिक प्रार्थना पर अतिशय बल देते थे। उनकी मान्यता थी कि जिस तरह व्यक्ति से समाज बनता है उसी तरह व्यक्तिगत प्रार्थना से ही सामूहिक प्रार्थना का प्रादुर्भाव संभव होता है। वे व्यक्तिगत प्रार्थना को सामूहिक प्रार्थना की जड़ मानते थे। निःसन्देह उनकी सामूहिक प्रार्थना की पारदर्शिता ने हिंदू, मुस्लिम, पारसी, ईसाई समस्त धर्मावलंबियों को जो शक्ति और प्रेरणा दी वह राष्ट्र–प्रेम जगाने में बड़ी कारगर सिद्ध हुई थी। अपनी 'नोआखली' यात्रा के अन्तर्गत उनका यह प्रयोग और भी बलवती हुआ जब वे प्रायः मुसलमान भाइयों के यहाँ ठहरते तथा सामूहिक प्रार्थना करते थे जिनमें सभी शामिल होते थे। पूज्य बापू की मान्यता थी–'सत्य का आग्रह अगर आश्रम के मूल में है तो प्रार्थना उस मूल की बुनियाद है। वे प्रार्थना को 'सुबह की कुंजी' और 'शाम की चटकनी' कहते थे।

प्रार्थना के रंग–उल्लेखनीय यह है कि

हे शारदे माँ, शारदे माँ

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ
अज्ञानता से हमें तार दे माँ
तू स्वर की देवी, है संगीत तुझसे
हर साज तेरा, हर गीत तुझसे
हम हैं अकेले, हम हैं अधूरे
तेरी शरण हम, हमें प्यार दे माँ
हे शारदे माँ.....
ऋषियों ने समझी, मुनियों ने जानी
वेदों की भाषा, पुराणों की वाणी
हम भी तो समझें, हम भी तो जानें
विद्या का हमको तू वरदान दे माँ
हे शारदे माँ.....
तू श्वेतवर्णी कमल पै विराजे
हाथों में वीणा मुकुट सर पै साजे
मन से हमारे मिटा दे अंधेरा
हमको उजाले का संसार दे माँ
हे शारदे माँ.....

प्रात:कालीन प्रार्थना में गाये जाने वाले श्लोक बापू के आश्रम की स्थापना के समय से आज तक मौजूद हैं। इन श्लोकों के चयन का श्रेय काकासाहब कालसकर को है तथा 'एकादश व्रत' वाले श्लोक के रचयिता आचार्य विनोबा रहे। सन् 1915 में हरिद्वार में हुए 'कुम्भ' के सुअवसर पर पं. मदनमोहन मालवीय ने सेवा समिति का गठन करते हुए 'नत्वहं कामये राज्यं' वाला श्लोक आदर्श वाक्य के रूप में चुना था, जिसे तत्काल गाँधीजी ने अपनी दैनिक प्रार्थना में सम्मिलित कर लिया। इसी प्रकार कांग्रेसी नेता 'अब्बास तैयब' जी की पुत्री रेहाना बहन ने कुरान की आयतें सिखाई थीं। उनमें सबसे मशहूर 'अलफातिहा' रही जिसे प्रार्थना में शामिल किया।

आगाखाँ–महल में डॉ. गिल्डर के सम्पर्क में आने पर उनसे एक भजन लेकर अपनी प्रार्थना सभा में सम्मिलित किया था जो जरथोस्ती भाषा से था तथा प्रार्थना के रूप में गाया जाने लगा था। इस धार्मिक गाथा का अनुवाद गाँधीजी ने स्वयं ही इस प्रकार किया–

'ऐ घेरमज्द सर्वोत्तम दीन (धर्म) के कलाम (शब्द) और कार्यो के बारे में मुझसे कह ताकि मैं नेकी के रास्ते रहकर तेरी महिमा का गान करूँ। तू जिस तरह चाहे उसे तरह मुझे आगे चला। मेरी जिन्दगी को ताजगी बख्श और मुझे स्वर्ग का सुख दे।' –आश्रमभजनावलि

इसी प्रकार रिबूस्तो भजनों में निम्नांकित गाँधीजी के अत्यन्त प्रिय भजनों में से रहा जिसका अंग्रेजी अनुवाद था–

'Lead, kindly light amid
the encircling gloom
Lead Thou me on:
The night is dark and
I am for from home
Lead. Thou me on.
Keep thou my feet.
I do not ask to see
The distant scene.
One step enough for me
I was not ever thus,
nor prayed that
Thou shouldst lead me on.
I loved to choose and see
my path, but now
Lead Thou me on.'

अन्य विशिष्टताएँ–प्रार्थना की प्रभावशीलता तथा जन-जन की समर्थित सहभागिता का विशिष्ट कारण यह था कि प्रार्थना सिर्फ और सिर्फ प्रार्थना थी, जिसका धार्मिक संकीर्णता से कहीं भी लेना-देना न था तथा न ही उच्चता व निम्नता का दृष्टि-भेद। मन की मलिनता को मेटने तथा तन्मयता के साथ परम सत्ता से भेंट का उपक्रम इस सद्वृत्ति से प्रेरित था–

'सार-सार को गहि रे थोथा देइ उड़ाय।'

अत: जाति-धर्म-वर्ग व भाषा-भेद को भुलाकर प्रभु-स्मरण अभीष्ट होता था। बापू की प्रात:कालीन एवं सायंकालीन प्रार्थना हिन्दुस्तानी, गुजराती, मराठी, बंगला, सिन्धी, अंग्रेजी आदि भाषाओं में स्वरित होती थी। प्रात:कालीन प्रार्थना का शुभारंभ नरसी मेहता के सुप्रसिद्ध भजन 'वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीड़ पराई जाणे रे' से होता था तो सायं बौद्ध मंत्र 'नं म्यो हो रेंगे क्यों ? से होता था जिसका तात्पर्य था-सद्धर्म पुंडरीकसूक्त को नमस्कार।

संगीत का समावेश–प्रार्थना में भावों की सरसता तो महत्वपूर्ण है ही किन्तु स्वर की शुद्धता तथा माधुर्य की विपुलता उसके प्रभाव को अक्षुण्ण बना देती है। वस्तुत: स्वर, ताल तथा विचार/भाव के संयोग से प्रार्थना का ऐसा स्थायी, आत्मीय एवं संवेदनशील वातावरण बनता है जो रागात्मकता के साथ सर्वग्राह्य होता है। कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि प्रार्थना किसी पेशेवर गायक की अपेक्षा रखती है। सामूहिक रूप से गाये जाने वाली प्रार्थना किंचित लय, ताल व सहज यति-गति के साथ तन्मय होकर की जाती है तो उसमें आत्मीय मिठास आ जाना स्वाभाविक है तथा वही मिठास अभीष्ट होती है। गाँधीजी की प्रार्थना के विषय में श्री बालकवि बैरागी के निम्नांकित विचार अनुकरणीय है-''उनकी प्रार्थना का एक छन्द इस प्रकार था–

'रघुपति राघव राजाराम,
पतित पावन सीताराम।

ईश्वर अल्ला तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान। उन्होंने सबके लिये सन्मति माँगी। वे आसानी से मुझ जैसे कवि से लिखा सकते थे, 'सबको रोटी दे भगवान या मुझको रोटी दे भगवान या कि हीरे मोती दे भगवान, धन और धरती दे भगवान....कहूँ कि संगीत, पिंगस, छन्द, मात्रा, लय, ताल सबका निर्वाह करते हुए ऐसी पचासों पंक्तियाँ जोड़ी जा सकती हैं किन्तु उन्होंने अपनी प्रार्थना सबको सन्मति दे भगवान जैसी महत्वपूर्ण पंक्ति का सहारा लिया। अपनी छाती पर गोली खाने के बाद भी 'हे राम' कहते हुए बलिदान हो गये, लेकिन बलिदान पूर्व भी यही प्रार्थना पंक्ति उनकी प्रत्येक प्रार्थना सभा में गूँजती रहती थी।'' –कल्याण जीवनचर्या अंक पृ.313 अंतिम पैरा

प्रार्थना की अभ्यर्थना–तो बाल कवि वैरागी ने प्रार्थना की अभ्यर्थना में दो चीजों की याचना का निषेध किया। प्रथमत: स्वजीवन से निराश होकर मौत दूसरी रोटी। कारण, जन्म के साथ मृत्यु सुनिश्चित है। उसी प्रकार जन्म से पहले ही माँ की छवि में अमृत तुल्य दूध की व्यवस्था तथा बाद में आजीवन दाने-दाने पर लिखा है खाने वाले का नाम। सबके लिये यहां तक कि चींटी, चिड़िया और गजानन के लिये भोजन-व्यवस्था। इस प्रकार की हो–

'प्रभो! आपने मुझे अपनी सुन्दर संरचना में भारत जैसे पावन देश की पुण्य धरती पर मनुष्य बनाया है। मुझे ऐसा अनुपम जीवन दें कि मैं परोपकार और परमार्थ करते हुए अपना ऋण चुका सकूं। मनुष्य ही नहीं जीवमात्र के काम आ सकूं।' –बालकवि बैरागी

जिस प्रकार हमारी दैनिक जीवनचर्या में प्रार्थना अपरिहार्य है, उसी प्रकार प्रार्थना की अभ्यर्थना में उपरिलिखित तत्वों का समावेश होना अत्यावश्यक है। समस्त धरम, समस्त कर्म तथा ऋषि-मुनियों के कथन का मर्म श्री रामचरित मानस की इस चौपाई में सन्निहित है–

'परहित सरिस धरम नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।'

हमारी प्रार्थना की प्रत्येक पंक्ति, पंक्ति का प्रत्येक शब्द समर्थ सत्ता के द्वारा सुना जाता है क्योंकि प्रार्थना के पश्चात हर कर्म उसकी भावना से अनुप्रेरित है। ऊपर वाला खूब परख लेता है कि आपका मूलधन क्या है और कितना है। हम उसका सदुपयोग कर रहे हैं कि दुरुपयोग, इस बात को प्रार्थना का सुनवैया खूब जानता है। नि:संदेह आपकी अथवा हमारी प्रार्थना परहित में है तो स्वीकृत अथवा अस्वीकृत। इसीलिये स्कूली प्रार्थना में हमारी यह प्रार्थना सर्वमान्य रही–

वह शक्ति हमें दो दयानिधे कर्तव्य मार्ग पर डट जाएँ।
पर सेवा पर उपकार में हम जन जीवन सफल बना जाएँ।।
हम दीन दुखी निर्बलों विकलों के सेवक बन संताप हरें।

जो हैं अटके भूले भटके उनको तारें खुद तर जाएँ।।
छल दंश द्वेष पाखंड झूठ अन्याय से निशिदिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना शुचि प्रेम सुधारस बरसावें।।
निज आन-मान-मर्यादा प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे।
जिस देश जाति में जन्म लिया बलिदान उसी पर हो जाएँ।।

कुछ लोग जाति को लेकर विचारों की संकीर्णता व्यक्त करते हैं किंतु मानव स्वयं में एक जाति है। अत: संशय की गुंजाइश नहीं रहती। प्रात:काल जब डाक्टर, ऑपरेशन थियेटर में प्रवेश करता है, ड्राईवर जब सवारियों से भरी बस को चलाने के लिए उद्यत होता है या शिक्षार्थी अथवा शिक्षक पढ़ने-पढ़ाने के लिए सन्नद्ध होता है तो मन ही मन किसका स्मरण करता है किसके समक्ष नतमस्तक हो क्या याचना करता है, सुनिये-

कर प्रणाम तेरे चरणों में लगता हूं अब तेरे काज।
पालन करने की आज्ञा तब मैं नियुक्त होता हूं आज।।
अंतर में स्थित रहकर मेरे बागडोर पकड़े रहना।
निपट निरंकुश चंचल मन को सावधान करते रहना।।
अन्तरयामी को अंतर स्थित देख सशंकित होता मन।
पाप वासना उठते ही हो नाश लाज से वह जल भुन।।
प्रतिपल निज इन्द्रिय समूह से जो कुछ भी आचार करूँ।
केवल तुझे रिझाने को बस तेरा ही व्यवहार करूँ।।
तू ही है सर्वत्र व्याप्त हरि! तुझमें यह सारा संसार।
इसी भावना से अन्तर भर मिलूँ सभी से तुझे निहार।।

फलागम-प्रार्थना में आत्म दोषों के परिष्कार की पुकार तथा कण-कण और साँस-साँस में एक ही नूर का निहार सचमुच हमारी उसी उच्चाकांक्षा की अभिव्यक्ति, स्वकर्त्तव्य के बोध की सच्ची अनुभूति कराती है।

'सबका सुहित हमारा हित है, यही प्रार्थना का मूल है। दु:खी पड़ौसियों के मध्य में बड़े से बड़ा व्यक्ति कैसे सुखी रह सकता है। अत: प्रार्थना के बल पर इस सत्य को पहचानें तथा परस्पर समत्व भाव की अनुभूति कर निजी स्वार्थ की जंजीरों को तोड़ डालें तो प्रेम का व्यापक संचार होना व सच्चे अर्थों में प्रार्थना फलीभूत होगी-

किसी के काम जो आये उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये उसे इन्सान कहते हैं।।

किन्तु अपनी सेवा पर किंचित मात्र भी अभिमान न हो, यह प्रार्थना भी दोहरानी होगी तथा स्वीकार करना होगा कि हम परमपिता की कृपा से उनके द्वारा अपने लिये आवंटित कार्य को कर रहे हैं। स्काउटिंग अभियान के प्रारंभ में की जाने वाली प्रार्थना इस दृष्टि से अनुकरणीय है-

दया कर दान भक्ति का हमें परमात्मा देना।
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।।

दिव्यानन्द का स्रोत-परमात्मा एक है, प्रार्थना अनेक। जिस प्रकार एक तालाब में कई घाट होते हैं। कोई भी किसी घाट से उतरकर तालाब में स्नान कर सकता है। ऐसा करने से कोई घाट बड़ा या छोटा नहीं कहा जा सकता। ठीक यही स्थिति प्रार्थना तो माध्यम है उस दिव्यानन्द के झरने तक पहुँचने का। 'एक नूर के बन्दे हैं हम कौन भले कौन मंदे', यदि गुरु नानक ने बतलाया तो संत कबीर ने भी यही अनुभव प्रकट किया-

लाली मेरे लाल की जित देखो तित लाल।
लाली देखन मैं गई मैं भी हो गई लाल।।

बस, उस लाली के दर्शन हेतु मैं अर्थात् आत्मा को सजग होना पड़ेगा। और उस चैतन्यावस्था का वरण करने के लिये अंधभक्ति का अवलम्ब नहीं अपितु स्वच्छ मन से प्रभु की प्रार्थना आवश्यक है। तब हमें अपनी प्रार्थना में राष्ट्र हित की कामना का स्मरण ही रहेगा-

देश की माटी देश का जल,
हवा देश की देश का फल,
सरस बनें प्रभु सरस बनें।
देश के घर औ देश के घाट,
देश के वन और देश के वाट,
सरस बनें प्रभु सरल बनें।
देश के तन और देश के मन
देश के घर के भाई-बहन
विमल बनें प्रभु विमल बनें।।
देश की माटी।।

गुरुदेव द्वारा रचित तथा कविवर भवानी प्रसाद मिश्र द्वारा अनूदित-

प्रार्थना के अनिर्वचनीय प्रभाव को वही जान सकता है, जिसने प्रार्थना की हर पंक्ति के भाव को जीया हो। लकीर के फकीर बनकर औपचारिकता के बंधन में बँधकर प्रार्थना करना श्रेयस्कर नहीं है। यूँ भी शब्द को ब्रह्म माना गया है। अत: प्रार्थना में प्रयुक्त हर पंक्ति तथा पंक्ति में प्रयुक्त हर शब्द के भाव का अनुभव अत्यन्त धैर्यपूर्वक किया जाए तो प्रार्थना आनंदित करेगी। आनंद की सृष्टि होने पर मन प्रार्थना में रमेगा। फिर हर दिन बालक को या किसी अन्य प्रार्थी को अनुपस्थित रहने पर दण्ड नहीं भरना पड़ेगा बल्कि उस आनन्द की प्राप्ति को प्राप्त करने हेतु उसका मन उत्साहित रहेगा। इस प्रकार आनन्द प्रदायिनी प्रार्थना की गूँज प्रार्थी के जहन में दिन भर गुंजार करती रहेगी तथा उसे शक्ति प्रदान करती हुई कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक बनाती रहेगी। प्रार्थना की ताकत अकृत है, असीमित है, अपार है। प्रार्थना की ताकत को समझने और हृदयंगम करने की जरूरत है। भगवान की कृपा से यह योग्यता हमें मिलती है। इस योग्यता के विकास के लिए परमात्मा से प्रार्थना की जानी चाहिए।

मन पर विजय कर आत्म नियंता बनने की बहुत सुन्दर प्रार्थना इन शब्दों में देखिए-

हमको मन की शक्ति देना मन विजय करे,
दूसरों की जय से पहले खुद को जय करे
भेद भाव अपने दिल से साफ कर सकें,
दोस्तों से भूल हो तो मुआफ कर सकें।
झूठ से बचे रहें, सच का दम भरें,
दूसरों की जय.....।।
मुश्किलें पड़े तो हम पर इतना करम कर,
साथ दें तो धर्म का, चले तो धर्म पर।
खुद पै हौंसला रहे, बदी से ना डरें,
दूसरों की जय.....।।

निष्कर्ष-निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि तन्मयता के साथ समर्पित हृदय-भाव इस परम पिता के प्रति प्रार्थना है जिसमें पश्चाताप नहीं अपितु आगे बढ़कर, कुछ ऊँचे उठकर, संकीर्ण दायरे से बाहर निकलकर मानवता की सेवा करने का संकल्प निहित है। एक अकेली प्रार्थना में राष्ट्र चरित्र को गढ़ने की तजबीज है तथा इन्सानी फितरत को बयान करने की ताकत है। किसी विद्यालय की फिजा को जानना है तो वहाँ की प्रार्थना सभा हाजिर है, साफगोई के लिये। समय की पाबन्दी, स्वानुशासन, गुरुजनों की सहभागिता, सांस्कृतिक एवं संगीतमय कार्यक्रमों का स्तर, नेतृत्व क्षमता, एकाग्रता उच्चारण शुद्धता, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य एवं स्वच्छता की झलक, नैतिकता आदि न जाने कितने मानवीय मूल्यों की प्रयोगशाला वस्तुत: प्रार्थना सभा ही है। हम तो स्वानुभव के आधार पर यही कह पायेंगे कि-

यहाँ स्वर्ण मत खोज, यहाँ मानव ढलता है,
प्यार पनपता रोज, ज्ञान दीपक जलता है।।

(लेखक लब्धप्रतिष्ठ शिक्षाविद् एवं शिविरा के सुपरिचित लेखक हैं।)
-दही वाली गली, ब्यानियान मौहल्ला, भरतपुर
मो. 9461462739

प्रार्थना चिन्तन

प्रार्थना की ताकत

❒ चेतना उपाध्याय

धरती पर समस्त जीवधारियों में मनुष्य सर्वाधिक शक्तिशाली प्राणी है। अपार शक्तियों का स्वामी अबोध बालमन अपने इन क्षमताओं के बारे में अक्सर अन्जान होता है। अनभिज्ञता की स्थिति में स्वयं को स्वयं में जोड़ने का सूत्र भर है ''प्रार्थना''। यह अपरोक्ष सूत्र प्रार्थना हृदय की निर्मलता का लक्षण है, और मस्तिष्क की तार्किकता को सबल बनाने वाला उपकरण। यही कारण है कि हम प्रार्थना मात्र से अपनी शक्तियों की सार्मथ्य को महसूस करते हैं।

प्रार्थना दरअसल ईमानदार, करुणा से भरी तथा अहम को गलाने वाली एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया होती है। मानसिक तौर पर जब हम एक सच्चे सहारे का अनुभव करते हैं तो अधिक विनम्र तथा मानवीय होते हैं। हम ईश्वर या अध्यात्म में विश्वास करें या न करें, प्रार्थना कम से कम मनोविज्ञान का अचूक अस्त्र तो साबित होता ही है। कुछ लोग इन्हें चमत्कार भी कहते हैं और चमत्कार को नमस्कार हमारी पुरातन परम्पराओं में शामिल है। यही वजह है हमारे विद्यालयों में प्रार्थना कार्यक्रम को सर्वोत्तम रूप में स्वीकार कर शिक्षण प्रणाली का अहम भाग माना गया है।

विद्यालयों में नियत समय पर टन-टन-टन की सुमधुर स्वर लहरियों के साथ ही निर्धारित स्थलों पर पंक्तिबद्ध रूप से एकत्रित हो प्रार्थना करना छात्रों को दो तरह से शक्तिशाली बनाता है। प्रथम तो घरेलू पारिवारिक माहौल से मुक्ति। जी हाँ जब बालक अपने घर से विद्यालय आता है तो माता-पिता का स्नेहिल साया, मुक्त वातावरण साथ होता है। कक्षा कक्षों में अनुशासित रूप में सीमीत कालांशों में ज्ञानार्जन उसके लिए बोझिल ना बने। इस उद्देश्य से प्रार्थना उसे अध्ययन हेतु सहज रूपमें तैयार होने का समय प्रदान कर देती है। छात्र प्रार्थना पश्चात् सहजता से कक्षा कक्षों में औपचारिक शिक्षण हेतु प्रवेश करता है। द्वितीय रूप में वह प्रार्थना के साथ अपनी समग्र क्षमताओं से जुड़ कक्षा कक्षों में ज्ञानार्थ प्रवेश करता है। प्रार्थना प्रक्रिया उसके ध्यान केन्द्रित कर पाने की क्षमताओं में वृद्धि करती है परिणामस्वरूप ज्ञानार्जन प्रक्रिया छात्र हेतु सहज, सरल, सुगम्य हो जाया करती है। यहां प्रार्थना की शक्ति सुस्पष्ट होने में कोई संदेह नहीं। सिर्फ आवश्यकता इस बात की है कि प्रार्थना पूर्ण मनोयोग से की जाए। इसे विभागीय नियमावली का हिस्सा मात्र नहीं समझा जाए। प्रार्थना स्थल पर प्रार्थना जब विभागीय नियमों की पूर्ति हेतु सम्पादित की जाती है तो यह एक अनिवार्य कार्य मात्र हो जाती है। कार्य में सफलता या असफलता रुचिपूर्वक, आनन्दपूर्वक सम्पादन पर निर्भर है। वैसे विभागीय प्रार्थना प्रारूप अपने आप में सशक्त व सार्मथ्यवान है।

आईये इस प्रारूप पर एक नजर डालते हैं-

1. विद्यालय में घण्टी बजते ही समस्त कक्षाओं के छात्र एक साथ अपनी सम्पूर्ण समग्रता लिए हुए पंक्तिबद्ध रूप में एकत्रित होते हैं। यह प्रक्रिया छात्रों में क्रमबद्धता एवं सामूहिकता का संचार करती है।
2. सर्वप्रथम राष्ट्रगीत उनमें सक्षम, समर्थ, स्वतंत्र, गौरवमई धरा का अहम हिस्सा होने का जज्बा भरता है।
3. सरस्वती वन्दना उनमें विनम्रता एवं सहृदयता के साथ विद्या की देवी माँ सरस्वती के आंगन में उसका आशीर्वाद प्राप्त होने का हौंसला भरती है जो कि छात्र को अपने आप में और अधिक सामर्थ्यवान बनाता है।
4. एक मिनट का मौन स्वयं को स्वयं का परिचय करवाता है।
5. सर्वधर्म प्रार्थना छात्रों को भिन्न-भिन्न जाति-धर्म का होते हुए भी एकता के सूत्र में बाँध निरन्तर आगे बढ़ने को प्रेरित करती है।
6. देशभक्ति गीत छात्रों को अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता का मान रखते हुए देश प्रेम, देश सेवा व स्वतंत्र नागरिक के रूप में अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत करते हैं।
7. समाचार वाचन हमारे आस-पास में होने वाली घटनाओं के बारे में जानकारी प्रदान कर हमारे ज्ञान के भण्डार में इजाफा करते हैं।
8. अनमोल वचन विभिन्न धर्मगुरुओं, समाजशास्त्रियों, विद्वजनों के प्रति नतमस्तक करते हुए उचित मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। जिसमें छात्रों हेतु आगे बढ़ने की राह रोशन एवं आसान हो जाया करती है।
9. नैतिक पाठ छात्रों को सहजता पूर्वक नैतिक बनाए रखने में समर्थ बनाता है।

जहाँ तक मेरा मानना है, आप सभी प्रार्थना की उक्त ताकत से परिचित हैं यह आलेख तो मात्र हमारी आपकी जानकारी का दोहरान है जो हमें पुन: पुन: सजगता प्रदान करता है। बोझिल कर्तव्य पथ पर सहजता उपलब्ध करवाता है। यहाँ आवश्यकता मात्र इस बात की है कि यह कार्य सहज, सरल, लय-ताल, सौंदर्यानुभूति, दिव्यता के साथ सम्पादित हो ताकि छात्र आत्मप्रेरित हो इस रसानुभुति के प्रति लालायित रहे। उनमें भी प्रार्थना की उक्त शक्ति का स्वत: स्फूर्त आभास हो।

यह अक्षरक्ष: सत्य है कि प्रार्थना जीवन की गहराइयों में छुपे वास्तविक जीवन की तलाश के सूत्र प्रदत्त करती है।

जीवन की हर परिस्थिति में प्रार्थना एक सच्चे मित्र और मार्गदर्शक की भांति अपना साथ

तू ही राम है, तू रहीम है

तू ही राम है, तू रहीम है
तू करीम, कृष्ण, खुदा हुआ।
तू ही वाहेगुरु, तू यीशु मसीह
प्रति नाम में तू समा रहा।
तेरी जोत पाक कुरान में
तेरा दरस वेद-पुराण में
गुरु-ग्रन्थ जी के बखान में
तू प्रकाश अपना दिखा रहा।
तू ही राम है.....
अरदास है, कहीं कीरतन
कहीं रामधुन, कहीं आवाहन
विधि-वेद का यह सब रचन
तेरा भक्त तुझ को बुला रहा।
तू ही राम है, तू रहीम है
तू करीम, कृष्ण, खुदा हुआ।

देती है और दूसरों का भी हौंसला बनाए रखती है जब भारी और अचानक आई विपत्तियाँ मनुष्य को घेर लेती है, जब समृद्धि का स्थान दुर्भाग्य ले लेता है, जब सुख में साथ देने वाले मित्र साथ छोड़ देते हैं और दुख अपना घेरा चारों ओर बना देता है। तब भी प्रार्थना इन विपरीत परिस्थितियों में प्रोत्साहन का माध्यम बनती है हृदय को शांति का मार्ग प्रशस्त करती है।

महर्षि अरविंद ने एक वक्तव्य में कहा था कि प्रार्थना मुक्ति योग की एक जरूरी स्थिति है, लेकिन यह मनुष्य मात्र की स्वतंत्रता और रूपांतरण है। पूरा जीवन प्रकृति का योग है जिसे स्वयं के भीतर ईश्वर की प्रत्यक्षता की तलाश होती है। सामान्यतः भक्तिभाव से ईश्वर के साथ सम्पर्क प्रार्थना है साधु-संत, महात्मा, विशेषज्ञ और भविष्य वक्ताओं के शब्द भी प्रार्थना है। यह मानकर कि अपने से ऊपर कोई शक्ति है, उसे पूर्ण समर्पण के साथ धन्यवाद देना प्रार्थना है। यह दैवीय शक्ति पर विश्वास और आस्था को पुष्ट करती है। प्रार्थना किसी उच्च शक्ति के साथ हमारा अध्यात्मिक सम्बन्ध है। यह हृदय व मस्तिष्क दोनों को शांति देती है। प्रार्थना का धर्म से सिर्फ इतना रिश्ता है कि लोग उसके रीति रिवाज अपना लेते हैं। वरना प्रार्थना व्यक्ति को कृतज्ञ, समर्थ, उदार और सुख की समझ देने वाली होती है।

प्रार्थना निष्पाप और निर्मल होने के लिए किया गया एक आत्मिक प्रयास है। जीवन दर्शन को जानने की उन सभी दृष्टिकोणों से कोशिश है, जो अनुभवों को विश्लेषित कर आगे का मार्ग प्रशस्त करते हैं। यह धर्म या अध्यात्म की विषय वस्तु ना रहकर विराट रूप में एक बेहतर जिंदगी के लिये प्रवृत्त करने का उपक्रम हो सकती है। ज्ञान, बोध निर्माण या रचना के तत्वों को समझने के लिए हमें स्वयं प्रार्थनारत होना होगा। तभी हम प्रार्थना की वास्तविक शक्ति को महसूस कर पाएंगे। प्रार्थनाएँ सुनी जाती है। प्रार्थनाओं का जवाब मिलता है। पर हाँ जब आप प्रार्थना खत्म करते हैं। वो प्रार्थना के प्रारम्भ से अंत तक आपको विश्वास होना चाहिए कि आपने जो कुछ मांगा है आपको दिया जा चुका है। तब इसके लिए आप उस असीम ईश शक्ति को धन्यवाद भी दे सकते हैं।

व्याख्याता (गृह विज्ञान)
रा.बा.उ.मा.वि. रामगंज, अजमेर
मो. 9928186706

इस माह का गीत

नई किरण विज्ञान की

❑ प्रो. हरिराम आचार्य

गुलाबी नगर जयपुर में आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान सम्मेलन के अवसर पर शिक्षाविद् एवं विख्यात कवि प्रो. हरिराम आचार्य ने इस सुन्दर गीत की रचना की थी। कवि महोदय के प्रति विनम्र आभार के साथ प्रस्तुत है यह रचना। -शिक्षिका संपादक

नई दृष्टि हो, नई सृष्टि हो, बढ़ान अनुसंधान की।
इस गुलाबी नगरी से उभरे, नई किरण विज्ञान की।।

यह धरती है चरक, आर्यभट्ट, मिहिर-भास्करों की धरती,
बोस, रमण, रामानुज, शेखर और सुश्रुता की जननी।।
तपस्वियों ने परम सत्य का अन्तर्दर्शन यहीं किया।
'अंक' 'वशमलव' के तत्वों का इसी देश ने दान किया।
कदम बढ़ायें, फिर दुहरायें, गाथा उस अभियान की।
इस गुलाबी नगरी से उभरे नई किरण विज्ञान की।

रोग, अभाव, प्रदूषण, जड़ता का कितना परिहार किया।
क्रान्ति-सूत्र कितने रच पाये, क्या-क्या आविष्कार किया।
कितना चले, कहाँ तक पहुँचे, इस पर आज विचार करे।
जनमानस में अणुमानव के चेतन का संचार करे।
मिथ्या मिटायें, धुंध हटायें, सदियों के अज्ञान की।।
इस गुलाबी नगरी से उभरे नई किरण विज्ञान की।

मंथन नये विचारों का यह संगम है नव चिन्तन का
'इसका' शंखनाद बन जाये स्वर कल के अभिनंदन का।
अंतरिक्ष सिन्धु से ग्रहमंडल तक ऊर्जा के अभियान चले।
जीवन सजे, खेत लहरायें, यंत्रों में उद्योग ढलें।
शक्ति जगायें, कीर्ति बढ़ायें, वैज्ञानिक वरदान की।
इस गुलाबी नगरी से उभरे नई किरण विज्ञान की।

जन्म दिवस विशेष

स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचार

❑ सुरेशचन्द्र खटीक

आधुनिक भारत के महान धार्मिक और सामाजिक क्रान्तिकारी चिन्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने शिक्षा जैसे जीवन निर्माण के महत्वपूर्ण प्रश्न पर अपने विचार भाद्रपद शुक्ल पक्ष संवत 1939 को उदयपुर में विरचित प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय एवं तृतीय समुल्लास (विभाग) में व्यक्त किये हैं। यहाँ धर्म का संकुचित अर्थ न होकर व्यापक अर्थ है। स्वामीजी की दृष्टि में शिक्षा केवल विषयों की जानकारी या जीविकोपार्जन का साधन मात्र न होकर बालक-बालिकाओं में चरित्र निर्माण के साथ उनका सर्वांगीण विकास करने वाली है। इसलिए उन्होंने छठे नियम में "शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक" उन्नति करने के साथ-साथ आठवें नियम में 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि' की भी प्रमुखता दी है।

दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थ' प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में सन्तान के शिक्षक-प्रशिक्षण की विधि बतलायी है। उनके अनुसार बालकों का शिक्षण-प्रशिक्षण विद्यालय गुरुकुल से प्रारंभ नहीं होता: अपितु माता के गर्भ से ही, जन्म से पूर्व उनकी शिक्षण-प्रशिक्षण प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। माँ के खान-पान, व्यवहार आदि का गर्भस्थ बालक पर शारीरिक एवं मानसिक प्रभाव पड़ता है जिसकी पुष्टि आधुनिक वैज्ञानिक भी करते है। द्वितीय समुल्लास के प्रारंभ में ही स्वामीजी ने लिखा है-"मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद।"

यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक; अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे, तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है। दयानन्द सरस्वती ने धर्म-कर्म के फल व्यवहार शुद्धि को स्वीकारते हुए लिखा है कि, "चोरी, जारी, आलस्य, प्रमाद, मादक द्रव्य, मिथ्या भाषण, हिंसा, क्रूरता, ईर्ष्या, द्वेष, मोह आदि दोषों को छोड़ने और सत्याचार के ग्रहण करने की शिक्षा ग्रहण करें। सज्जनों का संग और दुष्टों का त्याग, अपने माता, पिता और आचार्य की तन, मन और धनादि तथा उत्तम-उत्तम पदार्थों से प्रीति पूर्वक सेवा करें।" अन्त में माता-पिता के कर्तव्य को इंगित करते हुए कहा कि "माता, पिता का कर्तव्य कर्म, परम धर्म और कीर्ति का काम यही है कि अपने सन्तानों को तन, मन, धन से विद्या धर्म सभ्यता और उत्तम शिक्षा युक्त करें।"

जन्म तिथि : 24 फरवरी 1825

सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में अध्ययन-अध्यापन विधि की व्याख्या की गयी है। शिक्षा के महत्व एवं आवश्यकता को प्रतिपादित करते हुए तथा मनुस्मृति का उद्धरण देते हुए लिखा है-"कन्यानां समप्रदानं च कुमाराणां च रक्षणम्।"

इसका अभिप्राय है कि इसमें राज नियम और जाति-नियम होना चाहिए कि कोई भी पांचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे अपने लड़कों और लड़कियों को घर में न रख सके। पाठशाला में अवश्य भेज देवे। जो न भेजें, वह दण्डनीय हो।

यहाँ जाति नियम से तात्पर्य सामाजिक नियमों से है। राज्य एवं सामाजिक नियम ऐसे हों कि शिक्षा सबके लिए अनिवार्य हो जाए। सभी को शिक्षा देने का दायित्व समाज एवं राज्य का माना गया है। तृतीय समुल्लास के अन्तर्गत अधोलिखित प्रश्नों पर स्वामी दयानन्द ने अपने विचार प्रकट किये हैं-

1. शिक्षा के सामान्य उद्देश्य
2. लिंग भिन्नता का शिक्षा के उद्देश्यों पर प्रभाव
3. वर्ण व्यवस्था उन उद्देश्यों को किस रूप में प्रभावित करती है?
4. शिक्षा का आरम्भ और समाप्ति
5. शिक्षणालय में अपने पुत्र-पुत्री को भेजने से पूर्व अभिभावकों द्वारा करणीय तैयारी
6. शिक्षणालय किस प्रकार के होने चाहिए? इसके अन्तर्गत अधोलिखित बिन्दुओं पर विचार किया गया है-

(अ) शिक्षणालय गाँव अथवा शहर से कितनी दूर रहें?
(ब) बालक एवं बालिकाओं के शिक्षणालयों के बीच कितनी दूरी हो?
(स) बालक-बालिकाओं के शिक्षणालयों के लिए स्टाफ व्यवस्था कैसी हो?
(द) संस्था प्रधान/शिक्षकों व बालक-बालिकाओं का पारस्परिक सम्बन्ध कैसा हो?
(य) बालक-बालिकाओं के साथ उनके माता-पिता का सम्बन्ध कैसा हो?
(र) प्रवेश के समय की औपचारिकताएं।
(ल) शिक्षणालय के पालनीय नियम क्या-क्या हों?
(व) बालक-बालिकाओं की देखभाल कैसी हो?
(श) पाठ्यक्रम क्या हो?
(ष) विषयवस्तु की जांच के लिए कसौटियाँ परीक्षण क्या हों?
(स) पठन-पाठन का स्वरूप क्या हो?
(ह) शिक्षा के प्रति समाज एवं राज्य के उत्तरदायित्व का क्या स्वरूप हो?

पुनः इन सभी पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है कि शिक्षा के उद्देश्य क्या हों, उन्हें कैसे प्राप्त किया जाए आदि? सत्य, अक्रोध, अहिंसा, परोपकार, अनहंकार, शिष्टाचार आदि उत्पन्न करना प्रमुख है।

लिंग भिन्नता के अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों में अन्तर को स्पष्ट करते हुए स्वामी दयानन्द लिखते हैं कि स्त्री शिक्षा के विषय में उक्त विचार है:- जैसे पुरुषों को व्याकरण, धर्म और अपने व्यवहार की विद्या न्यून से न्यून अवश्य पढ़नी चाहिए, वैसे स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित, शिल्प विद्या तो अवश्य ही सीखनी चाहिए, क्योंकि इनके सीखे बिना वह सत्यासत्य का निर्णय, पति आदि से अनुकूल बर्ताव, यथायोग्य सन्तानोत्पत्ति, उनका पालन, वर्द्धन और सुशिक्षा व्यवस्था, घर के सब कार्यों को जैसा चाहिए वैसा कराना, वैद्यक विद्या से औषधवत् अन्न पान बना और बनवाना आदि नहीं कर सकती। जिससे घर में रोग कभी न आवे और सब लोग सदा आनन्दित रहें, शिल्प विद्या के जाने बिना घर का बनवाना, वस्त्र आभूषण आदि का बनाना-बनवाना, गणित विद्या के बिना सब का हिसाब समझना-समझाना, वेदादि शास्त्र विद्या के बिना ईश्वर

और धर्म को न जान के, अधर्म से वह कभी नहीं बच सकती।"

स्वामी दयानन्द सरस्वती जिस प्रकार से बालक-बालिकाओं के लिए शिक्षा में सामान्य उद्देश्य भिन्न नहीं मानते उसी प्रकार विभिन्न वर्णों की सन्तानों कर्मानुसार के लिए भी शिक्षा के भिन्न उद्देश्य नहीं मानते हैं जो उचित भी हैं।

स्वामीजी के अनुसार शिक्षणालय में शिक्षा प्रारंभ करने के सम्बन्ध में मनु-स्मृति का श्लोक दृष्टव्य है-

ब्रह्मवर्चसकामस्य कार्यं विप्रस्य पञ्चमे।
राज्ञो बलार्थिनः षष्ठे वैश्यस्येष्टेऽष्टमे।।

ब्रह्मवर्चस की कामना करने वाले बालकों का पांचवें वर्ष में, बल की कामना करने वाले बालकों का छठे वर्ष में तथा अर्थ की कामना करने वाले बालकों का आठवें वर्ष में उपनयन यज्ञोपवीत करके विद्याध्ययन आरम्भ करा देना चाहिए। आधुनिक समय में शिक्षा शास्त्री भी विद्यालय में शिक्षारम्भ की उम्र यही मानते हैं।

दयानन्द सरस्वती विद्याध्ययन के विघ्नों की ओर इंगित करते हुए, इन्हें छोड़ने की भी सीख देते हैं-"जैसे कुसंगः अर्थात दुष्ट विषयीजनों का संग, दुष्ट व्यसन जैसा मद्यादि सेवन और वेश्यागमनादि, बाल्यावस्था में विवाह अर्थात पच्चीस वर्षों से पूर्व पुरुष और सोलहवें वर्ष से पूर्व स्त्री का विवाह हो जाना, पूर्ण ब्रह्मचर्य का न होना, राजा, माता-पिता और विद्वानों का प्रेम वेदादि शास्त्रों के प्रचार में न होना, अतिभोजन, अतिजागरण करना, पढ़ने-पढ़ाने परीक्षा लेने व देने में आलस्य व कपट करना...लोभ से धनादि में प्रवृत्त होकर विद्या में प्रीत न रखकर, इधर-उधर व्यर्थ घूमते रहना इत्यादि मिथ्या व्यवहारों में फंस के ब्रह्मचर्य और विद्या के लाभ से रहित होकर लोग रोगी और मूर्ख बने रहते हैं।"

शिक्षणालय के सम्बन्ध में विभिन्न पहलुओं का चिन्तन कर स्वामी दयानन्द ने अपने स्पष्ट विचार प्रकट किये हैं, "पाठशालाओं से एक योजन अर्थात् चार कोश 13 किमी. दूर ग्राम वा नगर रहें। ...विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त देश स्थान में होना चाहिए। लड़के और लड़कियों की पाठशाला दो कोश एक दूसरे से दूर होनी चाहिए।"

शिक्षक, शिक्षिकाओं के विषय में स्वामीजी ने लिखा है-जो वहाँ अध्यापिका और अध्यापक पुरुष भृत्य अनुचर हों। कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहें। ....जब तक वे ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणी रहें तब तक स्त्री पुरुष का दर्शन, स्पर्शन, एकान्त-सेवन, भाषण विषय-कथा परस्पर क्रीड़ा, विषय का ध्यान और संग इन आठ प्रकार के मैथुनों से अलग रहें और अध्यापक लोग उनको इन बातों से बचावें, जिससे उत्तम विद्या, शिक्षा शील, स्वभाव, शरीर और आत्मा बलयुक्त होके आनन्द को नित्य बढ़ा सके। जो अध्यापक पुरुष वा स्त्री दुष्टाचारी हो उनसे शिक्षा न दिलावें; किन्तु जो पूर्ण विद्या युक्त धार्मिक हों वे ही पढ़ाने और शिक्षा देने योग्य हैं।" स्वामी दयानन्द ने समानता को स्वीकारते हुए निर्देश दिया कि "सबको तुल्य वस्त्र खान-पान, आसन दिये जाएं, चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र सन्तान हो, सब को तपस्वी होना चाहिए।" वस्तुतः समानता व सादगीपूर्ण जीवन ही वर्तमान लोकतन्त्र हेतु अपेक्षित भी है।

शिक्षणालयों में पालनीय नियमों के अन्तर्गत स्वामी दयानन्द ने जिस बात पर विशेष बल दिया है, वह है-ब्रह्मचर्य पालन। वर्तमान सन्दर्भ में इसके महत्व को स्वीकारना होगा। इसका पालन बाहर से कठोर अवश्य प्रतीत होता है, किन्तु इतना निश्चित है कि यदि आचरण में इसका ध्यान रखा जाय तो ऐसी शिक्षा पद्धति से दृढ़ एवं तेजस्वी शिक्षार्थी तैयार किये जा सकेंगे जो दृढ़ राष्ट्र के आधार होंगे एवं देश के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध हो सकेंगे। स्वामीजी अनिवार्य एवं सार्वभौम शिक्षा का समर्थन करते हैं।

वर्तमान में ब्रह्मचर्य, सादगी एवं समानता का अभाव सा लगता है। इसके कारण नयी पीढ़ी शील, पराक्रम एवं तेजस्विता के साथ सांस्कृतिक मूल्यों से विलग होती जा रही है, जिससे अनुशासनहीनता, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, व्यभिचार जैसे घातक रोग भारतीय समाज में व्याप्त होते जा रहे हैं। दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित शिक्षा तत्वों को आज की शिक्षा में आवश्यकतानुसार समविष्ट किया जाय अथवा आधुनिक शिक्षा तत्वों के साथ वैकल्पिक रूप में रखकर प्रयोग किया जा सकता है। इससे दोनों प्रणालियों में लोक-कल्याणकारी प्रणाली अथवा वर्तमान सन्दर्भ में उपयोगी तत्वों की प्रतीति हो सकेगी।

-3/20, गुलाबेश्वर मार्ग, उदयपुर
मो. 9461547460

शिविरा शान है...

□ मिट्ठू लाल रेवारी

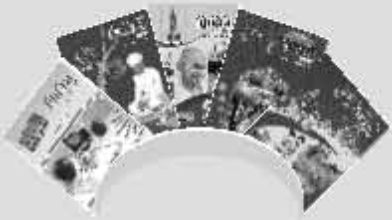

शिविरा शान है शिक्षा की,
यह ज्योति है शिक्षा की,
विचार इनमें भरे हैं उत्तम,
इनके रचनाकार हैं नरोत्तम।

शिविरा का शब्द-शिल्प
नादेव ही भाता,
सहज ही सुहृद शिक्षक
इनमें जुड़ जाता,
पढ़े इसे शिक्षक
उत्तम को प्रवृत्त हो जाता,
मुक्तजन अनुभव से
नीवड़ देते हैं इनमें,

शिक्षक का दर्शन,
सुदर्शन हो जाता,
वीणा की वीणा इनमें बजती,
आशाओं का दल इनमें सजता,
शिविरा कविता की कल कल बहती,

दीपक बन शिविरा तम हरती,
लेख इनके जलाते ज्ञान की बाती,
मंगा सम्पादन शिविरा
सिद्धि है ज्ञान की,
शव को शिव बनाने
शिविरा शंखनाद करती।

-प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि., निकुम्भ, चित्तौड़गढ़

बैडेन पावेल जयन्ती : 22 फरवरी

स्काउट व गाइड के संस्थापक लार्ड बैडेन पावेल

❑ डॉ. राजेन्द्र श्रीमाली

स्काउट व गाइड आन्दोलन के संस्थापक लार्ड बैडेन पावेल का जन्म 22 फरवरी 1957 को इंग्लैण्ड में हुआ। इनके पिता रेवरेंड बैडेन पावेल प्रोफेसर थे। लार्ड बैडेन पावेल जब 3 वर्ष के थे तब उनके पिता की मृत्यु हो गयी। इनका भरण-पोषण इनकी माता ने किया। माता ने विशेष रुचि लेकर इन्हें पढ़ाया। बैडेन पावेल ने 1869 में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए लंदन के चार्टर हाउस स्कूल में प्रवेश लिया। विद्यार्थी जीवन में ही इन्हें शिल्पकला एवं चित्रकला का विशेष शौक था। स्काउटिंग के कई लक्षण इनके विद्यार्थी जीवन में ही दिखाई देने लगे। इन्होंने लिखा है कि मुझे जंगल के खेल, झाड़ियों में से पेट के बल पर रेंगकर निकलना, जंगली पशुओं के पद चिन्ह पहचानना अच्छा लगता था।

स्कूली शिक्षा समाप्त कर बैडेन पावेल ने सेना की एक परीक्षा दी और उसमें अव्वल रहे, इस कारण उन्हें सब लेफ्टिनेंट बनाकर भारत में 13वीं हॉर्स रेजिमेंट में लखनऊ भेज दिया गया। यहां अपने साहसिक कार्यों से ये पहचाने जाने लगे। बैडेन पावेल ने भारत में हुए संस्मरणों का रोचक वर्णन अपनी पुस्तक 'इंडियन मेमोरीज' में किया है। बैडेन पावेल को ए.डी.सी. बनाकर जनरल सर हेनरी स्मिथ इन्हें केपटाउन, द.अफ्रीका ले गए। वहां उन्होंने कई साहसिक कार्य किये। जुलू जाति के सरदार डिनिजुलू के विरुद्ध युद्ध किया। उसे परास्त कर उसके गले से सुन्दर चन्दन से बने मोतियों का हार छीन लिया। स्काउटिंग का उच्च प्रशिक्षण "हिमालय बैज" प्राप्त करने वाले व्यक्ति को काले धागे में दाने (बीड्स) प्रदान करने की परम्परा है।

सन् 1893 में बैडेल पावेल मेजर बनने के बाद आयरलैण्ड में अपनी रेजिमेंट में लौट आए। वहां एक दिन अचानक उनका ध्यान अपने मित्र के पास रखे सुन्दर झंडे पर पड़ा जिस पर माप के चिह्न अंकित थे। इसी बात को ध्यान में रखते हुए स्काउटिंग में झंडे की आवश्यकता को अनिवार्यता प्रदान की गई।

स्काउटिंग में बाएं हाथ को मिलाने की परम्परा के पीछे सन् 1895 की एक रोचक घटना है, बैडेन पावेल एक बार अशान्ति कैम्पेन पर पश्चिमी अफ्रीका भेजे गए। इनके साथ 860 हब्शी फौजियों की सहायता में उन्होंने सड़कों का निर्माण, संदेश भेजने जैसे अनेक साहसिक कार्य सम्पन्न किए। वहां के सरदार ने बैडेन पावेल के पूछने पर बताया कि बायां हाथ मिलाना वहां वीरता का प्रतीक है। बस यहीं से बायां हाथ मिलाने की परम्परा का प्रारम्भ हुआ।

सन् 1896 में बैडेन पावेल चीफ ऑफ स्टॉफ होकर माता बीलाड गए। यहां इन्होंने अपने मित्र अमरीका के मेजर फौजी फ्रेड्र बर्नहम के साथ मिलकर नाइट स्काउटिंग के कई बड़े कार्य किए। इन कार्यों को देखते हुए इन्हें कर्नल बना दिया गया। सन् 1897 में ड्रेगन गार्ड्स नामक फौज की टुकड़ी के कमाण्डर बनाकर इन्हें भारत भेजा। भारत से 1899 में इंग्लैंड गए। यहां इन्होंने एक पुस्तक लिखी जिसका नाम था 'एड्स टू स्काउटिंग'। यह पुस्तक फौजी स्काउटों के प्रशिक्षण पर लिखी गयी थी। कुछ समय इन्हें 'द साउथ अफ्रीकन' कान्स्टेबुलरी का दायित्व सौंपा। इसके जवान हेट पहनते थे तथा इस कान्स्टबुलेरी के जवानों का मोटो था 'बी प्रिपेयर्ड' अर्थात् तैयार हो।

आज भी स्काउटिंग का यही मोटो है। इन्हीं दिनों दक्षिणी अफ्रीका और अंग्रेजों का युद्ध हुआ। इस युद्ध में बैडेन पावेल को सेना के 700 सैनिकों की टुकड़ी के साथ भेजा गया। दुश्मनों की संख्या 9 हजार के लगभग थी, अतः स्थिति बड़ी भयंकर बनी हुई थी। बैडेन पावेल ने एक नई योजना बनाई जिसके अनुसार वहां मेफकिंग के 300 चुस्त व साहसी नवयुवकों को एकत्रित करके विभिन्न प्रशिक्षण देकर उनके सहयोग से सात माह तक शत्रुओं का डटकर मुकाबला किया और युद्ध में विजय प्राप्त की।

लार्ड बैडेन पावेल इन नवयुवकों और उनके कार्य से अत्यधिक प्रभावित हुए। उनके मस्तिष्क में यह बात आयी कि जब युद्ध काल में ये इतना अच्छा कार्य कर सकते हैं तो शांतिकाल में तो और भी अच्छा कार्य कर सकेंगे। अतः इनके लिए इस प्रकार की कोई संस्था अवश्य होनी चाहिए जो विभिन्न उपयोगी प्रशिक्षण देती रहे ताकि उनके अन्दर निहित शक्तियों का विकास हो सके।

बैडेन पावेल के जीवन पर इनकी माता के संस्कारों का बहुत प्रभाव पड़ा। भारत एवं अफ्रीका प्रवास तथा विभिन्न प्रयोगों, अनुभवों आदि के कारण बैडेन पावेल का मस्तिष्क वैचारिक दृष्टिकोण से परिपक्व हो गया। इन्होंने फौजी स्काउटिंग को नये सिरे से ढालकर प्रयोगात्मक आधार पर तैयार कर बालोपयोगी बनाने की एक योजना बनाई। इस योजना की शिक्षाविदों ने सराहना की। इसी प्रयोग के सफल क्रियान्वयन हेतु इंग्लिश चैनल में ब्राउन सी द्वीप पर 25 जुलाई, 1907 को स्काउट बालकों के रूप में 20 छात्रों को लेकर 15 दिन का एक प्रयोगात्मक शिविर किया।

इस स्काउट शिविर में जादुई आकर्षण था समाज के सभी वर्गों से 20 लड़के थे। इनमें अमीर, गरीब या कोई जातीय भेद नहीं था। सब साथ-साथ खेलते, रात को कैम्प फायर करते, नये-नये अनुभव प्राप्त करते इन सबके बीच लड़कियों के अलाव के पास बैठकर बैडेन पावेल साहसिक एवं रोचक कहानियां सुनाते हुए बातों-बातों में सबके मित्र बन जाते।

इस शिविर की सफलता को देखते हुए सन 1907 के अन्त तक बैडेन पावेल ने 'स्काउटिंग फॉर बॉयज' नामक पुस्तक लिखी। पुस्तक के प्रकाशित होते ही इंग्लैण्ड के मौहल्ले-मौहल्ले में स्काउटिंग प्रारम्भ हो गई। तब तक बैडेन पावेल ने फौज से अवकाश प्राप्त कर लिया था।

मिस्टर विलियम जे.डी. बॉयस नामक एक अमरीकी सज्जन घने कुहरे के अंधकार के कारण लंदन में अपना मार्ग भूल गए, उन्हें मार्ग में एक चुस्त बालक मिला। बालक ने उन्हें सही मार्ग बताया। उन सज्जन ने उस बालक को आधा पौंड देना चाहा। मगर उसने न लेते हुए

कहा– 'महोदय मैं वर्दी में तो नहीं हूं लेकिन मैं स्काउट हूं, इनाम कैसे लूं।' विलियम डी.डी. बॉयस को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने इंग्लैण्ड में स्काउटिंग की सारी जानकारी ली। अमरीका में जाकर सन् 1909 में स्काउटिंग को प्रारम्भ किया।

सितम्बर 1909 में क्रिस्टल पैलेस लंदन में स्काउटों की प्रथम रैली हुई। रैली में स्काउट मार्च करते हुए बैडेन पावेल को सलामी देते हुए निकल रहे थे, अंत में लड़कियों का एक दल भी मार्च करता हुआ निकला तो पावेल ने पूछा, 'तुम कौन हो' उन्होंने उत्तर दिया हम गर्ल स्काउट हैं। वे 600 लड़कियाँ थीं। फलस्वरूप लड़कियों के लिए गर्ल गाइडिंग प्रारंभ की गयी और बैडेन पावेल ने अपनी बहन मिस एगनेस को यह कार्य सौंपा।

बैडेन पावेल ने अनेक अनुभव प्राप्त करने के पश्चात् मिस ओलेव सेंट क्लेयर साम्स से सन् 1912 में विवाह किया। संयोग से इनका जन्म भी 22 फरवरी को हुआ था। श्रीमती बैडेन पावेल ने गाइडिंग के क्षेत्र में काफी योगदान दिया और 1918 में ब्रिटिश साम्राज्य की चीफ गाइड चुनी गईं व 1931 में रूडयार्ड किपलिंग की कहानियों से प्रेरणा लेकर छोटे बच्चों के लिए कबिंग और सन् 1919 में युवकों के लिए रोवरिंग प्रारंभ की। सन् 1919 में ही लंदन में गिलविक पार्क के मालिक ने बॉय स्काउट एसोसिएशन को भेंट किया जो लीडर्स का प्रमुख प्रशिक्षण केन्द्र बना। 1931 में श्रीमती बैडेन पोवल 'वर्ल्ड चीफ गाइड' चुनी गईं।

भारत में भी अंग्रेजों एवं एंग्लो इंडियन अधिकारियों के बालकों के लिए स्काउटिंग 1909 में प्रारंभ हो गयी थी, किन्तु भारतीय बच्चे इसमें सन् 1916 में सम्मिलित हुए। श्री राम वाजपेयी व अरुण्डले ने शाहजहांपुर व बनारस में दो स्काउट दल प्रारंभ किए। सन् 1918 में पं. मदन मोहन मालवीय एवं डॉ. हृदयनाथ कुंजरू के साथ वाजपेयी ने सेवा समिति की स्थापना की जो 1922 तक बैडेन पावेल के साथ न होकर अपनी राष्ट्रीय भावनाओं के आधार पर अलग से थी। सभी देशी रियासतों में भी स्काउटिंग प्रारंभ हो गयी थी। भारत में स्वतन्त्रता के बाद सन् 1950 में यहां की सभी स्काउट संस्थाओं को मिलाकर 'भारत स्काउट व गाइड' नाम से संगठन बनाया गया।

बैडेन पावेल का 7 जनवरी 1941 को निधन हो गया। देहावसान से पूर्व लार्ड बैडेन पावेल ने कीनिया से संसार भर के स्काउटों के नाम अपना अंतिम संदेश दिया– 'प्रिय स्काउटों। यदि तुमने कभी पीटक मैन नामक नाटक देखा हो तो याद होगा कि समुद्री डाकुओं का सरदार अपने बारे में प्रतिदिन मृत्यु का वक्तव्य दिया करता था, उसे भय था कि अंतिम समय अपनी बात कहने का अवसर मिले या न मिले यद्यपि मैं अभी मर नहीं रहा, किन्तु निकट भविष्य में मरूँगा। अतः तुम्हें विदाई का अंतिम संदेश देना चाहता हूं कि जीवन मेरा आनन्दपूर्वक बीता है, तुम्हारा भी जीवन आनन्द पूर्वक बीते। अपनी स्काउट प्रतिज्ञा पर डटे रहो, ईश्वर तुम्हारी सहायता करे।

–बस्सूसर गेट के बाहर,
करणी माता मंदिर के पीछे, बीकानेर
मो. 9414742973

जज्बे को सलाम

जश्न-ए-जोश : डॉक्टर बने एरिक

□ महेन्द्र सिंह मान

जज्बे को सलाम के अन्तर्गत इस माह का सलाम सात समन्दर पार के एरिक वूफ्रे को है जिन्होंने पी.एचडी करने डॉक्टर कहलाने का सौभाग्य प्राप्त किया है। अब आप उनकी आयु का अन्दाज लगा लीजिए।... चलो बता ही देते हैं एरिक की उम्र। वे बस और बस न..न..नब्बे साल के जोशीले विद्यार्थी हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार जीवन में नब्बे बसंत देख चुके एक बुजुर्ग ने लैंकिस्टर विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की डिग्री हासिल की है। दूसरे विश्व युद्ध में हिस्सा ले चुके सेवानिवृत्त शिक्षक एरिक वूफ ने स्कूल छोड़ने के 74 साल बाद पी.एचडी. की।

लंदन के एक मजदूर के बेटे डॉ. वूफ ने सोलह साल की उम्र में नौकरी करने के लिए स्कूल छोड़ दिया था, लेकिन बाद में उन्होंने गणित के शिक्षक के रूप में नौकरी की और सेवानिवृत्त होने के बाद पढ़ाई पूरी करने लौट आए। डॉ. वूफ ने कहा, डॉक्टरेट होना मेरे जीवन का सबसे सम्मानजनक अनुभव है, स्कूल के दिनों में मैं विश्वविद्यालय के बारे में नहीं सोचता था। स्कूल के दिनों में उन्हें

स्कॉलरशिप मिली थी, लेकिन युद्ध शुरू होने के कारण उन्हें 16 साल की उम्र में ही पढ़ाई छोड़ के जाना पड़ा और उनकी विश्वविद्यालय की पढ़ाई अधूरी रह गई। मेरे पिता का मानना था कि मुझे काम करके घर के बजट में योगदान देना चाहिए। आक्रमण शुरू होने से पहले मैं वापस लंदन आ गया और शहर के पश्चिमी भाग के एक ऑफिस में नौकरी करने लगा।

इसके बाद उन्होंने कॉलेज में प्रशिक्षण लिया। क्यूमबरिया के एलबाई स्कूल में गणित शिक्षक के रूप में नौकरी शुरू कर दी। वे पढ़ाने के काम से 20 साल तक जुड़े रहे। उनका कहना है, पढ़ाने में मुझे बहुत मजा आता है और इसमें मुझे आत्मसंतुष्टि मिलती है। डॉ. वूफ ने वर्ष 2003 में ईस्ट एंजेलिया विश्वविद्यालय से एमए की डिग्री हासिल की। जब उन्होंने साल 2008 में क्यूमबरिया विश्वविद्यालय में फिर से अपनी पढ़ाई शुरू की तो वहां के काम करने वालों ने लैंसेस्टर विश्वविद्यालय से पीएचडी करने के लिए प्रोत्साहित किया। वूफ बताते हैं, विश्वविद्यालय का माहौल बहुत उत्साहवर्द्धक और प्रेरणादायी था। दूसरे छात्र और कर्मचारी काफी मददगार थे। उनकी बीवी की मौत हो चुकी है। उनका कहना है 'मैं बहुत भाग्यशाली हूं कि इस उम्र में भी स्वस्थ हूं और इतने सारे लोग मुझे प्यार करते हैं।

(लेखक राज्यस्तरीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त हैं।)

–शा.शि. (से.नि.), हनुमानगढ़ जंक्शन
मो. 9414094464

आदेश-परिपत्र : फरवरी, 2014

1. सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (CCRT) के प्रशिक्षणों में भाग लेंवे शिक्षक।
2. माध्यमिक शिक्षा विभाग के मण्डल कार्यालयों के अधीन जिलों का पुनर्निर्धारण।
3. कठिन विषयों के निवारण एवं गुणवत्ता हेतु अतिरिक्त कक्षाओं का संचालन।
4. माध्यमिक शिक्षा में विद्यालयों का सघन निरीक्षण।
5. राष्ट्रीय विद्यालयी खेलों के अन्तर्गत S.G.F.I. की अधिकृत/मान्यता प्राप्त इकाइयों में से राजस्थान राज्य में संचालित पॉच इकाइयों के संबद्ध विद्यालयों के खेलकूद प्रतियोगिताओं में संभागित्व के प्रतिबंध के क्रम में।
6. माध्य.शिक्षा बोर्ड राज., अजमेर की परीक्षाओं का बोर्ड द्वारा प्रसारित निर्देशों के अनुसार संचालन करने के संबंध में।

1. सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (CCRT) के प्रशिक्षणों में भाग लेंवे शिक्षक

● कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● परिपत्र ● सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, (सीसीआरटी) नई दिल्ली शिक्षा एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जाग्रति लाने वाला एक महत्वपूर्ण केन्द्रीय संस्थान है जिसके तत्वावधान में सेवारत शिक्षकों के लिए शिक्षा और संस्कृति से सम्बन्धित प्रशिक्षण एवं आमुखीकरण शिविर समय-समय पर देश के विभिन्न भागों में लगाए जाते रहते हैं। इन शिविरों के प्रभावी व सफल आयोजन के लिए निम्न निर्देश प्रसारित किए जाते हैं-

1 सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले प्रशिक्षण शिविरों का विस्तृत कलेण्डर जारी किया जाता है। इसे जिला व मण्डल कार्यालयों में अवश्य संधारित किया जाए। वर्ष 2013-14 का कलेण्डर शिविरा पत्रिका के मई-जून 2013 अंक (पृष्ठ 28-31) में भी प्रकशित किया गया है तथा यह वेबसाइट **www.ccrtindia.gov.in** पर भी उपलब्ध है।

2 प्रत्येक प्रस्तावित प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए उपयुक्त योग्यताधारी एवं रुचिशील शिक्षकों का विवरण कार्यालय के शैक्षिक प्रकोष्ठ में रखा जाए ताकि जिशिअि द्वारा समय पर उन्हें नामित किया जा सके।

3 प्रशिक्षण हेतु नामित करते समय सम्बन्धित शिक्षकों की आयु, विषय, पद, उनके पदस्थापन विद्यालय के स्तर जैसी आवश्यक समस्त शर्तोकी पूर्णत: पालना की जाए। यदि अपात्र शिक्षकों को नामित किया जाता है तो यह सम्बन्धित अधिकारी की व्यक्तिगत जिम्मेदारी होगी।

4 प्रशिक्षण हेतु नामित किए जाने पर सम्बन्धित शिक्षकों को आवश्यक रूप से कार्यमुक्त किया जाए। कार्यमुक्त नहीं किए जाने पर सम्बन्धित संस्था प्रधान तथा प्रशिक्षण में नहीं जाने पर सम्बन्धित शिक्षकों के विरुद्ध आवश्यक कार्यवाही की जाकर सूचित किया जाए। नामित करने में शिथिलता कदापि न बरतें।

5 सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली से सम्बन्धित समस्त कार्योएवं प्रशिक्षणों का रिकार्ड तथा शिक्षकों का प्रोफाइल शैक्षिक प्रकोष्ठ में रखा जाए ताकि सूचनाएं चाहे जाने पर अविलम्ब प्रस्तुत की जा सके। निरीक्षण के समय इसका अवलोकन अधिकारी को करवाया जाए।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, के प्रशिक्षण/आमुखीकरण शिविरों का प्रभावी एवं सफल आयोजन सुनिश्चित करने के लिए उपर्युक्त निर्देशों की कड़ाई से पालना की जावे।

(वी. सरवन कुमार) ● निदेशक ● प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर ● क्रमांक: शिविरा/माध्य/प्रकाशन/सीसीआरटी/2013-14 दिनांक : 2 जनवरी 2014

2. माध्यमिक शिक्षा विभाग के मण्डल कार्यालयों के अधीन जिलों का पुनर्निर्धारण-

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● आदेश ● निर्देशानुसार लेख है कि राज्य सरकार की स्वीकृति क्रमांक: प.22(1)शिक्षा-I/2013-14 दिनांक 2.6.2013 के द्वारा शिक्षा विभाग के अन्तर्गत मण्डल कार्यालयों के पुर्नगठन एवं नवसृजित मण्डल की स्वीकृति तथा समसंख्यक पत्र दिनांक 19.8.2013 के अनुसार नवसृजित उपनिदेशक कार्यालय बीकानेर एवं पाली हेतु बजट मद 2202-02/001/(01)-निदेशालय (आयोजना मद) में प्रत्येक कार्यालय हेतु 21-नवसृजित पदों की स्वीकृति के क्रम में निदेशालय द्वारा जारी किए जा चुके हैं तथा इस कार्यालय के आदेश क्रमांक-शिविरा/माध्य/साप्र/बी-2/4371/वो-2/बीकानेर-पाली/13 दिनांक 1.10.2013 के द्वारा बीकानेर एवं पाली में उपनिदेशक (माध्यमिक) का पदस्थापन किया जा चुका है जिस पर संबंधित अधिकारियों ने कार्यभार ग्रहण कर लिया है इस प्रकार माध्यमिक शिक्षा विभाग में कुल 09 उप निदेशक कार्यालयों के स्थान एवं संबंधित जिले निम्नानुसार दिनांक 2.6.2013 से ही प्रभावी हो गए हैं-

क्रं.	मण्डल का नाम	मण्डल के अधीन जिलों के नाम	विशेष विवरण
1.	बीकानेर	बीकानेर, हनुमानगढ, श्रीगंगानगर	नवीन मण्डल
2.	पाली	पाली, सिरोही, जालौर	नवीन मण्डल
3.	जयपुर	जयपुर, अलवर, दौसा	सीकर, चूरू मण्डल में सम्मिलित
4.	जोधपुर	जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर	जालौर, पाली, सिरोही पाली मण्डल में सम्मिलित
5.	चूरू	चूरू, झुझुनू, सीकर	बीकानेर, हनुमानगढ, श्री गंगानगर बीकानेर मण्डल में सम्मिलित
6.	भरतपुर	भरतपुर, धौलपुर, सवाईमाधोपुर, करौली	-
7.	कोटा	कोटा, बारां, बूंदी, झालावाड़	-
8.	उदयपुर	उदयपुर, बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ, प्रतापगढ, डूंगरपुर, राजसमन्द	-
9.	अजमेर	अजमेर, भीलवाड़ा, नागौर, टोंक	-

जयपुर मण्डल से सीकर जिला चूरू मण्डल में, जोधपुर मण्डल से पाली, सिरोही एवं जालौर जिले पाली मण्डल में, चूरू मण्डल से बीकानेर, हनुमानगढ एवं श्रीगंगानगर जिले बीकानेर मण्डल में पुनर्गठन के अनुसार दिए जा चुके हैं । अत: सम्बंधित उपनिदेशक नवसृजित मण्डल अधिकारी को संबंधित समस्त अभिलेख/रिकार्ड तत्काल विधिवत रूप से स्थानान्तरित कर अनुपालना इस कार्यालय को प्रेषित की जावे।

निदेशक ● माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/साप्र/बी-2/3471/वो-2/13 दिनांक 10.1.2014

3. कठिन विषयों के निवारण एवं गुणवत्ता हेतु अतिरिक्त कक्षाओं का संचालन

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्र मांक:शिविरा/माध्य/निप्र/डी-2/21760/सघननिरीक्षण/2012/85 दिनांक: 30.12.13 ● समस्त उप निदेशक ● माध्यमिक शिक्षा ● विषय : कठिन विषयों के निवारण एवं गुणवत्ता हेतु अतिरिक्त कक्षाओं का संचालन। ●प्रसंग : मु.मं. 60 दिवसीय कार्य योजना

विषयान्तर्गत प्रासंगिक अभियान में विद्यालयों में आवश्यक्तानुरूप अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन एवं प्रगति का निरीक्षण दिनांक 01.01.2014 से ही किया जाना है। अत: आप अपने अधिनस्थ विद्यालयों एवं कार्यालयों में निम्न कार्यो को सुनिश्चित करेंगे:-

1. संस्था प्रधान प्रति दिवस प्रत्येक कक्षा में हो रहे शिक्षण कार्य का उसके पीछे बैठकर अवलोकन करेंगें एवं संबंधित विषय अध्यापक को आवश्यक दिशा निर्देश देंगे। अवलोकन के दौरान संस्था प्रधान प्रतिदिन समस्त कक्षाओं एवं विषयों के कम से कम 10 गृहकार्य उत्तर पुस्तिकाओं का अवलोकन कर त्रुटियों को लाल स्याही के गोले से चिन्हित करेंगे एवं प्रतिदिवस जांची गयी उत्तर पुस्तिकाओं का विवरण विद्यार्थीवार प्रपत्र में स्पष्ट रूप से अंकित करेंगे, जिसमें जांची गई कक्षा, विषय, पाठ एवं उसमें संबंधित विद्यार्थी की त्रुटि/कठिनाई का विवरण अंकित करेंगे। आगामी सप्ताह में अवलोकन के समय उसी विद्यार्थी को फॉलोअप करके यह सुनिश्चित करेंगे कि उक्त विद्यार्थी गत सप्ताह में पाई गई त्रुटि/कठिनाई से उबर पाया है अथवा नहीं ? संस्था प्रधान विद्यार्थी वार तैयार किये गये प्रपत्रों को संकलित रखेंगें एवं निदेशालय के अधिकारियों, उप निदेशक एवं जिला शिक्षा अधिकारी को निरीक्षण के समय अवलोकित करायेंगे। उक्त प्रपत्रों के आधार पर संख्यात्मक रिपोर्ट प्रति दिवस जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में संकलित की जायेगी एवं संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा संकलित रिपोर्ट उप निदेशक को भेजी जायेगी। उप निदेशक प्रति दिवस अपने मण्डल के आधे जिलों की रिपोर्ट प्रथम दिवस एवं शेष जिलों की आगामी दिवस एवं इसी क्रम में निदेशालय को भिजवाऐंगे। निदेशालय स्तर पर इनका संकलन माध्यमिक अनुभाग द्वारा किया जाकर प्रति दिवस अद्योहस्ताक्षरकर्ता को प्रस्तुत करेंगे।
2. प्रत्येक विषयाध्यापक अपने विषय के कक्षावार कमजोर विद्यार्थियों की सूची संस्था प्रधान को देंगें तथा संस्था प्रधान ऐसे विद्यार्थियों हेतु अतिरिक्त कक्षाओं का संचालन सुनिश्चित करेंगे। संस्था प्रधान उक्त अतिरिक्त कक्षाओं का प्रतिदिन अवलोकन कर प्रगति से संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी एवं उप निदेशक को प्रेषित करेंगें। इन विषयों में अंग्रेजी, गणित एवं विज्ञान को अनिवार्य रूप से सम्मिलित करना है।
3. जिला शिक्षा अधिकारी एवं उनके कार्यालय में कार्यरत अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी प्रति सप्ताह 20 विद्यालयों का एवं उप निदेशक 15 विद्यालयों का जिनमें अधीनस्थ प्रत्येक जिले के न्यूनतम 03 विद्यालयों का अवलोकन करेंगे। इन अधिकारियों द्वारा किये गये निरीक्षण का आगामी सप्ताहों में रेण्डम निरीक्षण ही किये जाये एवं पूर्व में किये गये निरीक्षण के अनुरूप प्रगति की रिपोर्ट निदेशालय को भेजेंगे।
4. संस्था प्रधान उनके यहां कार्यरत अध्यापकों के विषयवार कठिनाई एवं आमुखीकरण हेतु नाम, जिला शिक्षा अधिकारी को प्रेषित करेंगे, जिन्हें उप निदेशक कार्यालय द्वारा संकलित कर निदेशालय को भेजे जायेंगे, जिनके आधार पर उनके आमुखीकरण कार्यक्रम प्रारम्भ किये जायेंगे।
5. संस्था प्रधान निदेशालय के अधिकारियों, उप निदेशक, जिला शिक्षा अधिकारी आदि के निरीक्षण उपरान्त दिये गये निर्देशों अनुरूप उपचारात्मक शिक्षण कक्षाऐं प्रारम्भ करेंगें।

उक्त निर्देशों की पालना अनिवार्यत: सुनिश्चित की जाये।

संलग्न:- प्रपत्र(1 से 3)

निदेशक
माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान
बीकानेर

प्रपत्र-1

संस्था प्रधान द्वारा संधारित प्रति दिवस कक्षा निरीक्षण का प्रपत्र

1. संस्था का नाम.....
2. संस्था प्रधान का नाम.....
3. निरीक्षण दिनांक.....
4. देखी गई कक्षा का विवरण.....

कक्षा	विषय	पाठ का नाम	पाठ में कठिनाई के प्रमुख बिन्दू	कठिनाई वाले विद्यार्थियों के नाम

5. देखी गई गृह कार्य उत्तर पुस्तिकाओं का विषयवार विवरण .....

कक्षा	विषय	विद्यार्थी का नाम, जिसकी उत्तर पुस्तिका जांची गई	संस्था प्रधान द्वारा चिन्हिकृत त्रुटियों का विवरण	संबंधित अध्यापक को दिये गये निर्देश

6. फॉलोअप निरीक्षण की दिनांक.....

कक्षा	विषय	विद्यार्थी का नाम	पूर्व में संस्था प्रधान द्वारा चिन्हिकृत त्रुटियों का विवरण	फॉलोअप निरीक्षण में त्रुटि निवारण कर स्थिति

7. विशेष विवरण .....

हस्ताक्षर संस्था प्रधान

प्रपत्र-2

संस्था प्रधान द्वारा जिला शिक्षा अधिकारी को दैनिक प्रेषित सूचना का प्रपत्र

1. संस्था प्रधान द्वारा दिनांक..... को अवलोकित कक्षाएं .....

कक्षा	विषय	विद्यार्थियों की संख्या	संस्था प्रधान द्वारा चिन्हिकृत त्रुटियां करने वाले विद्यार्थियों की संख्या	त्रुटि निवारण हेतु प्रारम्भ अतिरिक्त कक्षाओं का विवरण

2. संस्था प्रधान द्वारा दिनांक ..... को देखी गई गृह कार्य उत्तर पुस्तिकाएं

कक्षा	विषय	विद्यार्थियों की संख्या	संस्था प्रधान द्वारा चिन्हिकृत त्रुटियां करने वाले विद्यार्थियों की संख्या	त्रुटि निवारण हेतु प्रारम्भ अतिरिक्त कक्षाओं का विवरण

हस्ताक्षर संस्था प्रधान

प्रपत्र–3

जिला शिक्षा अधिकारी/उप निदेशक द्वारा निदेशालय को प्रति दिवस प्रेषित की जाने वाली सूचना हेतु प्रपत्र

1. जिले का नाम ..... दिनांक.....
2. जिले में संचालित रा.मा.वि. की कुल संख्या (छात्र/छात्रा पृथक-पृथक).....
3. जिले में संचालित रा.उ.मा.वि. की कुल संख्या (छात्र/छात्रा पृथक-पृथक).....
4. जिले में दिनांक..... को देखे गये विद्यालयों की संख्या.....

निरीक्षण कर्ता	निरीक्षण किए गये विद्यालयों की संख्या	कक्षाओं की संख्या	कालांशों की संख्या	विद्यार्थियों की संख्या	उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या जिनका अवलोकन किया गया	अतिरिक्त कक्षाओं से लाभान्वित विद्यार्थियों की संख्यां
संस्था प्रधान	—					
नोडल विद्यालय का संस्था प्रधान						
जिशिअ/अजिशिअ						
उप निदेशक						
निदेशालय अधिकारी						

5. फॉलोअप निरीक्षण का विवरण.....

निरीक्षण कर्ता	निरीक्षण किए गये विद्यालयों की संख्य	पुनः अवलोकित कक्षाओं की संख्या	कालांशों की संख्या	पुनः अवलोकित विद्यार्थियों की संख्या	पुनः अवलोकित उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या जिनका अवलोकन किया गया	कठिनाई निवारण से लाभान्वित विद्यार्थियों की संख्या
संस्था प्रधान	—					
नोडल विद्यालय का संस्था प्रधान						
जिशिअ/अजिशिअ						
उप निदेशक						
निदेशालय अधिकारी						

हस्ताक्षर

उप निदेशक/जिला शिक्षा अधिकरी

4. माध्यमिक शिक्षा में विद्यालयों का सघन निरीक्षण

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/निप्र/डी-2/21760/सघननिरीक्षण/2012/114 ● दिनांक: 08.01.14 ● समस्त उप निदेशक ● माध्यमिक शिक्षा ● विषय : विद्यालयों के सघन निरीक्षण अभियान के सम्बन्ध में। ● प्रसंग : प्रमुख शासन सचिव, स्कूल शिक्षा विभाग का पत्रांक : निस/प्रशास/13/05 दिनांक 3 जनवरी, 2014

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र के सन्दर्भ में लेख है कि इस कार्यालय के समसंख्यक पत्र दिनांक 30.12.13 द्वारा मु0मं0 60 दिवसीय कार्ययोजना के अन्तर्गत कठिन विषयों के निवारण एवं गुणवत्ता हेतु अतिरिक्त कक्षाओं के संचालन बाबत निर्देश प्रदान किये गये थे। इसी क्रम में समसंख्यक पत्र दिनांक 02.01.14 द्वारा प्रमुख शासन सचिव महोदय के निर्देशों की पालना में निरीक्षणकर्ताओं को कक्षा कार्य एवं गृह कार्य जांच को निरीक्षण के दौरान प्रमुखता से लेते हुए कक्षा विशेष में विषय विशेष की अभ्यास पुस्तिकाओं में कक्षा कार्य एवं गृह कार्य की जांच करते हुए निम्न स्तर वाले पॉच विद्यार्थियों का निरीक्षण प्रतिवेदन में निम्नलिखित प्रारूप में उल्लेख किये जाने हेतु निर्देशित किया गया था :-

कक्षा ..... विषय .....

अध्यापक का नाम .....

क्र. स.	छात्र/छात्रा का नाम	कक्षा कार्य एवं गृह कार्य स्थिति	सुधार हेतु दिया गया समय (दिनों में)
1	2	3	4

चूंकि वर्तमान में चलाए जा रहे **विद्यालय सघन निरीक्षण अभियान** का मूल उद्धेश्य शिक्षण गुणवत्ता में सुधार हेतु विद्यार्थियों की अवबोधन (Understanding) क्षमता का विकास कर उनके अधिगम स्तर (Learning Level) में सुधार लाना है। अत: प्रासंगिक पत्र में प्रदत्त निर्देशों की पालना में समस्त निरीक्षण अधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि पूर्व उल्लेखित पत्र दिनांक 30.12.13 के संलग्न प्रदत्त 20 बिन्दुओं के **विद्यालय सघन निरीक्षण प्रपत्र** के स्थान पर निरीक्षण प्रतिवेदन मात्र उपर्युक्त प्रारूप में ही प्रतिदिन इस कार्यालय के E-Mail Address : secondarydd@gmail.com पर भिजवाया जाना सुनिश्चित करावें।

यह सुनिश्चित किया जावे कि प्रत्येक कक्षा कार्य एवं गृह कार्य जॉच में संबंधित अध्यापक के द्वारा त्रृटियों पर लाल स्याही से गोले लगाये जावें तथा विद्यार्थी को सही लिखवाना सुनिश्चित करे, साथ ही अध्यापक द्वारा हस्ताक्षर के साथ दिनांक अवश्य डाली जावे। प्रत्येक संस्था प्रधान यह सुनिश्चित करें कि वह प्रतिदिन न्यूनतम 5 अध्यापकों के द्वारा जॉचे गये गृह कार्य व कक्षा कार्य का निरीक्षण व मूल्यांकन करें एवं संबंधित अध्यापक को उसी दिन सुधार के लिए निर्धारित समय देते हुए आवश्यक निर्देश देवें। साथ ही संस्था प्रधान नियमित रूप से अध्यापक डायरी का निरीक्षण करें व अनिवार्य रूप से छात्रों का यूनिट टैस्ट लिया जाना व टैस्ट के अनुरूप प्रत्येक छात्र का निदानात्मक/उपचारात्मक शिक्षण कार्य अतिरिक्त कक्षाओं के रूप में किया जाना सुनिश्चित करावें। समस्त निरीक्षण अधिकारी विद्यालय निरीक्षण के दौरान निरीक्षण प्रतिवेदन में उपर्युक्त प्रारूप की पूर्ति के पश्चात इस पत्र में दिए गये निर्देशों की पालना के अनुरूप कक्षा कार्य/गृह कार्य जॉच, डायरी निरीक्षण तथा यूनिट टैस्ट के संबंध में समेकित टिप्पणी दी जानी सुनिश्चित करेंगे। समस्त निरीक्षण अधिकारी/संस्था प्रधान द्वारा इस अभियान के दौरान शाला में अनुपस्थित पाये जाने वाले तथा अभियान के लक्ष्यों की पूर्ति में उदासीनता बरतने वाले अध्यापकों के विरूद्ध नियमानुसार अनुशासनात्मक कार्यवाही अमल में लाई जावे। इस बाबत् सूचना समाचार पत्रों में प्रकाशित करावें।

उक्त निर्देशों की पालना अनिवार्यत: सुनिश्चित की जाये।

निदेशक ● माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

5. राष्ट्रीय विद्यालयी खेलों के अन्तर्गत S.G.F.I. की अधिकृत/मान्यता प्राप्त इकाइयों में से राजस्थान राज्य में संचालित पॉच इकाइयों के संबद्ध विद्यालयों के खेलकूद प्रतियोगिताओं में संभागित्व के प्रतिबंध के क्रम में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

कार्यालय आदेश

राष्ट्रीय विद्यालयी खेलों के अन्तर्गत आयोजित होने वाली विभिन्न आयुवर्ग की खेलकूद प्रतियोगिताओं में राजस्थान राज्य सहित कुल 40 राज्य/इकाइयां भाग लेती है, जो स्कूल गेम्स फैडरेशन ऑफ इण्डिया (SGFI) की अधिद्भत/मान्यता प्राप्त इकाइयां (Affiliated Units) है। इन 40 इकाइयों में से निम्नांकित पांच इकाइयों (Units) के सम्बद्ध विद्यालय राजस्थान राज्य में भी संचालित है :-

क्र. सं.	इकाई (Units)	इकाई(Units) से सम्बद्ध विभाग का पता
1.	C.B.S.E. Sports Organisation	Secretary Central Board of Secondary Education (C.B.S.E .) Samiti, 10, Amarlata Kunj, K.K. Agra (U.P.)
2.	I.P.S.C.	Chairman, Indian Public School Conference, North Head Office in Motilal Nehru School of Sports, RAI Distt. Sonipat, Haryana -29
3.	Vidya Bharti	Sanyojak, Vidya Bharti Akhil Bhartiya Shiksha Sanasthan, Saraswati Vihar, Behind Ayurvedic College, Raipur (C.G.)
4.	K.V.S.	Commissioner, Kendirya Vidyalaya Sangathan, 18, Institution Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi
5.	N.V.S.	Commissioner, (ACAD) Navodaya Vidyalaya Samiti, Deptt. of Secondary Edu. & Hr. Edu. Govt. of India, A-28, Kailash Colony, New Delhi.

उपरोक्त पांच इकाइयां (Units) जो स्कूल गेम्स फैडरेशन ऑफ इण्डिया की अधिकृत/मान्यता प्राप्त इकाइयां (Affiliated Units) हैं, जो एक राज्य के बराबर मान्यता रखते हैं तथा इनके सम्बद्ध विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्रा खिलाड़ी राष्ट्रीय विद्यालयी खेलों के अन्तर्गत आयोजित होने वाली विभिन्न आयुवर्ग की खेलकूद प्रतियोगिताओं में अन्य राज्यों/इकाइयों की भांति पृथक इकाई (Units) के रूप में भाग लेते हैं। इन पांच इकाइयों में से कुछ इकाइयों के सम्बद्ध विद्यालय राजस्थान शिक्षा विभाग (माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा) द्वारा आयोजित खेलकूद प्रतियोगिताओं में भी भाग लेते आ रहे हैं।

अत: कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर एवं निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा आयोजित/संचालित होने वाली समस्त प्रकार की विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं यथा क्षेत्रीय/जिला/राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं एवं खेल गतिविधियों यथा राष्ट्रीय प्रतियोगितार्थ चयन परीक्षण में भाग लेने हेतु स्कूल गेम्स फैडरेशन ऑफ इण्डिया द्वारा अधिकृत/मान्यता प्राप्त (Affiliated Units) उपरोक्त पांच इकाइयों के सम्बद्ध विद्यालयों/अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को प्रतिबंधित किया जाता है।

इस कार्यालय के पत्रांक शिविरा/माध्य/खेलकूद-3/35101/(2)/2005-06/15 दिनांक 11.08.2005 द्वारा प्रसारित शिक्षा विभागीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताएं, साहित्यिक-सांस्द्भतिक प्रवृत्तियां आयोजन नियमावली एवं मार्गदर्शिका-2005 में से उक्त समस्त इकाइयों से संबंधित नाम विलोपित किये जाते हैं।

उक्त आदेश सत्र 2014-15 से प्रभावी होंगे।

● निदेशक ● माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक:- शिविरा/माध्य/खेलकूद-4/35151/खेलकलैण्डर/ 2013-14/92 दिनांक :- 08.01.14

6. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर की परीक्षाओं का बोर्ड द्वारा प्रसारित निर्देशों के अनुसार संचालन करने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा/अ-3/बोर्ड परीक्षा-14/2014 ● दिनांक : 21-1-14 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी ● माध्यमिक-प्रथम/द्वितीय ● अतिआवश्यक/फैक्स बोर्ड परीक्षा ● विषय-बोर्ड परीक्षा हेतु निर्देश।

विषयान्तर्गत एवं लेख है कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर की प्रायोगिक एवं सैद्धान्तिक परीक्षाएं-2014 बोर्ड द्वारा जारी परीक्षा निर्देशों के अनुरूप संचालित किये जाने हेतु समस्त जिला शिक्षा अधिकारियों एवं केन्द्राधीक्षकों को निर्देशित किया जाता है। बोर्ड परीक्षा में किसी भी प्रकार की त्रुटि/अव्यवस्था होने की स्थिति में केन्द्राधीक्षक एवं जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी होंगे। अत: बोर्ड परीक्षा-2014 के सफल संचालन को सुनिश्चित किया जावे एवं इसकी पालना पूर्ण रूप से करें।

● (विकास एस. भाले), निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर

निवेदन

कृपया शिविरा पत्रिका में प्रकाशन के लिए विद्यालयों में आयोजित समारोह/कार्यक्रमों के रंगीन फोटो मय कैप्सन (पृथक कागज पर) भिजवाने का कष्ट करें।

-वरिष्ठ संपादक

पर्यावरण विशेष

समुद्री पर्यावरण : एक विवेचन

❒ रामगोपाल राही

अंतरिक्ष की भाँति ही समुद्र का ज्ञान भी आवश्यक है। संयुक्त राष्ट्र संघ न्यूयॉर्क में सर्वप्रथम अंतराष्ट्रीय समुद्र विज्ञान कांग्रेस में 38 देशों के 800 समुद्र वैज्ञानिकों ने पाँच सामान्य विषयों पर चर्चा की थी। समुद्र का इतिहास, समुद्रों की आबादी, समुद्रों की गहराई, समुद्रों की सीमाएँ और समुद्रों में कार्बनिक व अकार्बनिक पदार्थों का चक्र।

अधिकांश भूमि यानी 71 प्रतिशत समुद्र के नीचे है पृथ्वी का आरंभिक इतिहास जानने से पहले हमें समुद्रतल की चट्टानों को जानना होगा। वस्तुत: हम समुद्री दुनिया के बारे में बहुत कम जानते हैं या जानते ही नहीं। समुद्र तल की चट्टानों, उसके पानी व उसके जीव धारियों के अध्ययन से ही सृष्टि के रहस्यों का ज्ञान हो सकेगा। समुद्र से कितनी खनिज सम्पदा, कितनी मछलियाँ, कितने खाद्य पदार्थ कितने प्रोटीन पदार्थ प्राप्त किये जा सकते हैं? यह सब समुद्र के बारीक अध्ययन से मालूम हो सकता है। उल्लेखनीय होगा कि भूमि पर खेतों से प्राप्त होने वाली अन्न की कमी, और बढ़ती आबादी के पोषण के लिए, दुनिया के अल्पपोषित वर्ग के लिए तथा दुनिया के लिए भोजन जुटाने के लिए समुद्र को एक अच्छा माध्यम माना जा सकता है।

हकीकत में आज समुद्र के संदर्भ में दिलचस्पी की आवश्यकता है। समुद्रों के रहस्यों का पता लगाने का प्रयत्न होता रहा है। समुद्रों से हमें ऐसी अनेक वस्तुएँ प्राप्त हो सकती हैं। जिनकी हमें दैनिक जीवन में आवश्यकता पड़ती है, आने वाली पीढ़ियाँ अवश्य ही अपने भोजन के लिए समुद्र की ओर आज की अपेक्षा अधिक ध्यान देंगी। उनका यह भोजन केवल मछलियों के रूप में ही नहीं होगा बल्कि अन्य खाद्य पदार्थों और नए-नए उत्पादकों के रूप में भी होगा। समुद्रों में आधुनिक उद्योगों के लिए अनेक खनिज व रसायन भी हैं। मौसम के अधिक सही अनुमान की ज़रूरत भी बढ़ती जायेगी। मौसम को समुद्रों के अंदर की घटनाएँ अधिक प्रभावित करती हैं।

समुद्र तल तट से शुरू होकर गहराई तक धीरे-धीरे अधिक से अधिक होता चला जाता है। इसके बाद महाद्वीप मग्नढाल से होते हुए यह खडी ढ़लान का रूप ले लेता है और महासागर के पितलों में परिवर्तित हो जाता है। समुद्र तट से लेकर सौ फैदम तक की गहराई के क्रमिक ढलान को महाद्वीपीय मग्नतट भूमि कहते हैं। इस प्रकार महाद्वीपीय भूमि एक तरह से उपान्तीय अथवा अन्ततः स्थल खंड ही है। और सूखी जमीन की तरह ही इसमें भी घाटियाँ, पहाडिय़ाँ, कटक या धार तथा पठार हैं। मग्नतट भूमि सँकरी भी हो सकती हैं, जिसके परिणामस्वरूप समुद्रतल समुद्र तट से कुछ मील पर ही कई सौ फैदम नीचे चला जाता है, जैसा स्काटलैंड या आयरलैंड के पश्चिम तटों में हैं लेकिन भूमि चौडी हो सकती है। जिसके परिणामस्वरूप समुद्र तट से ही लगभग सौ मील पर भी सौ फैदम की गहराई शुरू नहीं होती, जैसा की इंग्लिश चैनल में हैं।

समुद्र में महाद्वीपीय मग्न ढ़ाल समतल नहीं हैं। कुछ भागों में तो ये ऊँची-ऊँची पर्वतमालाओं ढलानों की तरह है। करीब पंद्रह सौ फैदम की गहराई में जाकर यह ढलना समाप्त हो जाता है। और महासागर में वितल के समतल मैदानों में परिवर्तित हो जाता है। विस्तृत क्षेत्र पूर्व अटलांटिक में महासागर तल आश्चर्यजनक रूप से समतल व सपाट ही है पर विस्तृत क्षेत्रों में भी ऊँची पर्वत श्रेणियाँ, पहाड़ तथा घाटियाँ और गहरी खाइयाँ होती है। उदाहरणार्थ अटलाँटिक महासागर उत्तर से दक्षिण तक चली गई एक पर्वत श्रेणी द्वारा पूर्वी तथा पश्चिम श्रेणी में विभाजित है। प्रशान्त व हिन्द महासागर भी इसी तरह विभाजित है। समुद्र तल में समतल मैदानों में भी समुद्री पहाडिय़ों तथा ऊबड़-खाबड़ शंकु होते हैं। जो कभी समुद्र की सतह से दो सौ फैदम के भीतर तक उठे होते है। प्रशान्त महासागर में समुद्री पहाडिय़ों की विशेष रूप से बहुलता है।

जिन तल राशियों से समुद्र और महासागर बनते हैं उनमें से एक तो वे हैं जो महाद्वीपीय मग्न तट भूमि पर है और दूसरा वे जो महासागरों की श्रेणियों में है। उनमें बसने वाले प्राणियों और पौधों में अंतर हैं और उनके पानी का रंग भी अलग-अलग है। महाद्वीपीय मग्नतट भूमि के ऊपर समुद्र तट हरे है और उनके उपतट विशेषत: बड़ी नदियों के मुहानों के पास जल में निलंबित बालू तथा कीचड़ के कारण गंदले होते हैं। महाद्वीपीय मग्नढाल के ऊपर पानी कुछ हरापन लिये हुए नीले रंग का ओर अंत में खुले महासागर में पहुँचकर नीले रंग का हो जाता है।

पानी की सतह पर से प्रवेश करने वाला प्रकाश प्रकीर्ण होने के साथ-साथ सोख लिया जाता हैं। जहाँ जल में कण लटके होते हैं, वहीं कम गहराई तक प्रविष्ट होता है। गोताखोरों के अनुसार तीस फुट की गहराई में केवल हरा रंग होता है। इसका कारण है कि परा बैंगनी और लाल किरणें सतह की परतों में शीघ्रता से सोख ली जाती है जबकि हरी और नीली किरणें सबसे अधिक दूरी तक पहुँचती हैं। महासागरीय जल में मानवीय फोटो प्लेटों को गहराइयों से उतारा गया तो उन पर इससे दुगनी गहराई में प्रकाश का आभास अंकित हुआ। पाँच सौ फैदम की गहराई से नीचे महासागर पूर्ण रूप से अंधकारमय है।

सागर में, जहाँ तक जंतुओं का संबंध है उन पर केवल प्रकाश का ही प्रभाव नहीं पडता है। जैसे-जैसे नीचे जाएँ, वैसे-वैसे दाब बढ़ता जाता है। परन्तु अधिक गहराई में रहने वाले जन्तु इसके साथ ही न्यूनतम तापमानों के प्रति भी अनुकूलित होते हैं। गहराई वाले जन्तु दाब के कारण चपटे और प्रकाश के अभाव में आँखों जैसे प्रकाश संवेदी अंगों से रहित होते हैं।

धुव्रीय अक्षांशों की तुलना में उष्णकटिबंधीय समुद्रों की सतहों पर तापमान अधिक होता है। परन्तु सतह के नीच तापमान समान ही रहता है। समुद्र का खारापन अलग-अलग प्रदेशों और गहराइयों में बदलता रहता है जैसे-जैसे नीचे जाएँ कम होता चला जाता है।

पानी जितना ठण्डा होता है, उसका घनत्व उतना अपेक्षाकृत होता है। धुव्रीय प्रदेशों से आने वाला अपेक्षाकृत ठण्डा और भारी पानी जल्दी से सतह के नीचे डूब जाता है। महासागर तल पर दो भिन्न जल राशि धीरे-धीरे बढ़ती हैं। सागर में सतह, मध्य व ऊपरी भागों में पानी

भिन्न-भिन्न दशाओं में रहता है। विशाल जल धाराओं के प्रभाव से महासागरों की जल राशियों में सदैव संचलन होता रहता है। इसका प्राणियों तथा पौधों के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

प्रायः अधिकांश खनिज और कच्ची धातुएँ जमीन को खोदकर प्राप्त की जाती हैं, लेकिन अब परिस्थितियाँ बदलती जा रही हैं। कई कच्चे माल के भूगर्भीय स्रोत समाप्त होते जा रहे हैं। अब हम नई विधियों से समुद्र तल से पहले की उपेक्षा अधिक आसानी से अधिक पदार्थ निकाल सकते हैं। समुद्र तल विश्लेषण से ज्ञात हुआ है कि समुद्री जल में लवण आदि पदार्थ विद्यमान है। हकीकत में आज सागरिका ज्ञान व सागरिका पर्यावरण की आवश्यकता है।

करीब 44 राष्ट्र समुद्री विज्ञान आयोग के सदस्य पूर्व में बताये गये थे अब शायद अधिक हैं। आज नवीन इलैक्ट्रानिक, उपकरणों और वैज्ञानिक उपकरणों की सहायता से मानव ने समुद्र के अधिकांश तल के स्थानों अर्थात् पर्वतों का मानचित्र तैयार किया है, तलहटी के फोटो खींचे हैं, चट्टानों और तलछट के नमूने लिए हैं। समुद्रों की विस्तृत खोज के बारे में काफी जानकारियाँ तैयार की जा चुकी हैं।

सागर में खाद्य काई या शैवाल भारी मात्रा में निकाले जाते हैं। बताया जाता है कि समुद्री जानवर ऐसे हैं जिनकी जानकारी प्राप्त कर पर्याप्त लाभ लिया जा सकता है। समुद्र से भोजन स्रोत मछलियों के माध्यम से खाने वालों के लिए बढ़ाये जा सकते हैं।

सागरिका का अपना अपार महत्त्व है। सागरिका की गहराई में कई बहुमूल्य चीजें हैं। समुद्र तल के नीचे तेल भंडार है, प्राकृतिक गैस और लगभग सभी प्रकार की उपयोगी खनिज सम्पदा बिखरी है। एक दिन आएगा जब हमारे विशेषज्ञ 'मिट्टी से सोना' वाली कहावत को सागरिका से बहुत कुछ प्राप्त कर अटूट सम्पदा प्राप्त कर जल से सोना वाली कहावत बनायेंगे। विद्यालयों में छात्र-छात्राओं को इस महत्वपूर्ण विषय पर जानकारी शिक्षकों के द्वारा दी जानी चाहिए। इससे इनका ज्ञान भी बढ़ेगा तथा इस महत्वपूर्ण क्षेत्र के प्रति आत्मीयता का विकास भी होगा।

-मीडमला गणेशपुरा, वार्ड 4/5,
पो. लाखेरी (बूंदी) 323615
मो. 8239684477

शिक्षण-अधिगम

भूगोल शिक्षण द्वारा भावनात्मक एकता

❑ शिवचरण मंत्री

सन् 1947 में देश स्वतंत्र हुआ। स्वतन्त्रता के साथ ही देशी रियासतों ने भी अपने आप को स्वतन्त्र माना और प्रयास किया देश को विखण्डित करने का, परन्तु लौह पुरुष पटेल ने अपनी सूझ-बूझ और दूरदर्शिता से सभी देशी रियासतों का विलीनीकरण कर दिया। इससे नए प्रदेशों का निर्माण हुआ। कालान्तर में भाषा को प्रमुख आधार मानकर राज्यों का पुनर्गठन किया गया। पुनर्गठन के कारण कतिपय नए राज्य बनाए गए। कुछ राज्यों का विलीनीकरण किया गया। यह सब हुआ प्रमुख रूप से भाषा व क्षेत्र के आधार पर। फलतः विघटकारी ताकतों को देश को विघटित करने का अवसर मिला। इन ताकतों ने भाषा, क्षेत्र आदि के नाम पर अलग राज्य की मांग करना आरम्भ किया। आज ये ताकतें अपने पांव फैलाकर देश को तोड़ने का प्रयास कर रही हैं। यदि इन ताकतों पर कोई नियंत्रण नहीं पाया जा सका, इनको रोका नहीं गया तो देश की भावनात्मक एकता समाप्त हो जाएगी। भावी पीढ़ी के राष्ट्रीय भावनात्मक एकता के विकास का कार्य भूगोल शिक्षण द्वारा सहज किया जा सकता है।

राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से आशय बालक में एक ऐसी भावना को प्रस्फुटित करना व उसका विकास करना है कि वह सारे राष्ट्र को अपना समझे। देश के सभी नागरिक एक सूत्र में बंध जायें। भावात्मक एकता का संक्षेप में अर्थ है : देश का ध्यान। इस प्रकार की भावना से देश के प्रति आदर व गौरव की भावना उत्पन्न होती है। इस प्रकार की भावना में घृणा, नफरत व द्वेष का जहाँ कोई स्थान नहीं, वहीं जाति, धर्म, सम्प्रदाय व प्रान्तीय सीमाओं का कोई महत्व नहीं होता है। भावनात्मक एकता से ही व्यक्ति सहनशील, विवेकशील व गम्भीर बन कर देश के सांस्कृतिक, भौतिक, व सामाजिक विकास को सर्वाधिक महत्व प्रदान करता है।

भूगोल शिक्षा के भावनात्मक एकता को जाग्रत, विकसित व निर्माण हेतु निम्न उपाय प्रारम्भ से ही किये जाने उचित होंगे।

भूगोल विषय पढ़ाते समय बालक को देश की विशालता व महानता से परिचित करवाना चाहिए। बालक को संसार के मानचित्र में भारत के क्षेत्रफल के आधार पर संसार का विशाल देश बताते हुए यह बतलाना चाहिए कि हमारा देश जनसंख्या में दूसरा स्थान रखता है। क्षेत्रफल में भारत का सातवां स्थान है। भारत संसार को पूर्व और पश्चिम से हवाई मार्ग से जोड़ने वाला प्रमुख देश है। देश में भिन्न-भिन्न प्रान्त होने पर भी हम सब एक हैं। भारत एक महान् राष्ट्र है। हमें इस बात पर गर्व करना चाहिए।

देश में प्राकृतिक सम्पदा के विपुल भण्डार हैं। देश के पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर व दक्षिण पश्चिम में हिन्द महासागर में विपुल जल भण्डार है। इन जल के विपुल भण्डारों से भारत अपने पड़ौसी देशों से अलग दिखाई देता है। उत्तर का विशाल हिमालय चीन से हमें स्पष्ट रूप से अलग करके उत्तरी ध्रुव की ठण्डी हवाओं को रोकता है। सुदृढ़ प्रहरी के अतिरिक्त हिमालय से ही वर्ष पर्यन्त बहने वाली नदियां यथा गंगा, यमुना, सिंध और ब्रह्मपुत्र आदि निकलती हैं। जिससे सारा उत्तर भारत सदैव हरा भरा रहता है। जल के इस विपुल भण्डार के अलावा वन, खनिज, पशु, मत्स्य के भी देश में प्रचुर भण्डार है। खनिजों में कतिपय ऐसे खनिजों का भी देश में अथाह भण्डार है जो भारत में ही प्राप्त होते हैं। यह इस देश के लिए गर्व, गौरव की बात है कि यहाँ के प्राकृतिक सुरम्य स्थल विश्व के अन्य देशों में दुर्लभ हैं।

भारत की जनसंख्या के बारे में बताते हुए यह बताना अति आवश्यक है कि देश में मानव शक्ति की कोई कमी नहीं है। विपुल प्राकृतिक

सम्पदा व जनसंख्या वाले देश भारत में 18 भाषाएं ऐसी हैं जिनको संविधान द्वारा मान्यता प्रदान है। इन भाषाओं के अतिरिक्त देश में सैकड़ों बोलियां बोली जाती है। देश में कई धर्म, सम्प्रदाय, मत भी प्रचलित हैं। इस प्रकार भाषा, बोली, धर्म, सम्प्रदाय, मत, जाति आदि की विविधता के उपरांत भी देश के हर नागरिक को अपनी इच्छानुसार धर्म, भाषा बोलने व शिक्षा प्राप्त करने, व्यवसाय करने आदि का अधिकार है। भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है जहां के हर नागरिक को अपने विश्वास, मान्यता, इच्छानुसार धर्म, सम्प्रदाय, मत को मानकर पूजा, अर्चना की स्वतन्त्रता है। देश में विभिन्न जातियों, धर्मावलंबियों के होते हुए भी पूर्व से पश्चिम व उत्तर से दक्षिण तक सभी धर्म, सम्प्रदाय के प्रर्वत्तकों, प्रचारकों, महानपुरूषों, संतों को आदर व सम्मान दिया जाता है। धार्मिक स्थलों पर पूजा अर्चना की जाती है।

विद्यालयों में शैक्षिक कार्यक्रम के अतिरिक्त सहशैक्षिक, पाठ्येत्तर प्रवृत्तियों का आयोजन भी बालक के समग्र विकास के लिए किया जाना आवश्यक है। इस प्रकार की पाठ्येत्तर प्रवृत्तियों में भूगोल शिक्षण में भ्रमण के कार्यक्रम रखकर बालकों को समीपस्थ नदी, बांध, सरोवर, औद्योगिक बस्ती, कारखाना, खानों आदि स्थानों पर ले जाकर अतीत की संस्कृति को वर्तमान से जोड़कर बालक को देश के गौरव से परिचित करवाया जा सकता है। औद्योगिक व व्यापारिक केन्द्रों पर ले जाकर बालक को देश में हो रहे तीव्रगति के आर्थिक विकास की जानकारी सहज ही दी जा सकती है। इस प्रकार के स्थलों को देखकर बालक एक दूसरे के सम्पर्क में आयेंगे और वे भावनात्मक रूप से जुड़ सकेंगे। पारस्परिक वार्ता करने से विभिन्न प्रकार के विचारों से बालक जानकार होंगे। भ्रमण की अपनी सीमाएं होती हैं। उन सीमाओं को लांघने या सावधानी न बरतने पर दुर्घटना घट सकती है।

भ्रमण के साथ-साथ भौगोलिक प्रदर्शनियों, मेलों, चित्र-प्रदर्शन आदि का कार्यक्रम भी रखा जा सकता है। भौगोलिक प्रदर्शनी में भारत दर्शन, प्रदेश दर्शन, घाटी योजना दर्शन आदि का आयोजन विद्यालय संकुल स्तर पर रखा जाना अच्छा होगा। प्रदर्शनी के अतिरिक्त चित्रों, मॉडलों व मेलों द्वारा भी भौगोलिक स्थलों, औद्योगिक बस्तियों, व्यापारिक केन्द्रों आदि का आयोजन किया जा सकता है। इस प्रकार की प्रवृत्तियों से बालक क्षेत्र विशेष की भाषा, रहन सहन, खान पान, सांस्कृतिक प्रवृत्तियों आदि की जानकारी प्राप्त करेंगे और इससे वे एक दूसरे को आदर, सम्मान दे सकेंगे। देश में हो रहे विकास को जा सकेंगे।

तदुपरान्त बालक से किसी देश की भौगोलिक स्थिति को छिपाना उचित नहीं होगा। भूगोल अध्यापक को तटस्थ भाव से सभी देशों की वास्तविक भौगोलिक स्थिति की जानकारी देनी चाहिए। इस सम्बन्ध में भूगोल अध्यापक को ना काहू से दोस्ती और ना काहू से बैर वाली बात पर चलना चाहिए। क्योंकि जहाँ अनर्गल, मिथ्या प्रशंसा किसी देश के प्रति बालक को उस देश के प्रति अंध भक्त बना सकती है, वहीं अन्य देश के लिए विद्वेष की भावना उत्पन्न कर सकती है। इससे बालक पूर्वाग्रही होकर किसी देश से अकारण ही घृणा भी कर सकता है।

संक्षेप में भूगोल शिक्षण द्वारा यह स्पष्ट किया जा सकता है हमारा देश भावनात्मक दृष्टि से एक है क्योंकि भौगोलिक दृष्टि से जहाँ भारत एक प्रतीत होता है, वहीं उत्तर में बहने वाली गंगा, यमुना का जल दक्षिण में उत्तर सा ही पवित्र व पुण्यदाता माना जाता है। इसी प्रकार दक्षिण में बहने वाली नर्मदा व गोदावरी नदियों को उत्तर में दक्षिण से अधिक महत्ता है। इससे स्पष्ट है कि समस्त भारतवासी बिना किसी प्रकार के धर्म, जाति, बोली, सम्प्रदाय आदि के भेद भाव बिना एक दूसरे को आदर व सम्मान देते हैं। एक दूसरे को समझ कर एक दूसरे से प्रेम करते हैं। भूगोल शिक्षक ऐसे अन्य भौगोलिक तथ्यों को भी बालकों के स्तरानुसार खोज कर बालकों को बताकर भावनात्मक एकता का उद्भव, विकास व निर्माण कर सकता है।

इस प्रकार भूगोल शिक्षण के द्वारा हम अपनी पृथ्वी ही नहीं अपितु राष्ट्रीय एकता, अखण्डता, नैतिकता जैसे पावन पाठ सीख सकते हैं। दरअसल ये हमारे जीवन के शृंगार है जिनसे हमें जीवन को सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् संकल्पना के अनुरूप ढालना चाहिए।

- मु.पो. श्रीनगर (अजमेर) 305025
मो. 9414981944

सरस्वती पुत्र सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निरालाजी'

❒ नारायण लाल टाक (माली)

कविवर सूर्यकान्त त्रिपाठी ''निराला'' का जन्म 20 फरवरी, 1897 ई में बसन्त पंचमी के दिन बंगाल के मेदिनापुर जिले के महिषादल गांव में हुआ इनके पिता पं. राम सहाय त्रिपाठी केला नाम गांववासी थे। सरस्वती पुत्र सूर्यकान्त त्रिपाठी ''निराला'' आधुनिक हिन्दी के प्रबल प्रबुद्ध कवि थे। इन्होंने हिन्दी में छंद मुक्त कविताओं के विधान की शुरूआत की। इनकी समस्त काव्य रचनाओं में प्रधान स्वर ओज और संघर्ष से पूर्ण होता था। भारतीय साहित्यिक जगत निराला जी को कभी भी विस्मृत नहीं कर पायेंगे। कवि निराला जी को साहितय जगत का सिरमौर बनाने का श्रेय एक अकेले कलकत्ता के सेठ महादेव प्रसाद मतवाला जी को जाता है। ये योगदान भी कभी नहीं भुलाया जाने वाला योगदान है। सेठ जी मतवाला निराला जी को प्राणमय मानते थे। इसी अनुरूप वे व्यवारिक थे। मतवाला जी एक बार निराला जी के लिए एक सुन्दर सी ढुलाई बनवाई और उसे सप्रेम उन्हें भेंट की। निराला जी ने उसे उठा एक दिन निराला जी मतवाला जी के कार्यालय में जा रहे थे कि रास्ते में एक भिखारी सामने खड़ा मिल गया जिसके तन पर कोई वस्त्र नहीं था। महाप्राण निराला जी से यह देखा नहीं गया तो उन्होंने तुरन्त अपनी ढुलाई उतारी और ठंड से काँपते भिखारी के शरीर पर डाल दी। यह वृर्तात प्रेस कार्मिक देख रहा था। वह भागता हुआ सेठजी को बुलाने दौड़ा। सेठजी ने सुना तो सेठ मतवाला जी भिखमंगे के पीछे भागे परन्तु भिखारी देखते-देखते गलियों से गुजरता हुआ ओझल हो गया।

निराली जी ने सेठजी को आवाज दी- ''क्यों आप अनावश्यक परेशान हो रहे हैं ? अब जाने दीजिये ''बैचारे भिखारी का जाड़ा अब ठीक से कटेगा'' । निराला जी तो करुणा, दया की साक्षात मूर्ति थे। इनके हट के आगे किसी की भी न चलती। इसी तरह एक बार निराला जी अपने प्रकाशक से मेहनताना लेने जीरो रोड इलाहाबाद गये। प्रेस प्रकाशक ने उन्हें 300 रुपये दिये। उन्होंने रुपये अपनी अंटी में बांधे और चल पड़े। रास्ते में एक भिखारिन उन्हें मिली। निराला जी को देखकर कहने लगी-''बेटा इस भूखी-प्यासी भिखारिन को कुछ दे दो।'' निराला जी ठिठक कर खड़े हो गये। भिखारिन से बोल-बताओ तुम्हें कितने पैसे मिल जाये तो-तुम भीख मांगना छोड़ दोगी ? भिखारिन ने सोचा कि शायद यह मजाक कर रहे हैं तो झट से बोली- ''क्यों मेरी हंसी उड़ा रहे हो।'' सूर्यकान्त त्रिपाठी जी तपाक से बोले-निराला की माँ भीख नहीं मांग सकती ?'' इतना कहकर कविवर ने अपनी अंटी की गांठ खोली और पूरे के पूरे रुपये बुढ़िया भिखारिन को थमा दिये। ऐसे थे हमारे करुणा सागर कवि निराला जी महा सरस्वती के पुत्र को शत्-शत् नमन् ।।

-वरिष्ठ लिपिक, छीपों का मौहल्ला, बीकानेर

शिवाजी जयंती

माँ जीजाबाई ने बनाया शिवा को शिवाजी

❑ साधना गर्ग

श्रीमती साधना गर्ग एक विष्णात शिक्षक एवं कुशल शिक्षा अधिकारी हैं। आपने विभिन्न विद्यालयों में अपने शिक्षण एवं प्रशासन की छाप छोड़ी है। शिक्षा ही नहीं साहित्य, कला शिक्षा एवं अन्य सामाजिक कार्यक्रमों की सफल संचालन में अपनी साधना की सिद्धि प्राप्त की है। वर्तमान में आप राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, चौमूं जिला जयपुर में प्रधानाचार्या पद पर कार्यरत हैं। -अतिथि सम्पादक

प्रतिदिन की तरह शिवाजी ने आकर माता जीजाबाई को प्रणाम किया। सुबह का सुहावना समय था। माँ स्नान करके सूर्य को अर्घ्य दे रही थीं। दोनों नियम के पक्के थे, माँ जीजाबाई और बेटा शिवा-छत्रपति शिवाजी। शिवा के लिए तो सब कुछ माँ ही थी। सुबह के प्रणाम के समय माँ यदि कोई आदेश देती तो शिवाजी अपना सौभाग्य मानते।

आज माँ ने गम्भीरतापूर्वक बेटे ने प्रणाम के जवाब में कहा, "देखो शिवा । तुम्हें सामने विशाल किला दिखाई दे रहा है। उस पर मुगलों का झंडा लहरा रहा है। वह तो सीधे-सीधे मराठों को चुनौती दे रहा है।" इतना कहकर माँ किंचित और गम्भीर हो गई।

शिवाजी चुप रहकर माँ के आदेश की प्रतीक्षा करने लगे। कुछ क्षण रुक कर माँ बोलीं, "बेटा! रामगढ़ किले के पास मुगलों का बोलबाला हमारा अपमान है। माँ भवानी का हुकम है कि कल इस समय तक मुगल झण्डे की जगह केसरिया ध्वज फहराना चाहिए।

सुबह के समय माँ के आदेश को अपना सौभाग्य समझने वाले शिवाजी आज तो चौंक पड़े, बोले इतना कम समय। कल सवेरे तक..?" मगर शिवा को शिवाजी बनाने वाली दृढ़ आत्मविश्वासी माँ जीजाबाई ने बीच में ही हुंकार भरते हुए कहा, "हाँ...हाँ। कल सूर्योदय से पहले यह सब हो जाना चाहिए। आज का सूर्योदय तो हो चुका है। जाओ, बेटा जुट जाओ। सफलता तुम्हारी बाट जोह रही है। भवानी माँ का आदेश है और कल सूर्योदय से पहले वह चमत्कार होकर रहेगा। जाओ... जाओ.... जाओ। अब एक क्षण भी बर्बाद मत करो। शिवा तुम जीत कर आओगे।

माँ की आज्ञा से एक मुश्किल कार्य को चौबीस घण्टे से भी कम समय में करना था। इस किले का प्रभारी एक राजपूत सरदार था जिसके पास मुगलों व राजपूतों की मिली जुली बड़ी सेना थी। शिवाजी ने प्रण लिया और तुरन्त अपने विश्वस्त योद्धा तानाजी को समाचार भिजवाया। उसी दिन तानाजी के बेटे का विवाह था। वर-वधु विवाह मण्डप में बैठे थे। तानाजी व्यवस्थाओं को देख रहे थे। अतिथियों की आवभगत कर रहे थे। एक घुड़सवार शिवाजी का खत लेकर पहुंचा। पत्र पढ़कर उन्होंने यही तय किया कि भवानी मां के हुक्म की पालना करनी है।

तानाजी के चेहरे के भाव पढ़कर उनका भाई व पुत्र मण्डप से उठकर उनके पास आ गए। शिवाजी का संदेश जानकर सभी सरदार एकत्रित हो गए। हर हर महादेव की मंगल ध्वनि हुई। विवाह जैसे गौण हो गया। सब कर्तव्य पालन में प्रवृत्त हो गए। तानाजी ने बेटे को विवाह कार्य पूरा करने के लिए पुरोहित की आज्ञा के अनुसार कार्य करने का कहा। भाई की तरह उन्मुख होकर कहा, "सूर्याजी, आप तुरन्त सैनिकों को बुलाओ। हमें इसी समय रामगढ़ पहुँचना है।"

माँ जीजाबाई ने सभी सैनिकों के तिलक लगाकर आशीर्वाद दिया। शिवाजी ने अपने हाथ से सबको तलवार सौंपी। लुकते-छिपते यह सेना मुगलों के किले तक पहुँच गई। वहाँ रस्सी में एक गोह बाँधकर फेंकी गई। वह दीवार पर चिपक गई। रस्सी के सहारे एक सैनिक किले की छत पर पहुँचा। वहाँ एक मोटा रस्सा बाँधकर राह बना ली। अब क्या था, देखते ही देखते सभी सैनिक किले के अन्दर चले गए।

मराठा सैनिकों के किले में पहुँचने की आहट पाकर राजपूत व मुगल सैनिक सावधान हो गए। घोरदार युद्ध हुआ। जोशिले मराठों का सामना राजपूत-मुगल नहीं कर पा रहे थे। जैसे तैसे एक सरदार ने तानाजी को घेर लिया। उसका मानना था कि जैसे ही तानाजी को पकड़ लिया जाएगा, मराठे मनोमत वश में हो जाएँगे। तानाजी उनकी चाल को भली-भाँति समझते थे। वे किसी भी मूल्य पर माँ भवानी के हुक्म को पूरा करना चाहते थे भले ही इसके लिए जान ही क्यों न देनी पड़े।

तानाजी पूरी ताकत से उस सरदार से भिड़ गए। भयंकर युद्ध में तानाजी ने उसकी ढाल के दो टुकड़े कर दिए। मगर, यह क्या हुआ...। एक भाला तानाजी की पसलियों में घुस गया। वे लड़ते रहे और तलवार के अन्तिम वार में राजपूत सरदार का काम तमाम कर दिया और वे स्वयं भी निढाल होकर गिर पड़े। उनके प्राण पखेरू उड़ चुके थे।

मराठा सैनिकों ने किले के द्वार खोल दिए। सूर्याजी और बाकी सैनिक किले में घुस आए। चारों ओर हर हर महादेव की आवाजें सुनाई देने लगीं। किले पर मराठों का अधिकार हो गया। मुगलों के ध्वज के स्थान पर मराठों का केसरिया ध्वज फहराने लगा।

अगले दिन सुबह-सुबह माँ जीजाबाई जब सूर्य को प्रणाम करने महल पर आई तो दूर किले पर केसरिया ध्वज फहराता दिखाई दिया। वे प्रसन्न होकर बोलीं, "जय हो माँ भवानी, धन्य है मेरा पुत्र शिवाजी, मेरा संकल्प पूर्ण हुआ। जब उन्हें पता लगा कि इस लड़ाई में तानाजी नहीं रहे तो उन्होंने शिवाजी से कहा, "शिवा, हमारे तानाजी शेर थे। उन्होंने शेर जैसी वीरता बताई है। किला तो फतह कर लिया है, लेकिन हमारा सिंह नहीं रहा। उनकी याद में इस किले का नाम सिंहगढ़ किया जाए।"

माँ जीजाबाई के आशीर्वाद व उत्साहवर्द्धन से शिवाजी ने ऐसे अनेक अद्भुत वीरता के कार्य किए। वे शिवा से शिवाजी और शिवाजी से छत्रपति शिवाजी बने। जीजा बाई हमें वीर माता एवं शिवाजी हमें वीर पुत्र बनाने की शिक्षा देते हैं।

-प्रधानाचार्या
रा.बा.उ.मा.वि., चौमूं (जयपुर)
मो. 9414876397

शिक्षण-अधिगम

गणित में विचित्रता

❒ एम.एस. कस्वां

गणित विषय कठिन माना जाता है विद्यार्थियों को गणित विषय अरुचिकर लगता है। कालांश में गणित विषय में उदासीनता ही बनी रहती है। कक्षाओं में हँसी खुशी का माहौल बनाना आवश्यक है एवं गणित में मनोरंजन की भी आवश्यकता है। गणित विषय में विद्यार्थियों की रुचि पैदा करना आवश्यक है। निम्न उदाहरणों द्वारा विचित्र गुणा, विचित्र संयोग, अंक की स्वर संगतियाँ, गणित का जादू अंकों के पिरामिड, मनोरंजक संख्याएँ उदाहरणों द्वारा गणित में रुचि पैदा की जा सकती है।

1. 37 को 3 गुणज से गुणा करने पर अंकों की पुनरावृत्ति :-

37 × 3	=	111	
37 × 6	=	222	
37 × 9	=	333	
37 × 12	=	444	
37 × 15	=	555	विशेषता:- तीनों अंक समान है।
37 × 18	=	666	
37 × 21	=	777	
37 × 24	=	888	
37 × 27	=	999	

2. विचित्र गुणा :-

142857 × 326451

142857	
714285×	
571428××	विशेषता:- हर एक अंक के नीचे वही अंक
857142×××	
285714××××	
428571×××××	
46635810507	

3. विचित्र संयोग :-

गुणा की प्रक्रिया में गुणज और गुणक के अंक उलट जाएं तो गुणनफल के अंक भी उलट जाते हैं।

312 × 221 = 68952

213 × 122 = 25986

4.

जोड़ :-			गुणा :-		
9 + 9	=	18	9 × 9	=	81
47 + 2	=	49	47 × 2	=	94
24 + 3	=	27	24 × 3	=	72
497 + 2	=	499	497 × 2	=	994

5. अंक की स्वर संगतियाँ:-

(1) = 1

1 + (2) + 1 = 4

1 + 2 + (3) + 2 + 1 = 9

1 + 2 + 3 + (4) + 3 + 2 + 1 = 16

1 + 2 + 3 + 4 + (5) + 4 + 3 + 2 + 1 = 25

1 + 2 + 3 + 4 + 5 + (6) + 5 + 4 + 3 + 2 + 1 = 36

1 + 2 + 3 + 4 + 5 + 6 + (7) + 6 + 5 + 4 + 3 + 5 + 1 = 49

विशेषता:- प्राप्त हुए सभी अंक 1, 4, 9, 16..... इत्यादि पूर्ण वर्ग संख्याएँ हैं।

6. विचित्र गुणनफल:-

```
  1 2 3 4 5 6 7 9
              × 9
-----------------
1 1 1 1 1 1 1 1 1
```

विशेषता:- प्राप्त गुणनफल में सभी अंक "1" हैं।

7. इकाई का अंक 5 होने पर संख्या का वर्ग :- (सरल विधि से)

5	×	5	=	25
15	×	15	=	225
25	×	25	=	625
35	×	35	=	1225
45	×	45	=	2025
55	×	55	=	3025
65	×	65	=	4225
75	×	75	=	5625
85	×	85	=	7225
95	×	95	=	9025

विधि :-

(1) इकाई के अंक '5' का वर्ग 25 लिखें।

(2) दहाई के अंक को इससे बड़े क्रमागत अंक से गुणा कर के 25 से पहले लिख दें।

8. नौ अंकों की संख्या में अंक 9 से घटते हुए 1 तक तथा 1 से बढ़ते हुए 9 तक लिखने पर दोनों संख्याओं के अंकों का योग 45 है। तथा घटाने पर अंकों का योग भी 45 है।

घटा	9, 8, 7, 6, 5, 4, 3, 2, 1	योग 45
	1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9	योग 45
	8, 6, 4, 1, 9, 7, 5, 3, 2	योग 45

9. गणित का जादू:-

0 × 9 + 1 = 1

1 × 9 + 2 = 11

12 × 9 + 3 = 111
123 × 9 + 4 = 1111
1234 × 9 + 5 = 11111
12345 × 9 + 6 = 111111
123456 × 9 + 7 = 1111111
1234567 × 9 + 8 = 11111111
12345678 × 9 + 9 = 111111111
123456789 × 9 + 10 = 1111111111

10. अंकों के पिरामिड :-

9 × 9 + 7 = 88
9 × 98 + 6 = 888
9 × 987 + 5 = 8888
9 × 9876 + 4 = 88888
9 × 98765 + 3 = 888888
9 × 987654 + 2 = 8888888
9 × 9876543 + 1 = 88888888
9 × 98765432 + 0 = 888888888

11. मनोरंजक संख्याएँ:-

15873 × 7 = 111111
15873 × 14 = 222222
15873 × 21 = 333333
15873 × 28 = 444444
15873 × 35 = 555555
15873 × 42 = 666666
15873 × 49 = 777777

12. जादू 9 का:-

9 ही ऐसा अंक है, जिसमें किसी भी अंक का गुणा करने पर आए उत्तर के अंकों को जोड़ने पर 9 ही आता है।

9 × 2 = 18	1 + 8 = 9
9 × 3 = 27	2 + 7 = 9
9 × 4 = 36	3 + 6 = 9
9 × 5 = 45	4 + 5 = 9
9 × 6 = 54	5 + 4 = 9
9 × 7 = 63	6 + 3 = 9
9 × 8 = 72	7 + 2 = 9
9 × 9 + 81	8 + 1 = 9

यदि संख्या को जोड़ एक अंक से ज्यादा आता है, तो उन अंकों को भी आपस में जोड़ते हैं।

उदाहरणार्थ :-

9 × 11 = 99 9 + 9 = 18 = 1 + 8 = 9
9 × 12 = 108 1 + 0 + 8 = 9

-मु.पो. डोबरा, वाया-पिलानी
जिला-झुन्झुनू-333031
मो. 7568882071

वैदिक शिक्षा

अथर्ववेद का शिक्षा दर्शन

❒ गिरवर प्रसाद बिस्सा शास्त्री

अथर्ववेद में वर्णित शिक्षा के स्वरूप और विविध आयामों का अध्ययन करने पर सिद्ध होता है कि अथर्ववेद में यत्र-तत्र शैक्षिक उन्नयन सम्बन्धी तत्वों का क्रान्तदृष्टा मनीषियों ने साक्षात्कार किया। शिक्षा न केवल पुस्तकीय ज्ञान रहे, बल्कि शिक्षा प्राप्ति के अनन्तर व्यक्ति ब्रह्मचर्य की शक्ति द्वारा अर्जित शिक्षा से वंशवृद्धि, राष्ट्र रक्षा, धनार्जन एवं मृत्यु पर भी विजय प्राप्त करने में सक्षम बने। स्त्री और पुरुष दोनों ही शिक्षित हों ताकि समाज अपाहिज न बने। सामाजिक अभ्युदय की कामना से युवक-युवतियां दोनों गृह-गृह में शिक्षार्जन करते थे। शिक्षार्थी की बुद्धि को तीक्ष्ण बनाना भी शिक्षा का उद्देश्य था अर्थात् उसके चिन्तन को विराट सत्ता के प्रति जाग्रत करना। शिक्षार्थी नि:श्रेयस अभ्युदय की शिशाधि-(अथर्व 71/611) शिक्षार्जन में मां सरस्वती की आराधना पर विशिष्ट बल दिया गया है। उसे सुख-शांति की दाता, जीवन को मधुर बनाने वाली एवं सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाली बताया गया है। सरस्वती दाशुषे बायं दात्-(अथर्ववेद-181/141)

शिक्षा की विधि

विद्यार्थी के उपनयन संस्कार के अनन्तर वह शिक्षार्जन का अधिकारी होता था। शिक्षा का प्रारम्भ व्रत की दीक्षा से होता था। अग्नि की साक्षी में ब्रह्मचारी असत्य से सत्य की ओर अग्रसित होने का संकल्प करता था।

अग्ने व्रतवते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात् सत्यम् उपैमि।। यजु.।।5।।

तदुपरान्त विधिपूर्वक उसे गायत्री मंत्र की दीक्षा प्रदान की जाती। दीक्षा और तप के प्रति शिक्षार्थी का अनुरक्त होना अनिवार्य है तभी वह राष्ट्र की उन्नति स्वयं में तेज तथा ओज का बल प्राप्त कर सकता है।

भद्रमिच्छन्त षय: तपोदीक्षामुषनिषदेदुग्रे।
ततो राष्ट्र बलमोजश्च जातम् ।।अथ 19/41।

विषय का चुनाव आचार्य पर निर्भर था। आचार्य शिष्य की बौद्धिक, मानसिक और शारीरिक क्षमता का परीक्षण कर, उसी के अनुरूप विषय का चयन करता था ताकि शिक्षार्थी अपने जीवन में अर्जित शिक्षा का उपयोग कर सके। देवेन मना सह-(अथर्व 1/1/2) शिक्षा प्राप्ति के समय शिक्षार्थी के लिए पर्याप्त वातावरण तथा पाठ्यक्रम की रोचकता होनी चाहिए ताकि वह ज्ञानार्जन में रम जाए। तदर्थ वर्णन मिलता है कि-नि'रमय, मययेवास्तु श्रुतम्-(अथर्व 1/1/2) शिक्षा की उदात्त भावना इसी में स्पष्ट हो जाती है कि शिक्षार्थी जो भी शिक्षा प्राप्त करे वह अपने जीवन में आत्मसात कर ले। तदर्थ कहा गया है 'मेरे द्वारा प्राप्त शिक्षा मुझ में रहे। मयि एव अस्तु मयि श्रुतत्रू शिक्षक और शिक्षार्थी के लिए अनुशासन की प्रतिबद्धता थी। वाचपतिनं यच्छन्तु-(अथर्व 1/1/3)।

शिक्षार्थी की मौन-चिन्तन साधना ही शिक्षा की पूर्णता नहीं, अपितु उसमें वक्तृत्व शक्ति का भी समुचित विकास करना परमावश्यक है।

अतः एक मंत्र में सूर्य और उषा की तरह वाणी को उन्नत करने का भी उल्लेख है।

'उदुषा उदु सूर्य उदिदं मामकं वचः ।।
अथर्ववेद 4/4/2

शिक्षण विधि क्या हो ? इस सम्बन्ध में उल्लेख मिलता है कि गुरु और शिष्य प्रश्नोत्तर विधि से ज्ञानार्जन करें। इसके लिए 'प्राश्' (प्रश्न कर्त्ता) 'प्रति-प्राश्' (उत्तर दाता) दो शब्द आए हैं। किसी विषय विशेष पर छात्रों को पक्ष और विपक्ष में अपने चिन्तन को रखने का भी प्रावधान होना चाहिए ताकि बुद्धि परिमार्जित हो सके।

शिक्षक के गुण

आचार्य आचरण की शिक्षा देने वाला है। अतः उसे स्वयं को संयमी और ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला होना चाहिए आचार्यो ब्रह्मचारी (अथर्व-5/133/5) आचार्य को 'वाचस्पति' और 'वसोष्पति' शब्द से संबोधित किया गया है। अर्थात वह वाणी तथा विविध विषयों का उद्भद विद्वान होना चाहिए। पंच-तत्वों के गुण धर्मों को जानने वाला हो। आचार्य शिक्षार्थी के चरित्र का निर्माण कर उसे मनुष्य बनाता है अतः उसे 'भूतकृत' कहा गया है।

अर्थवेद में आचार्य को मृत्यु, सोम, वरुण, औषधि और पयस् नाम से भी अभिहित किया गया है। आचार्यो। मृत्युर्वरुणः सोम औषधयः पयः। (अथर्व 11/5/14) इस मंत्र में आचार्य के गुण धर्मों का उल्लेख किया गया है। आचार्य सर्वप्रथम शिष्य को मृत्यु से अमृत की ओर ले जाए यथा 'मृत्योर्मा अमृतं गमय।' वह छात्रों के दुर्गुणों का परिमार्जन करता है अतः वह वरुण है। वह स्नेह, दया तथा ममता का आह्लादक है, अतः सोम है। औषध के तुल्य निरोगता तथा बल की भांति जीवनदान देता है। आचार्य निरुक्तकार ने भी संक्षिप्त रूप से आचार्य शब्द को व्याख्यायित करते हुए लिखा है- 'वह आचार की शिक्षा देता है, अर्थात् उपयोगी विषय तथा अन्नादि संग्रह कराता है तथा बुद्धि को विकसित करता है।

'आचार्य कस्मात् ? आचार्य आचारं ग्राहयति। आचिनोत्यर्थान्। आचिनोति बुद्धिमिति वा।।' निरुक्त 1/4।।

शिष्य के गुण

अथर्ववेद में शिक्षार्थी के गुण और कर्तव्यों का बोध कराने वाला 'ब्रह्मचर्य सूक्त' है। उसमें प्रतिपादित किया गया है कि शिक्षार्थी चाहे युवक हो, चाहे युवती, ब्रह्मचर्य का पालन करे तथा उसका जीवन संयममय हो। ब्रह्मचारिणमिच्छते-(अथर्व 11/5/17) शिक्षार्थी के प्रमुख चार गुण हैं-(1) समिधा-यज्ञ द्वारा तेज प्राप्त करना (2) मेखला- कटि सूत्र धारण करना अर्थात् दृढ़ निश्चयी होना। (3) श्रम-कठोर परिश्रम करना (4) तपस्-तपश्चर्या करना। इन चारों के होते हुए संसार को तृप्तकर सकता है। अर्थात् शिक्षा प्राप्ति के अनन्तर अपने राष्ट्र के विकास में समर्पित हो सकता है। ब्रह्मचारी समिधा मेखलया, श्रमेण, लोकान् तपसा पिपर्ति।। (अथर्व-11/514) वह प्राप्त ज्ञान का विरोध न करे अर्थात् उसमें यह हीन भावना कभी नहीं आनी चाहिए कि जो मैंने विद्या प्राप्त की है वह बेकार है। यदि मैं और किसी प्रकार की विद्या प्राप्त करता तो मेरा अभ्युदय शीघ्र होता। या श्रुतेन विराधिषि--(अथर्व-1/1।4)

ब्रह्मचारी कृष्ण धर्म पहनें तथा दाढ़ी धारण करें कार्ष्ण वासानों दीक्षितो दीर्घ श्मश्रुः । (अथर्व-3/1।6) ब्रह्मचारी के लिए भिक्षावृत्ति का विधान था। ब्रह्मचारी भिक्षा या चभार-(अथर्व-3/11/7)

आचार्य-शिष्य सम्बन्ध

आचार्य अधिकारपूर्वक उपनयन संस्कार से पूर्व तीन दिन तक ब्रह्मचारी बनने वाले को अपने आश्रम में रखता था। आश्रमोचित गुणधर्म का उसमें विकास होने की अवस्था की प्रामाणिकता की पुष्टि करके, आचार्य उसका उपनयन संस्कार कर देता था। जिस प्रकार गर्भस्थ बालक का जन्म होता है।

आचार्य उपनयमानो कृणुते गर्भमन्तः।
तं रात्रीस्तिस्र उदरे बिभर्ति तं जातम् ।।
(अथर्व 11/5।3)

आचार्य और शिष्य एक दूसरे के प्रति शुभ की आकांक्षा से ओतप्रोत होते हैं। प्रतिदिन यज्ञ के अनन्तर शिष्य अग्नि से प्रार्थना करता है कि उसे दीर्घायु बनाएं और आचार्य को अमर करें। आयुस्मासु धेहि अमृतत्वम् आचार्याम् ।। (अथर्व-19/64/4) अर्थात् शिष्य दीर्घजीवी बनकर अपने गुरु के ज्ञान को इतना विस्तृत फैलाएं ताकि अपने गुरु का नाम अमरत्व की श्रेणी में आ सके। इतनी उदात्त भावना दोनों में परिलक्षित होती है। गुरु को पिता से ज्यादा सम्मान दिया जाए।

वैदिक यज्ञ संस्था ही शिक्षार्जन की मूलभूत इकाई है। अथर्ववेद में शिक्षा के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए ऋषि समिधा डालते हुए अग्नि से प्रार्थना करता है। हमें श्रद्धा वेद, आचार्य एवं बड़ों के प्रति (मेधा सन्तान, धन, आयुष्य की धारणा शक्ति) जीवन को शतायु एवं सर्वथा निरोग रहने की समर्थता प्राप्त हो।

श्रद्धां च मेधां च प्रज्ञया च धनेन च।
आयुरस्मासु धेहि अमृतत्वम् ।।
(अथर्व 19/64-14)

कहा जा सकता है कि अथर्ववेद में वर्णित शिक्षा पद्धति उदात्त सिद्धान्तों पर आधृत है। ब्रह्मचर्य की तपश्चर्या सभी के लिए अनिवार्य है क्योंकि ब्रह्मचर्य के तप-बल से ही राष्ट्र रक्षा, धनार्जन, वंश वृद्धि एवं मृत्यु पर विजय प्राप्त की जा सकती है। शिक्षा सोद्देश्य तथा व्यवसायोन्मुखी होनी चाहिए। इस बात का अथर्ववेद में विशद वर्णन किया गया है ताकि शिक्षार्जन के पश्चात शिक्षार्थी निराशापूर्वक जीवन व्यतीत न करें।

डी-2 मुरलीधर व्यास नगर , बीकानेर-334004
मो. 9413461194

रपट

41वीं राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता

❒ वीरेन्द्र सिंह पंवार

41 वीं राज्यस्तरीय मंत्रालयिक खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता दिनांक 27 से 30 दिसम्बर 2013 तक बीकानेर की सादुल पब्लिक स्कूल के प्रांगण में सम्पन्न हुई। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि अन्तर्राष्ट्रीय फुटबॉल खिलाड़ी श्रीमगनसिंह जी राजवी एवं विशिष्ट अतिथि निदेशालय के संयुक्त निदेशक श्री शिवजीराम चौधरी थे। उद्घाटन समारोह के मौके पर मुख्य अतिथि श्री राजवी ने कहा कि खेल को खेल की भावना से खेलना चाहिए साथ ही उन्होंनें उक्त खेल को जीवन में उतारने तथा खेलों को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाऐं ताकि कर्मचारी स्वस्थ एवं स्फूर्त बना रह सके।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री चौधरी ने अपने उद्बोधन में कार्यक्रम की विस्तृत रूप रेखा की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि खेल जीवन भर स्फूर्ति देने वाला है तथा शिक्षा विभाग इसके लिए साधुवाद का पात्र है जिन्होंने अपने कार्मिकों को स्वस्थ एवं स्फूर्त बनाये रखने के प्रयासों को बनाये रखनेका उचित प्रयास किया है जो कि एक अच्छा प्रयास है। उद्घाटन समारोह के दौरान जोधपुर से आए कलाकारों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत कर सभी दर्शकों को मंत्र-मुग्ध कर दिया। सभी मंडलों की ओर से मार्चपास्ट किया गया और अतिथियों ने परेड की सलामी ली। मार्च पास्ट में आनंदसिंह सहायक कर्मचारी के नेतृत्व में निदेशालय के खिलाड़ी कर्मचारियों द्वारा मार्चपास्ट किया गया। उद्घाटन के तुरन्त बाद शाला प्रांगण के मैदान में खेल प्रारम्भ हुए। प्रतियोगिता समाप्ति पर फुटबाल का खिताब चूरू मंडल ने प्राप्त किया तो दूसरा स्थान उदयपुर तो तृतीय स्थानपर निदेशालय बीकानेर रहा। वॉलीबॉल में प्रथम स्थान चूरू मंडल ने प्राप्त किया तो दूसरा स्थान अजमेर मंडल एवं तृतीय स्थान निदेशालय बीकानेर ने प्राप्त किया। बास्केटबाल में अजमेर मंडल प्रथम, चूरू द्वितीय तथा निदेशालय तीसरे स्थान पर रहा। कबड्डी में उदयपुर के एक खिलाड़ी कर्मचारी के खेल के दौरान चोट लगने से पैर में फैक्चर हो गया। स्थानीय प्रतियोगिता होने के कारण निदेशालय की महिलाओं ने भी बैडमिंटन व्यक्तिगत स्पर्द्धा में हिस्सा लिया और वे विजयी हुई। बैडमिंटन में अजमेर प्रथम स्थान पर रहा तो कैरम में निदेशालय ने श्री मधुसूदन किराडू के पिताजी के निधन के बावजूद श्री महेन्द्रसिंह रावत, हीरालाल किराडू एवं विष्णु दत्त पुरोहित ने प्रथम स्थान दिलाया।

उक्त प्रतियोगिता हेतु फुटबाल एवं उद्घाटन समारोह तथा एथलेटिक्स प्रतियोगिताऐं सादुल स्पोटर्स स्कूल के प्रांगण में आयोजित की गई। सांस्कृतिक कार्यक्रम के सुगमसंगीत के महिलावर्ग में प्रथम स्थान उदयपुर ने प्राप्त किया तो दूसरा स्थान अजमेर व जयपुर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। पुरूषवर्ग में निदेशालय के किशनकिराडु ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम महारानी स्कूल के बाहर स्थित हॉल में रखा गया था। सर्द मौसम होते हुए भी दर्शकों ने रंगारंग सांस्कृतिक संध्या का आनन्द लिया।

एथलेटिक्स प्रतियोगिता में अजमेर मंडल, चूरू मंडल का दबदबा रहा तो 40 वर्ष से अधिक आयु में 100 मीटर, 200 मीटर व 600 मीटर तथा ऊंची कूद में निदेशालय के कार्मिक श्री अनिल पुरोहित, नत्थूसिंह व श्री अजय आचार्य, श्री सुनील स्वामी व सहयोगी खिलाड़ी साथियों ने परचम फहराया। पूरी प्रतियोगिता में आयोजकों द्वारा अच्छी व्यवस्था की गई थी।

निदेशालय बीकानेर इस प्रतियोगिता के आयोजक थे। उनके द्वारा आंगन्तुक खिलाड़ियों के ठहरने तथा गर्म पानी की व्यवस्था एवं दिनांक 26.12.2013 को सुबह का भोजन सादुल पब्लिक स्कूल परिवार द्वारा दिया गया तो 27 से 29 तक प्रतिदिन आगुन्तकों एवं खिलाड़ियों के भोजन की व्यवस्था महारानी स्कूल में रखी गई जिसमें श्री सुरेश व्यास एवं उनकी पूरी टीम मनोयोग के साथ इस आयोजन को पूर्ण करने में जुटे रहे उसमें सर्व श्री मुकेश धूडिया, आनन्द साध, भारतसिंह, अखिल स्वामी आदि अनेक युवा इस कार्य को मूर्त रूप देने में जुटे रहे जो कि विशेष रूप से बधाई एवं साधुवाद के पात्र हैं तथा श्री इदरीश मोहम्मद उपनिदेशक, खेलकूद निदेशालय ने अपनी सेवानिवृति के दिन तक निदेशालय को मिले आयोजन के मौके को यादगार बनाते हुए पूर्ण तल्लीन होकर इस कार्य को अंजाम देकर इस प्रतियोगिता को सफल बनाने हेतु रात दिन लगे रहे एवं सादुल स्पोटर्स स्कूल के छात्र एवं अध्यापक तथा पूर्ण स्टाफ एवं शारीरिक शिक्षकों ने भी अपनी प्रशंसनीय सेवाएं देकर इस प्रतियोगिता को सफल बनाया इस हेतु वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री गोपाल जोशी नगर विधायक बीकानेर पश्चिम ने अपने उद्बोधन में खेल को खेल की भावना से खेलने पर सभी विजेता खिलाड़ियों को बधाई दी तथा जो विजेता नहीं बन सके उन्हें अगले वर्ष की प्रतियोगिता हेतु अभी से तैयारियों में जुटने तथा अगले वर्ष विजेता होने के प्रयास करने हेतु उत्साहित किया गया। लगातार 41 वर्ष तक उक्त प्रतियोगिताएं आयोजित होती रही इसके लिए भी नगर विधायक श्री गोपाल जोशी ने विभाग एवं कार्मिकों को बधाई दी। उन्होंने इस स्कूल में घुड़सवारी, तैराकी आदि के प्रतियोगी भी तैयार करने हेतु शाला प्राचार्य से एक रिपोर्ट भी तैयार कर भिजवाने का आग्रह किया ताकि राज्य सरकार से सम्पर्क कर उक्त खेलों को सम्मिलित कराने की कार्यवाही की जा सके। सभी प्रतियोगियों को 2013 को विदा कर नववर्ष की बधाई देते हुए पूरे उत्साह और उमंग के साथ आने वाले वर्ष में अपने कार्य को अंजाम देने हेतु प्रोत्साहित किया गया। विशिष्ट अतिथि निदेशालय के श्री पी सी मावर थे। पूरी प्रतियोगिता में विजयी खिलाड़ियों को पारितोषिक वितरण किया गया अन्त में झंडावतरण किया गया और आगामी प्रतियोगिता हेतु झंडा जोधपुर मंडल से अलग हुए नवीन पाली मण्डल को सुपुर्द किया गया। इसी दौरान अंतिम प्रतियोगिता में सम्मिलित होने वाले कार्मिक, जो आगामी प्रतियोगिता से पूर्व सेवानिवृत होने वाले हैं, को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

आगामी प्रतियोगिता के सपने संजोए सभी कार्मिक प्रतियोगिता समाप्ति के पश्चात अपने अपने गंतव्य की ओर नई ऊर्जा के साथ आगामी प्रतियोगिता में फिर मिलने का भरोसा जताते हुए विदा हुए।

-पुस्तकालयाध्यक्ष
प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर
मो. 9828600088

शिक्षा और शिक्षक

मरुधरा को मिलकर स्वर्ग बनाएंगे

❒ डॉ. आर. पी. कर्मयोगी

वर्तमान में विज्ञान के चमत्कारों से व्यक्ति आश्चर्यचकित है। धरती से आकाश तक दूरियाँ नाप डाली हैं, पर जीवन की धाराएँ सूख रही हैं। जड़ता से ग्रसित है। व्यक्ति का व्यक्तित्व बोझिल और धूमिल होता जा रहा है। संवेदनाएँ शुष्क हो चुकी हैं। सिकुड़ा हुआ सोच स्वार्थ में आकंठ डूबा है। यहाँ तक कि आत्मीयता विकास में साधक के बजाए निरंतर बाधक बनती जा रही है। मानवता कराह रही है। इसमें दानवता का ताण्डव किससे छिपा है ? जीवों में मुकुटमणि कहा जाने वाला मनुष्य अब जैसे श्रेष्ठता खो चला हो। जीवन में समस्याओं की जकड़न ने उसे आक्रोश-आतंक के हवाले कर दिया है। उसकी विद्रूपता ने उसके मूल स्वरूप पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। पढ़ा लिखा डिग्रीधारी व्यक्ति संसार के लिए समस्या बन रहा है। इस बिगड़ैल स्थिति से सब परिचित हैं। दो स्थितियाँ हैं या तो लोग इसके विरोध का साहस नहीं कर पा रहे या इतने भयभीत हैं कि मौन रहने में ही अपना भला समझते हैं। इन परिस्थितियों में लगता है कि शिक्षा भी कोई मदद नहीं कर पा रही, बल्कि अपराधी और आतंकवादियों की लिस्ट में पढ़ा लिखा आदमी पहले नम्बर पर नजर आता है।

राष्ट्र के विकास पर दृष्टिपात करें तो शिक्षा ही वह तंत्र है, जो किसी राष्ट्र के विकास में सर्वाधिक सहायक होती है। स्कूलों में नागरिकों का जैसा निर्माण होता वैसा ही समाज और सामाजिक मूल्यों का विकास भी होता चला जाता है। इसलिए आवश्यक यह कि शिक्षा के तंत्र को भारतीयता के अनुकूल ढाला जाए, पर वस्तुस्थिति तो यह है कि ब्रिटिशकालीन शिक्षा पद्धति से हम उबर ही नहीं पा रहे हैं। आज भी शिक्षा, परीक्षा और पाठ्यक्रम के चौखटे में जकड़ी है। नौकरियों की तलाश में फिरती है। अंग्रेजों ने जिस बाबूगिरी की आवश्यकता समझी थी वह आज भी बरकार है। शिक्षा पर जब गहराई से विचार करते हैं तो पहले शिक्षक ही सामने आता है। शिक्षा के पुरोधा भी शिक्षक ही हैं। परिवार का वातावरण और सामाजिक प्रवृत्तियों की छाप भी छात्र पर अपना कब्जा जमाती जाती है। इन परिस्थितियों में छात्रों का निर्माण भी कैसे हो ? चारों ओर अवांछनीयताओं का साम्राज्य है। पाठ्यक्रम और पाठ्यवस्तु में भी जीवन मूल्यों का अभाव उसे उत्कृष्टता और श्रेष्ठता की ओर उमंगित नहीं करता। इस स्थिति में नजर शिक्षा पर ही टिकती है।

शिक्षा का तात्पर्य है जीवन निर्माण। प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि क्या छात्र में पाठ्यवस्तु रटने के अतिरिक्त जीवन को सँवारने की ललक पैदा होती है ? आज इसका नितांत अभाव है। क्यों ? इसके लिए हमें यह समझना होगा कि कोई व्यक्ति जन्म के समय कोरी स्लेट नहीं होता वह कुछ प्रगाढ़ संस्कारों और उन आस्थाओं के साथ जन्म लेता है जो पूर्व जन्मों से उसके साथ संचित होती रही है। यही आस्थाएँ अन्दर-ही अन्दर अपना संसार रचती रहती हैं और अन्दर से बाहर आने को बेचैन रहती हैं। आस्थाएँ व्यक्ति की चिर संगिनी है अतः इनकी ही पूर्ति में व्यक्ति स्वयं को नियोजित करने में लगा रहता है। मन मस्तिष्क पर ये ही अड्डा जमाए रहती हैं। इन्हीं के अधिगम में छात्र रुचि लेता है।

इन आस्थाओं के अनुरूप ही वह सोचता है, वैसी बातों में ही रुचि लेता है। वैसा ही साहित्य पढ़ना चाहता है, वैसे ही चित्र देखना चाहता है। धीरे-धीरे यह सब उसके स्वभाव में घुलता मिलता चला जाता है। कालांतर में यह स्वभाव ही उसकी आदत बन जाता है और फिर यही उसके आचरण को निर्धारित करने लगता है। सोचिए। जब मन मस्तिष्क अवाँछनीयताओं से भरा होगा तब पढ़ने और उसे समझने के लिए स्थान ही कहाँ बचेगा ?

यहाँ शिक्षक के समक्ष बड़ी चुनौती है। वह पहले उसकी उस चेतना और अन्तःकरण को परिमार्जित करे जहाँ ज्ञान के बीज जम सकते हैं। मनोविकारों का इस प्रकार उत्खनन करे कि फिर बुद्धि कौशल के लिए स्थान रिक्त हो। जब तक ज्ञान को रूपांतरण करने की स्थिति नहीं बनेगी तब तक हम मानव और महामानव तैयार करने की कल्पना भी नहीं कर सकते ! इसलिए मैं कहता हूँ कि छात्र शिक्षक की पहली पाठ्यपुस्तक है। वह उसे जितनी गहराई से पढ़ लेगा उतना ही सफल होगा। इस चुनौती को स्वीकार करना बहुत कठिन कार्य है, पर शिक्षक इस कठिनाई से मुँह भी तो नहीं मोड़ सकता।

यहाँ शिक्षक की स्थिति पर भी विचार करना सर्वथा अपेक्षित है। शिक्षक का दुहरा कार्य है। एक है छात्रों के मनोविकारों का उत्खनन और दूसरा है संस्कारों का संवर्धन। एक ओर तो उसे ज्ञान के मोर्चे पर लड़ना होता है और दूसरी ओर भाव संवेदनाओं से लेकर उच्चतम मूल्यों का विकास करना। फिर मात्र पढ़ाना नहीं, अपितु पढ़ने की उत्प्रेरणा और ऐसे अवसर उपलब्ध कराना जिनमें छात्र स्वयमेव पारंगत होना सीख जाए। उसके लिए उसे ज्ञान के अथाह सागर में डूबना होगा और जीवन के उच्चतम मूल्यों को प्राप्त करना होगा। वह छात्रों का इस तरह निर्माण करे कि वे मात्र किताब खाँ बनकर ही न रह जाएँ, अपितु वे हों साहिब-ए-किताब।

शिक्षक का दायित्व है डिग्री के साथ-साथ उत्कृष्ट व्यक्तित्व उभारना। छात्रों के जीवन निर्माण के लिए स्वयं को दांव पर लगा देना। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि जीवन निर्माण की शिक्षा मात्र पुस्तकों से नहीं मिलती। मित्रों! दीप से दीप जलता है। प्राण से प्राण सचेत होता है। चरित्र को देखकर चरित्र बनता है। आज का शिक्षक चरित्र नहीं दे पा रहा, इसलिए छात्र जीवन को हारता है और सच्चा मनुष्य नहीं बन पाता। सच मायने में बच्चों के सामने शिक्षकों का गलत व्यवहार एक अपराध है। जो जीवन को प्रभावित न करे वह शिक्षा किस काम की !

जब तक शिक्षक अनुशासित नहीं होंगे तब तक छात्रों से अनुशासन की अपेक्षा कैसे की जा सकती है? विद्यालय के वातारण को अनुशासित बनाए रखना शिक्षक का पहला कर्तव्य है। शिक्षक साँचा बनें जिसमें अच्छे-से-अच्छे बच्चे ढल सकें।

शिक्षक यह सोचें कि उन्हें छात्रों के जीवन निर्माण का कार्य सौंपा गया है। अतः साँचा बनना ही पड़ेगा ! क्रेन की तरह काम करना पड़ेगा। छात्रों के व्यक्तित्व को खरादने का काम करना पड़ेगा। अभी तो हम बिना रीढ़ के आदमी बना रहे हैं। अच्छे इन्सान बनाइए। मानव

की शक्ल में दानव न हों। मुश्किल बहुत है। छात्रों को हम ज्ञानवान ही नहीं, गुणवान भी बनाएँ। साथ ही वे संघर्षशील और जुझारू भी हों। वे अनीति अन्याय के खिलाफ मोर्चा खड़ा कर सकें। इसके लिए शिक्षा में वैचारिक क्रान्ति लानी होगी। देखिए, हमारे पौराणिक पावन ग्रंथ एवं विद्वान क्या कहते हैं–

- **वेद**–शिक्षा व्यक्ति को आत्मविश्वासी और स्वार्थहीन बनाने वाली हो।
- **उपनिषद**– सा विद्या या विमुक्तये।
- **पाणिनी**– शिक्षा वह है जो प्रकृति के साथ अनुकूलन सिखाए।
- **कौटिल्य**– शिक्षा स्वयं को पहचानना और फिर जानना सिखाए।
- **शंकराचार्य**–शिक्षा स्वयं को पहचानना और फिर जानना सिखाए।
- **विवेकानन्द**–निहित दैवी पूर्णता का प्रत्यक्षीकरण।
- **डॉ. राधाकृष्णन**–शिक्षा को मनुष्य और समाज का निर्माण करना ही चाहिए।
- **रवीन्द्रनाथ टैगोर**–शिक्षा का काम केवल बोद्धिक विकास करना नहीं, बल्कि मानव की कोमल वृत्तियों का विकास करना है।
- **आचार्य पं. श्रीराम शर्मा**–शिक्षा समग्र व्यक्तित्व का विकास करे और महामानव बनाए तथा जीवन संग्राम में विजेता बनाए।

शिक्षा ज्ञान का आधार है तो संस्कृति व्यवहार का। दोनों के मेल से ही होता है समग्र जीवन का विकास। शिक्षा का मौलिक स्वरूप है व्यवहारों में परिवर्तन जीवन हो उन्मुक्त हमारा कहीं न कोई आवर्तन। शिक्षकों को निम्नलिखित पर ध्यान देना होगा–

(अ) वैयक्तिक मूल्य

1. निज का व्यक्तित्व विकसित करें।
2. नियमितता, निरंतरता, तत्परता का अनुसरण करें।
3. प्रार्थना में शामिल हों।
4. कक्षा में समय से पहुँचें।
5. छात्रों से अनर्गल बातें न करें।
6. छात्रों के साथ सचमुच का आत्मीय व्यवहार हो।
7. शिक्षकों की जीवन शैली अनुकरणीय हो।
8. प्रत्यक्ष और परोक्ष सभी दृष्टियों से छात्रों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करें।
9. कुछ ऐसा हो कि छात्र शिक्षक को देखकर अपने जीवन का नक्शा बन सकें।
10. शिक्षकों की अन्तश्चेतना छात्रों के अन्तःकरण में प्रवेश कर उनकी चेतना को प्रशिक्षित कर सकें।
11. कुलार्णव तंत्र के अनुसार शिक्षक, प्रेरक, सूचक, वाचक, दर्शक और बोधक हो।

(ब) व्यावसायिक मूल्य

1. अध्यवसायी
2. ज्ञान का अथाह सागर।
3. कल्पनाशील
4. बोध, शोध और सृजन को समर्पित।
5. सहायक शिक्षक सामग्री का उत्पादन।
6. कन्सेप्च्युल शिक्षण।
7. छात्रों को ज्ञान की परिधि के अन्दर तक प्रवेश कराना।
8. नवाचार
9. क्रियात्मक अनुसंधान।
10. शिक्षण से बुद्धि नियंत्रण और हृदय में रूपांतरण।
11. ज्ञान और गुण के समन्वय से अध्यापन का नियोजन एवं व्यवस्थापन।
12. मात्र पढ़ाना नहीं, अपितु पढ़ने के अवसर प्रदान करना।
13. ऐसा शिक्षण जिससे ज्ञान का उद्भासन हो।
14. सेमीनार, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं आदि का सम्यक् आयोजन।

यूनेस्को ने शिक्षा को इस ढंग से विश्लेषित किया कि :–

Learning to Know
Learning to do
Learning to be
Learning to live Together

डॉ. राधाकृष्णन आयोग से लेकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 तक शिक्षा में अनेक सुधार सुझाए गए, परन्तु आज तक हम शिक्षा का स्वरूप बदल नहीं पाए। शिक्षकों का वर्गीकरण करते हुए कहा जाता है–

Bad teacher complains
Average teacher explain
A good teacher Facilitate
A great teacher inspires

अतः आज देश को Great Teacher की जरूरत है जो बच्चों को प्रेरित व प्रोत्साहित कर उन्हें आगे बढ़ने का मार्ग दिखा सकें।

–निदेशक
स्कूल ऑफ एजूकेशन
देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शांतिकुंज, हरिद्वार

आई लव रिडिंग

सीबीएसई स्कूलों में खुलेंगे कथा क्लब

❒ पवन कुमार स्वामी

विद्यालय स्तर से ही छात्र-छात्राओं में रचनात्मक लेखन क्षमता, कहानी कहने तथा ऐसी ही साहित्योन्मुखी प्रतिभाओं को विकसित करने के उद्देश्य से केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने पहल की है। अब भविष्य में मुंशी प्रेमचन्द और महादेवी वर्मा जैसे साहित्य मनीषि साहित्य संवर्द्धन के लिए उपलब्ध होंगे, यह निश्चित है। सीबीएसई की आई लव रिडिंग प्रोजेक्ट के तहत नई दिल्ली में बीते वर्ष के अन्त में एक चार दिवसीय कार्यशाला (27-30 दिसम्बर 2013) आयोजित की गई जिसमें छात्र-छात्राओं के साथ उनके अभिभावकों एवं शिक्षकों को भी आमंत्रित किया गया। शिक्षक इसलिए कि वे अपने अध्येता छात्र-छात्राओं में उनके ध्यान में आई प्रतिभाओं के बारे में प्रशिक्षकों को बता सकें तथा चार दिनों की कार्यशाला के पश्चात अनुश्रवण करते हुए बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को आगे बढ़ाने में मदद कर सके तथा माता-पिता इसलिए कि वे घरों पर इन योग्यताओं को आगे बढ़ा सके।

यह उल्लेखनीय है कि सीबीएसई के स्तर से विद्यार्थियों में साहित्यक क्षमता निखारने के लिए कथा क्लब परियोजना पहले से चल रही है और इसी परियोजना को आगे बढ़ाते हुए I Love reading परियोजना का सूत्रपात किया गया है। सीबीएसई के एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार बोर्ड द्वारा उससे सम्बद्ध स्कूलों में कथा क्लब स्थापित किए जाकर उनके माध्यम से उन बच्चों को चिन्हित किया जाएगा जिनमें एक लेखक मौजूद है। फिलहाल यह परियोजना प्रायोगिक तौर पर नई दिल्ली में शुरू की गई है जिसे परिणामों को देखकर पूरे देश में लागू करने पर विचार किया जाएगा।

–अध्यापक, रा.प्रा.वि., सुगनारामजी की ढाणी,
अक्कासर, पं.स. कोलायत, बीकानेर
मो. 9784314944

बाइबल का शिक्षा दर्शन

प्रेम बिना यह जीवन तो अनजाना है

❒ डॉ. जमनालाल बायती

वर्तमान संसार के सामने आज जो भी समस्याएँ हैं उनमें शैक्षिक पुनः निर्माण की समस्या सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। स्वतंत्र भारत में शिक्षा व्यवस्था अंग्रेजों द्वारा प्रचलित शिक्षा पद्धति में ही साधारण फेर-बदल के साथ चलाई जा रही है। इस व्यवस्था से प्रत्येक क्षेत्र में असन्तोष है। बाइबल के शैक्षिक विचार वर्तमान व भविष्य की समस्याओं के निराकरण हेतु अत्यन्त लाभदायक व सुझावात्मक हो सकते हैं। बाइबिल के अनुसार शिक्षा प्रेम पर आधारित है। उसमें वे तत्व विद्यमान हैं जो समय और स्थान पर ध्यान देते हुए समस्त मानव जाति के कल्याण तथा उसकी आत्मिक सुख-शान्ति व समृद्धि में सहायक हो सकते हैं। बाइबल में मानवता, विश्व बन्धुत्व एवं शान्ति के ऐसे तत्व समाहित हैं जो न केवल भारतीय बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के भी अंग बनने चाहिये। इसी बात को ध्यान में रखते हुए बाइबल के शैक्षिक विचार भी आज की शिक्षा में समाविष्ट किये जा सकते हैं, जो आधुनिक भारत के सांस्कृतिक, राष्ट्रीय, प्राकृतिक, भौतिक, व्यावहारिक तथा आध्यात्मिक विकास में सहायक हो सकते हैं, तथा विश्व में उत्थान के पथ पर भारत को उच्च स्थान दिला सकते हैं।

बाइबल को लगभग 40 लेखकों ने सोलह सौ वर्षों की अवधि में लिखा-अनुवाद किया, जो विभिन्न वर्गों के लोग और विश्व के विभिन्न भागों के निवासी थे। 'बाइबल' शब्द यूनानी शब्द 'बाइब्लोस' से लिया गया है जिसका अर्थ है 'पुस्तकों का समूह'। बाइबल छियासठ पुस्तकों का एक संग्रह है, जो दो प्रमुख भागों में विभक्त है, एक पुराना नियम है जिसमें उनचालीस पुस्तकें हैं, और दूसरा नया नियम जिसमें 'सत्ताइस' पुस्तकें हैं। पुराना नियम मूलतः इब्रानी भाषा में और नया नियम यूनानी भाषा में लिखा गया है।

पृथ्वी और उसकी परिपूर्णता परमेश्वर का श्रेष्ठ कार्य है और यह उसने प्रेम के वश होकर किया है। उसने मनुष्य की अपने स्वरूप में रचना की। मनुष्य को चुनाव करने की स्वतंत्रता भी दी, पर मनुष्य ने अनुचित चुनाव किया और परमेश्वर से अलग हो गया। जब तक वह पश्चाताप नहीं करे, परमेश्वर का सत्संग नहीं पा सकता। पश्चाताप का संदेश देने को परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को भेजा। प्रभु यीशु ने पिता के प्रेम और अनुग्रह का संदेश दिया। यीशु के संदेश को पवित्र आत्म कार्य रूप में परिणित करता है। उसी की प्रेरणा से व्यक्ति पश्चाताप करता है और पिता के ग्रहण योग्य बनता है। पिता के साथ पुनः लौटना ही व्यक्ति की 'मुक्ति' है। मुक्ति का अर्थ छुटकारा है, अर्थात् विद्रोह की भावना का त्याग। उपरोक्त मुक्ति का सर्वोत्तम दृष्टान्त 'उड़ाऊ पुत्र' है।

बाइबल प्रमुख रूप से परमेश्वर और उसके साथ हमारे सम्बन्ध के विषय की पुस्तक है, यह एक ऐसा विषय है जो हम में से प्रत्येक से सम्बन्ध रखता है। बाइबल के अन्त में लिखे गये भाग भी लगभग दो हजार वर्ष पुराने हो गये। बाइबल एक हजार से अधिक भाषाओं में लिखी गई है, परन्तु वर्तमान में पैंतालीस भाषाओं में उपलब्ध है।

बाइबल का शिक्षा दर्शन– बाइबल से ही हम सर्वोच्च आध्यात्मिकता, नैतिक सामाजिक, व्यावहारिक, प्राकृतिक आदि ज्ञान को प्राप्त करते हैं। इसमें मानव जीवन के विकास के इतिहास का पूर्ण विवरण है। भारतीय दर्शन में मानव ने दो प्रमुख प्रवृत्तियों, निवृत्ति मार्ग एवं प्रवृत्ति मार्ग को चुना, वहीं सामान्य व्यक्ति ने प्रवृत्ति मार्ग की उपादेयता को जाना। बाइबल ही प्रवृत्ति मार्ग की नई दिशा की ओर संकेत करती है।

शिक्षा का क्षेत्र–बाइबल के अनुसार शिक्षा का क्षेत्र बड़ा विस्तृत और व्यापक है, शिक्षा जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है तथा अनुभव के द्वारा हमारे व्यवहार में जो भी परिवर्तन आते हैं या जीवन में लचीलापन आता है, वे सब शिक्षा के फलस्वरूप ही है। शिक्षा ही ज्ञान का चक्षु है जिसके बिना अन्धत्व की स्थिति पैदा हो जाती है।

शिक्षा के उद्देश्य– बाइबल के अनुसार, शिक्षा के उद्देश्य 1. आत्मबोध के लिए शिक्षा, 2. शोषण से मुक्ति, 3. विवेक का विकास, तथा 4. कल्याण के लिए ईश्वरीय इच्छा आदि उभर कर सामने आते हैं। बाइबल में आत्म ज्ञान की शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। बाइबल के अनुसार शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य मनुष्य को उस अज्ञान से मुक्त कराना है जो भेद उत्पन्न करने वाला है, आत्मानुभूति में बाधक है तथा उसे उस सीमा तक प्रकाश में ले जाना है जो भेद में अभेद का दर्शन करवाता है, जो सभी प्राणियों में संस्थित परमात्मा की अनुभूति करवाता है।

बाइबल के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य बालक द्वारा मात्र सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करना ही सीखना नहीं है, अपितु अन्तरात्मा की आवाज को सुनने, समझने एवं सोच-समझ कर उसका अनुसरण करने की योग्यता प्रदान करना भी है। इसी से बालक में विवेक का विकास हो सकता है।

बाइबल के अनुसार शिक्षक-शिक्षार्थी का सम्बन्ध– बाइबल के अनुसार शिक्षक शिक्षार्थी का सम्बन्ध बहुत कोमल होता है। जिस प्रकार पिता की अधीनता पुत्र के लिए अपेक्षित है उसी प्रकार शिक्षक की अधीनता शिक्षार्थी के लिए अनिवार्य है। शिक्षक को अपने ज्ञान, व्यक्तित्व, अध्यापन कला तथा चरित्र के प्रभाव से शिक्षार्थी को प्रभावित करना चाहिये, अतः दोनों में आत्मीयता-पूर्ण सम्बन्ध होने चाहिये।

अनुशासन– बाइबल के ईश्वर के भय से स्व- अनुशासन की भावना को भी प्रोत्साहन दिया गया है। सामाजिक अनुशासन के लिए बाइबल ने सामुदायिक तथा सहयोगी जीवन के साथ आदर्शात्मक अनुशासन का भी समर्थन किया है। अतः सम्पूर्ण अनुशासन पद्धति का आधार बच्चों में व्यवस्था के प्रति चाहिये कि वह ईश्वर से दूर न हो जाये।

चरित्र-निर्माण– बाइबल के अनुसार ईश्वर के समान परोपकारी के रूप में जीवन व्यतीत किया जाये वही वास्तव में सद्चरित्र है। जैसा कि स्वतः प्रभु यीशु ने एक आदर्श चरित्र के रूप में जीवनयापन करके अपना व्यक्तित्व प्रस्तुत किया है। मनुष्य को अन्तःकरण द्वारा स्वयं ही अपनी इन्द्रियों पर संयम रखना चाहिये, संयम से ही चरित्र निर्माण होता है।

विभिन्न वर्गों के लिए शिक्षा– बाइबल की शिक्षा जहाँ समाज के विभिन्न वर्गों को अपनी-अपनी परम्पराओं का निर्वाह करते हुए

कार्य करते रहने को उत्पप्रेरित करती है, वहीं गृहस्थी, संन्यासी, बालक, वृद्ध, राजा-प्रजा सभी को अपने-अपने कर्त्तव्यों का बोध भी कराती है। बाइबल मात्र अधिकारों की ही बात नहीं करती, अपितु कर्त्तव्य बोध को अधिकारों से भी उच्च प्राथमिकता देती है।

शिक्षा के प्रकार– बाइबल में शिक्षा के विभिन्न प्रकारों यथा प्राकृतिक, व्यावहारिक, भौतिक व आध्यात्मिक शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। औपचारिक साधनों एवं विधि से अनपढ़ व्यक्ति भी शिक्षा ग्रहण कर सकता है। भौतिक सुखों के साधन ईश्वर द्वारा ही दिये गये हैं, परन्तु मानव को सांसारिक सुखों में इतना लीन नहीं होना चाहिये क्योंकि इससे शिक्षा के पुनरुद्धार का मार्ग ही बन्द हो जाता है।

समाज के लिए– बाइबल एक ऐसे समाज की परिकल्पना ही नहीं करती अपितु उसे बनाने का प्रयास भी करती है, जो शिक्षा, शिक्षार्थी एवं शिक्षक के लिए यथोचित वातावरण की रचना करे। समाज की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा से सामंजस्य के लिए भी बाइबल ने ध्यान दिया है।

राज्य के लिए–जो संस्थाएँ राष्ट्र विरोधी शिक्षा का प्रसार करती हैं-उनको दण्डित करना, अच्छी संस्थाओं का विकास करना राष्ट्र का ही उत्तरदायित्व है। ऐसी संस्थाओं पर अविलम्ब रोक लगानी चाहिये तथा राज्य को ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये कि ऐसी अन्य संस्थाएँ फल-फूल नहीं सके। इस बात को मदरसे, मकतब या पाठशाला के अतिरिक्त उन स्कूलों पर भी लागू कर सकते हैं जहाँ जन-साधारण की राय के अनुसार मात्र अभिजात्य वर्ग ही पैदा होता है।

बाइबल के शिक्षा-दर्शन की उपादेयता– प्रत्येक किये जाने वाले कार्य का उपयोग तभी सार्थक कहलाता है जबकि विश्वास, आशा, प्रेम, क्षमा व पश्चाताप करने की भावना जागृत करने के लिए बाइबल-शिक्षा को अमोध-अस्त्र के रूप में स्वीकार किया जाए। चोरी, क्रोध, झूठ तथा विषय-वासना का त्याग मात्र भारतीयों के लिए नहीं वरन् विश्व के किसी भी देश के लिए हितकर है। बाइबल के अनुसार आध्यात्मिकता, नैतिक प्रेम, पारम्परिक सहयोग और सद्भावना का विकास किया जाए।

(लेखक शिविरा पत्रिका के वरिष्ठ संपादक रहे हैं।)

-बी-186, डॉ. राधाकृष्णन नगर, भीलवाड़ा
फोन 01482-238540

रविदास जयन्ती-14 फरवरी 2014

हरि को भजे सो हरि का होई

❒ महेश कुमार चतुर्वेदी

शास्त्रों में कहा गया है-''विश्वासो फलदायक'' अर्थात् विश्वास से ही फल की प्राप्ति होती है। अत: ईश्वर को प्राप्त करने की पहली सीढ़ी है-ईश्वर के प्रति विश्वास। विश्वास के द्वारा कई दुष्कर कार्यों को भी पूरा किया जा सकता है।

ईश्वर को प्राप्त करने के लिए सच्चा विश्वास, प्रेम और उसके प्रति सच्ची निष्ठा ही भक्त के लिए भक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है और जब भक्त में भक्ति की भावना हिलोरें लेने लगती हैं तब वह भजन की ओर उन्मुख होता है। हर घड़ी हर पल, हर समय, सोते, जागते, उठते बैठते वह अपने प्रभु को भजता है। उनका स्मरण करता है। सच्ची भक्ति और भजन के लिए यह भी आवश्यक है कि भक्त के मन में निःस्वार्थ सेवा भाव के बीज अंकुरित हों। निःस्वार्थ सेवा भी, कैसी ? किसी स्वार्थ, लोभ, मोह, माया, छल-कपट, प्रपंच आदि को छोड़कर त्याग पर आधारित निःस्वार्थ सेवा ही ईश्वर प्राप्ति में सहायक होती है। हम ईश्वर की सेवा कर रहे हैं। पूजा अर्चना कर रहे हैं। हरि स्मरण कर रहे हैं। प्रभु को रात-दिन भज रहे हैं। लेकिन उसके पीछे हमारा कोई स्वार्थ है। लालसा है। आकांक्षा है, इच्छा है तो वह भक्ति लक्ष्य (ईश्वर प्राप्ति) तक पहुँचने से पहले ही समाप्त हो जाती है और फिर प्रभु मिलन की आस अधूरी ही रह जाती है। इसीलिए गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है-

''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।''

ईश्वर भजन के लिए मन का पवित्र होना भी अत्यन्त आवश्यक है। जब तक हमारी पांच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियों के दसों विषयों पर नियंत्रण नहीं हो जाता। तब तक मन पवित्र नहीं होता। ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों पर नियंत्रण ही शास्त्रों में इन्द्रिय-निग्रह कहा है। महावीर स्वामी के जीवन-दर्शन में भी सबसे पहले इन्द्रिय-निग्रह पर सर्वाधिक बल दिया है और इन्द्रिय निग्रह ही योग कहलाता है। इसी योग क्रिया द्वारा मन पवित्र होता है। ऐसी दशा में भक्त सत्काम भक्ति को छोड़कर निष्काम भक्ति करता है। तब ऐसी स्थिति आ जाती है कि भक्त और भगवान का सम्बन्ध प्रगाढ़ हो जाता है। भक्त भगवान से अलग नहीं होना चाहता है। तब भक्त में भक्ति की ऐसी लौ जलती है कि आत्मा-परमात्मा में विलीन हो जाती है। स्थिति ऐसी आती है कि भक्त को भगवान के दर्शन हो जाते हैं। तब भक्त परमानंद को प्राप्त करता हुआ अपने इष्ट देव, आराध्य देव के दर्शन करने के उपरान्त भी, उसकी भक्ति में कोई कमी नहीं आती। वह तो हर वक्त भजन करता रहता है। तब भक्त के मन से बरबस यह स्वर फूट पड़ता है।

''हरि को भजे सो हरि का होई।''

ऐसा ही जीवन-दर्शन भक्तिकाल में कबीर नानक, रहीम, सूर, तुलसी, नामदेव आदि भक्तों और संतों ने भक्ति की अजस्त्र धारा प्रवाहित कर तत्कालीन समाज को मोह, माया, बंधन, राग-द्वेष, घृणा आदि से ऊपर उठकर जो सोच और दिशा दी है। वह समय भक्तिकाल का स्वर्णयुग कहा जाता है। इसी स्वर्णकाल में संत शिरोमणी रविदास का आविर्भाव हुआ।

रैदास को बहुत से लोग रविदास, बहुत से लोग रविसाहब और बहुत से लोग रामदास भी कहते हैं। पर जनसाधारण में उनका नाम रैदास प्रचलित है। ऐसा माना जाता है कि कबीर के सामयिक होने के कारण इनका जन्म पन्द्रहवीं सदी में हुआ। रैदास का जन्म काशी में ही हुआ। ये कई बार कबीर के सत्संग में भी सम्मिलित हुए थे और स्वामी रामानंद के श्राप से चर्मकार के घर में पैदा हुए। बचपन से ही रैदास साधु-सेवी थे। इस कारण इनके माता-पिता इनसे नाराज रहा करते थे। बात यहाँ तक पहुँची कि उन्होंने रैदास को घर से निकाल दिया और खर्च के लिए एक पैसा भी नहीं दिया। बस तभी से संत रैदास साधु संतों के मार्ग पर चल पड़े। ये रामानंदजी के बारह शिष्यों में से एक थे। गुरु की भक्ति के प्रभाव से ही राजतरंगिनी मेवाड़ की महारानी मीरां इनकी शिष्या बनीं। जो संत मीरां के नाम से आज भी प्रसिद्ध है।

रैदास अलमस्त फक्कड़ थे। लोक-परलोक की निंदा, स्तुति की ओर उनकी दृष्टि गई ही नहीं। घर में सती साध्वी स्त्री थी। जो कुछ घर में होता उसे तैयार कर पति की सेवा में ला रखती। जूते गांठने में उन्हें बहुत कम आमदनी होती। जो कुछ आमदनी होती उसे वे साधु-संतों में खर्च कर देते। उनका मन तो सदैव भगवान के भजन में लगा रहता। अपने पास ही वे ठाकुरजी की मूर्ति रखते। जूते गांठते जाते और प्रेम विह्वल वाणी में अपने हरि की ओर निहार-निहार कर गाते रहते।

रैदास के जीवन की ऐसी कई चमत्कारिक घटनाएँ हैं, जिससे पता चलता है कि रैदास पर प्रभु की असीम कृपा थी। उन्होंने अपनी भक्ति और कर्म से यह सिद्ध कर दिया कि ईश्वर भक्ति और उनकी प्राप्ति के लिए जाति-पांति, ऊँच-नीच, अमीरी-गरीबी का बन्धन नहीं। इसीलिए उन्होंने कहा है-हमारे देश में जाति-पांति का बोल बाला रहा है। धर्म और जाति को लेकर सांप्रदायिक दंगे, हिंसा, मारकाट, घृणा और अलगाव के जो तत्व उभरते रहे हैं। वे हमारे संकुचित और सकीर्ण विचारों के ही परिणाम हैं। जो नफरत लोगों के दिलों में भर दी गई है वह किसी से छिपी नहीं है।

किंचित स्वार्थ एवं लालसा से आज मानव मानव को भूला बैठा है। आपसी प्रेम, दया, सहयोग, एकता और सहिष्णुता न मालूम कहाँ खो गए हैं। ऐसे समय में रैदास जैसे संतों की फिर आवश्यकता है। संसार के सभी धर्मों के महापुरुषों ने भक्तों ने और संतों ने एक ही धर्म को स्वीकारा है और वह है-''मानव-धर्म''। मानव सेवा ही सच्ची सेवा है। सच्चा धर्म है। **जाति-पांति पूछै न कोय। हरि को भजे सो हरि का होय।।**

-रा.उ.प्रा.वि.(पुराना) छोटीसादड़ी (प्रतापगढ़)
मो. 9460607990

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

वस्त्र नगरी है भीलवाड़ा

❑ ओमप्रकाश झँवर

इतिहास एवं भौगोलिक स्थिति

राजस्थान में कपड़ों के नगर के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाला भीलवाड़ा जिला राजस्थान के प्रमुख औद्योगिक नगरों में से एक है। रियासतों के विलीनीकरण में मेवाड़ एवं शाहपुरा रियासतों के संयुक्त राजस्थान में विलय के साथ ही सन् 1949 में भीलवाड़ा जिला अस्तित्व में आया। अजमेर सम्भाग में स्थित भीलवाड़ा जिले के उत्तर में अजमेर, उत्तर-पश्चिम में राजसमन्द, दक्षिण-पूर्व में चित्तौड़गढ़ तथा उत्तर-पूर्व में बूंदी व टोंक जिले हैं। भीलवाड़ा 250.1' से 250.68' अक्षांश तथा 740.1 से 750.28' देशान्तर रेखाओं के बीच स्थित है। जिले की लम्बाई पश्चिम से पूर्व एवं उत्तर से दक्षिण क्रमशः 144 किमी एवं 104 किलोमीटर है। जिले का क्षेत्रफल 10445 वर्ग किलोमीटर है। जो प्रदेश में जिले को 14वाँ स्थान दिलाता है।

भीलवाड़ा जिले के पश्चिमी भाग को छोड़कर जिले का आकार आयताकार है। पूर्वी भाग की तुलना में पश्चिमी भाग अधिक चौड़ा है। जिले का भूभाग सामान्यतः एक तरफ उठा हुआ पठार है। इसके पूर्वीभाग में कहीं-कहीं पहाड़ियां हैं। अरावली पर्वत श्रेणियां जिले में कई स्थानों पर दिखाई देती है। ये अधिकांशतः मांडलगढ़ तहसील क्षेत्र में है। भीलवाड़ा विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है। इस विभाजन का आधार यह सेटेलाइट सर्वे है जो सन् 1982 में किया गया था।

जनसंख्या एवं साक्षरता स्थिति

भीलवाड़ा जिले की जनसंख्या सन् 2011 में हुई जनगणना के आँकड़ों के अनुसार 24,08,523 है। इसका वर्गीकरण इस प्रकार है-

पुरुष जनसंख्या	12,20,736
स्त्री जनसंख्या	11,87,787
कुल	24,08,523
शहरी जनसंख्या	05,12,654
ग्रामीण जनसंख्या	18,95,869
कुल	24,08,523

जिले में लिंगानुपात 969 तथा जनसंख्या का घनत्व 230 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। जनगणना-2011 के अनुसार जिले का समग्र साक्षरता प्र.श. 62.71 है। इसमें पुरुष एवं महिला साक्षरता दर क्रमशः 77.16 एवं 47.93 है।

प्रशासनिक ढाँचा

प्रशासनिक दृष्टि से देखें तो भीलवाड़ा जिले में 16 राजस्व खण्ड, 11 पंचायत समितियां एवं 383 ग्राम पंचायतें हैं। इन ग्राम पंचायतों के अन्तर्गत 1723 गांव हैं। जहाँ तक शहरी क्षेत्र की बात है जिले में जिला मुख्यालय पर नगर परिषद है तथा आधा दर्जन नगर पालिकाएं क्रमशः जहाजपुर, मांडलगढ़, गंगापुर, शाहपुरा, आसीन्द एवं गुलाबपुरा में हैं। वर्तमान में भारतीय प्रशासनिक सेवा के युवा एवं ऊर्जावान अधिकारी डॉ. रविकुमार सुरपुर भीलवाड़ा के जिला कलक्टर हैं।

भीलवाड़ा जिले में बनास एवं उसकी सहायक नदियां यथा खारी, कोठारी एवं बेड़च हैं। इनके अलावा मानसी, मेनाली, चन्द्रभागा, मेज, ऐक तथा नागदी जैसी छोटी नदियां भी भीलवाड़ा जिले की शान बढ़ाती है। बनास नदी अरावली पर्वत श्रेणियों में से उदयपुर जिले के उत्तरी भाग से निकलकर भीलवाड़ा के दूढ़िया गांव के निकट प्रवेश करती हैं।

भीलवाड़ा जिले की जलवायु सम एवं स्वास्थ्यवर्धक है। गर्मी के तेवर यहाँ तेज रहते हैं। वर्षा ऋतु जुलाई से सितम्बर रहती है। यह समय खुशमिजाज होता है। पर्याप्त वर्षा से वन-जीवन एवं वनस्पति, जीव जन्तु आह्लादित हो जाते हैं। जिले का सामान्य तापमान न्यूनतम 30 सेन्टीग्रेड से अधिकतम 470.5 सेन्टीग्रेड रहता है। वार्षिक औसत वर्षा का आंकड़ा 70 से 75 मिली है।

खनिज सम्पदा

खनिज उत्पादन की दृष्टि से भीलवाड़ा जिले का देश में महत्वपूर्ण स्थान है। प्रमुख खनिज सोप स्टोन, लोह अयस्क, चाईना क्ले, फैल्सपार, कपर्टन, सिलिकासेण्ड, एस्बसटोस आदि है। गुलाबपुरा क्षेत्र में आगूंना ग्राम के पास जिंक, लैड व सिल्वर, अभ्रक का करीब 5 करोड़ 30 लाख टन भण्डार उपलब्ध है जिसमें धातु की मात्रा 15.4 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त पुर, दरीबा, बनेड़ा, बेल्ट के अंदर भी सीसा, जिंक, तांबा, अयस्क तथा अभ्रक उपलब्ध है। यहां चाइना क्ले, सोपस्टोन, फेल्सपार, सिलिका पर आधारित अनेक उद्योग कार्यरत है। जिले की आसींद, मांडल व रायपुर तहसील क्षेत्र में ग्रेनाइट के भी कुछ भंडार मिले हैं। कोटड़ी, जहाजपुर क्षेत्र में संगमरमर के कुछ भंडार है।

औद्योगिक परिदृश्य

भीलवाड़ा सिन्थेटिक वस्त्र उद्योग के क्षेत्र में न केवल राजस्थान में अपितु भारत में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। भीलवाड़ा से वस्त्र नगरी के रूप में जाना जाता है। स्वतन्त्रता से पूर्व यह जिला अभ्रक, सोपस्टोन व सेण्डस्टोन खनिज उत्पादन के लिए अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात रहा है। तत्पश्चात भीलवाड़ा के पुरुषार्थी उद्यमियों ने ट्रेक्टर कम्प्रेसर व रिंग मशीनों के माध्यम से इसे राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्रदान की। वर्तमान में 425 से अधिक वस्त्र उद्योगों में लाखों मीटर सिन्थेटिक वस्त्र का प्रति माह उत्पादन हो रहा है। इन इकाईयों में लगभग 16246 लूम स्थापित है। जिनसे लगभग 50 हजार लोगों को रोजगार मिल रहा है।

स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान

भीलवाड़ा जिले का देश के स्वतंत्रता आंदोलन में भी विशेष योगदान रहा है। शाहपुरा के केसरी सिंह, जोरावर सिंह एवं प्रताप सिंह बारहठ ने आजादी के आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बिजोलिया का किसान आंदोलन साधु सीतारामदास, विजयसिंह पथिक व माणिक्य लाल वर्मा जैसे स्वतंत्रता सेनानियों के नेतृत्व में परवान चढ़ा था। यह उल्लेखनीय है कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी किसान आंदोलन की प्रशंसा करते हुए विजयसिंह पथिक को बधाई सन्देश भेजा था।

जिले के प्रमुख पर्यटन स्थल

जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर एक नजर डालें तो हमें ज्ञात होता है कि यह जिला पर्यटन की दृष्टि से बहुत समृद्ध है। आइये, कुछ महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों की यात्रा करते हैं–

हरणी महादेव

भीलवाड़ा जिला मुख्यालय से करीब 4 किलोमीटर दूर स्थित है– हरणी महादेव। यहां का शिव मंदिर दर्शनीय है। मंदिर के पीछे जलाशय और पहाड़ियों की सुंदरता मन को छू लेती है। एक पहाड़ी पर चामुंडामाता का मंदिर है। भीलवाड़ा से करीब 12 किलोमीटर दूर है। मैजा बांध। वर्षा ऋतु में जब यह बांध भर जाता है तो यहां सैलानियों का तांता लगा रहता है। यहां बहुत सुंदर पार्क बना है। उपनगर पुर में 'अधरशिला, देवडूंगरी व पातोला महादेव सहित अन्य रमणीय स्थल भी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

मांडलगढ़

राजस्थान की ऐतिहासिक धरोहर के रूप में पहचान रखने वाला मेवाड़ क्षेत्र का सुप्रसिद्ध एवं प्राचीन मांडलगढ़ दुर्ग अब प्राय: जर्जर हो चुका है, लेकिन अपने गौरवशाली अतीत की यादें आज भी इसके आगोश में सिमटी हुई है। वर्षा से वीरता, त्याग और देश प्रेम की कहानी कहने वाला यह दुर्ग आज अपने अस्तित्वव को बचाए रखने की उम्मीद पर टिका हुआ है। भीलवाड़ा नगर से बावन किलोमीटर दूर कोटा मार्ग पर अरावली पर्वत श्रंखला के मध्य समुद्र तट से 1850 फीट ऊंचे लगभग एक किलोमीटर लंबे व चौड़े पठारी भू–भाग पर निर्मित यह दुर्ग सामरिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। दुर्ग पर पहुचने के लिए पक्की सड़क का निर्माण किया जा चुका है। सात दरवाजों से होकर दुर्ग पर पहुंचना होता है। ऊपर बने महल एवं ऐतिहासिक समारक तथा बस्ती अब खण्डहरों में बदल चुकी है।

माण्डलगढ़ दुर्ग की तलहटी में जालेश्वर जलाशय का नैसर्गिक सौन्दर्य दर्शनीय है। जलाशय की पाल पर अनेक कलात्मक छतरियां बनी हुई हैं। दुर्ग की तलहटी में स्थित यह जलाशय ऐसा लगता है मानो दुर्ग के चरण पखार रहा हो। जलाशय के उत्तर में बस्ती बसी हुई है और दक्षिण में तालाब की पाल के पास ही जालेश्वर मंदिर एवं गायत्री मंदिर स्थित है। माण्डलगढ़ में विश्राम के लिए सार्वजनिक निर्माण विभाग का सुंदर डाक बंगला बना हुआ है जो रेल्वे स्टेशन के निकट है।

त्रिवेणी संगम

मांडलगढ़ के पास ही है त्रिवेणी संगम। यहां बनास नदी में बेड़च एवं मेनाली नदी मिलकर संगम की संरचना करती है। त्रिवेणी संगम पर एक प्राचीन महादेव मंदिर बना हुआ है तथा छोटे–बड़े अन्य मंदिर भी यहां बनाए हैं। नदी के किनारे स्नान घाट बने हुए हैं। यहां धार्मिक पर्व तथा विशेष दिवसों पर स्नान का काफी महत्व है। लोग अपने पूर्वजों का अस्थि विसर्जन भी इस नदी में करते हैं। प्रतिवर्ष शिवरात्रि पर यहां 'सौरत का मेला' भरता है।

जहाजपुर

भीलवाड़ा जिले की उत्तर–पूर्व सीमा के निकट एक पहाड़ी पर जहाजपुर का दुर्ग दूर से ही दिखाई देता है। दुर्ग काफी प्राचीन होने से अब खण्डहर में बदल रहा है लेकिन अभी भी यहां के महल का अस्तित्व बरकरार है। कहा जाता है कि मौर्य सम्राट अशोक के पौत्र सम्प्रति ने इसका निर्माण करवाया था। जहाजपुर के दक्षिण पूर्व में नागोला तालाब है जहां जन्मेजय ने नागयज्ञ करवाया था। यहां नागदा बांध, बारहदेवरा उवं गैबीपीर की मस्जिद भी दर्शनीय हैं।

शाहपुरा

सुरम्य झील–जलाशयों, हरे–भरे, बाग–बगीचों, राजमहलों, देवालयों, कुण्ड–बावड़ियों और विश्व प्रसिद्ध फड़ चित्रकला के चितेरों का शहर 'शाहपुरा'। स्वतंत्रता सेनानियों, पुरातत्ववेताओं, इतिहासकारों, धर्मप्रेमियों तथा साहित्यकारों की नगरी 'शाहपुरा'।

भीलवाड़ा शहर से 55 किलोमीटर दूर भीलवाड़ा–जहाजपुर मार्ग पर बसा शाहपुरा जहां एक ओर वीर क्रांतिकारी बारहठ परिवार के कारण स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है वहीं अन्तर्राष्ट्रीय रामस्नेही संप्रदाय का प्रमुख पीठ स्थल होने का गौरव भी इसे प्राप्त है। चारों ओर से ऊंचे परकोटे से घिरे इस शहर के बीच बने राजमहल आज भी अपनी भव्यता का अहसास कराते हैं तो जलाशय का सौन्दर्य देखते ही बनाता है। पीवनिया तालाब के बीचों बीच एक हरा भरा टापू तालाब को अधिक आकर्षित बना देता है। यहां बस स्टेण्ड चौराहे पर प्रसिद्ध क्रांतिकारी बारहठ बंधु केसरीसिंह, जोरावरसिंह तथा प्रतापसिंह की प्रतिमाओं का स्मारक बना हुआ है।

शाहपुरा का रामनिवास धाम राष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिप्राप्त है। मुख्य प्रवेश द्वार सूरजपोल के नाम से जाना जाता है। सूरजपोल के ऊपर अति सुंदर शोभायुक्त झरोखा बना हुआ है जिसकी तीनों गुमटियों पर पांच कलश है और श्याम रंग के पत्थरों की छतरियां बनी हुई हैं। रामस्नेही संप्रदाय के संस्थापक स्वामी रामचरण जी महाराज के समाधि–स्थल पर बारहदरी बनी हुई है। बारहदरी के तीन परिक्रमा है। इनमें से एक सौ आठ स्तम्भ और चौरासी दरवाजे हैं। इनके चारों तरफ की दीवारों के छज्जे बने हुए हैं। उपर बीच में अतिसुंदर छत्र महल बनाया गया है। जिसकी पच्चीस गुमटियों पर सेंतालिस कलश है। छत्र महल में 124 खंभे है तथा सात प्रकार के झरोखे बनाये गये हैं। रामनिवास धाम परिसर में ही रामस्नेही संप्रदाय के प्रमुख आचार्यो के समाधि–स्थल हैं और कतारबद्ध छतरियां बनी हुई हैं।

शाहपुरा में ''शाहपुरा बाग'' के नाम से एक हेरिटेज होटल है। लगभग 45 बीघा क्षेत्र के मध्य स्थित इस होटल के आसपास की नेसर्गिक छटा, शांतिपूर्ण वातावरण तथा सघन पेड़ों एवं झील जलाशयों का सौन्दर्य जादुई आकर्षण लिये हुए है। यहां झील में नौका विहार की सुविधा भी उपलब्ध है। झील में खिलते कमल देखकर प्रकृति प्रेमी मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।

बनेड़ा

शांत सुरम्य पहाड़ियों से घिरा एक छोटा कस्बाई गांव बनेड़ा। एक तरफ ऐतिहासिक महत्व का दुर्ग और दूसरी तरफ पर्यटन की दृष्टि से आकर्षक सरोवर। बीच में बसी है बस्ती। ऊँची–नीची, चौड़ी–सकड़ी गलिया, बाजार और चौक चौराहे। प्राचीन देवालय और कलात्मक कुण्ड–बावड़िया। भीलवाड़ा–शाहपुरा–देहली मार्ग पर स्थित बनेड़ा का अपना इतिहास है। यहां एक गढ़ीनुमा दुर्ग पर बने प्राचीन महल आज भी लगभग अपने मूल स्वरूप में विद्यमान है। हालांकि ये महल सूने हो गये हैं पर इन्हें निकट से देखने पर, भीतर प्रवेश करने पर आज भी इनके दरों–दीवारों से अतीत की गूंज–अनुगूंज सुनाई पड़ती है।

समुद्रतल से 1900 फीट ऊँची पहाड़ी पर तत्कालीन जागीरदारों द्वारा बनवाये इस महलों

के चारों तरफ दोहरा-तिहरा परकोटा है। कहते हैं कि इस दुर्ग का निर्माण राजा सरदारसिंह ने करवाया था। दुर्ग पर जाने के लिए पहले सिलहगढ़ दरवाजा, फिर झाला का दरवाजा और अंत में मुख्य प्रवेश द्वार आता है। भीतर जो महल बने हैं। वे मर्दाना महल, जनाना महल, मित्र निवास और कंवरपदा महल कहलाते हैं। राजा सरदारसिंह ने इस दुर्ग पर सरदार निवास महल बनवाया। यहां शीश महल, अमर निवास महल भी दर्शनीय है।

दुर्ग की तलहटी में रामसरोवर है। इसके बीच नजरबाग में स्थित अजय कोठी में वर्तमान राजाधिराज हेमेन्द्रसिंह का निवास है। रामसरोवर, अजय कोठी, मनेड़ा ग्राम और दुर्ग तथा महलों का समन्वित सौन्दर्य देखते ही बनता है। रामसरोवर में नौका विहार का भी लुत्फ उठाया जा सकता है।

माण्डल

भीलवाड़ा-ब्यावर सड़क मार्ग पर लगभग 14 किलोमीटर दूर स्थित माण्डल ग्राम पुरातत्व, इतिहास, धर्म व लोक कला का केंद्र रहा है। माण्डलराव द्वारा माण्डल में बनाया गया विशाल तालाब प्राकृतिक सौन्दर्य की अद्भुत छटा बिखेरता है। यहां का सूर्यास्त भी दर्शनीय है। माण्डल बस्ती के बीच एक ऊँची पहाड़ी पर मिन्दारा बना हुआ है लगभग एक हजार वर्ष पुराने इस ऐतिहासिक मिन्दारे का पिछले वर्षों में जीर्णोद्धार करवाया गया। मिन्दारे के पास ही बक्षिणी माता का मंदिर है। माण्डल-मेवा मार्ग पर बनी बत्तीस खंबों वाली जगन्नाथ कछवाहा की छतरी अपने स्थापत्य सौन्दर्य के कारण अलग पहचान रखती है। कहते हैं कि मुगल सेना की एक टुकड़ी के सेनापति रहे राजा मानसिंह के काका जगन्नाथ कछवाहा के हल्दीघाटी युद्ध में घायल होने पर उसका माण्डल में निधन हुआ। जिस जगह दाह संस्कार किया गया वहीं यह छतरी बनाई गई। इसके साथ यहां कुण्ड और छतरियां भी बनी हुई है। बत्तीस खंबों की छतरियों का भी पिछले वर्षों में जीर्णोद्धार करवाया गया। छतरी के मध्य शिवलिंग स्थापित हैं। यहां शिवरात्रि पर विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं।

आसींद

भीलवाड़ा से 55 किलोमीटर दूर आसींद में स्थित सवाईमोज मंदिर गुर्जर समाज का प्रमुख धार्मिक तीर्थ स्थल है। जिस स्थान पर सवाई भोज का तीर्थ स्थल है वो गोठ दड़ावत कहलाता है। यहां राण के राजा दुर्जन शाल व जगड़ावतों के बीच युद्ध हुआ था। मंदिर के पास ही राठौड़ा तालाब है जिसे प्रेमसागर भी कहते हैं। सवाईमोज के प्राचीन मंदिर के निकट ही नया मंदिर बना हुआ है। इसके अलावा यहां दस और मंदिर निर्मित हैं। मंदिरों पर फहराते रंग बिरंगे देव ध्वज दूर से ही आकर्षक लगते हैं। सवाईमोज मंदिर में आने वाले दर्शनार्थियों को घाट और छाछ का प्रसाद दिया जाता है। सवाईमोज मंदिर की व्यवस्था हेतु ट्रस्ट बना हुआ है। यहां धर्मशाला का भी निर्माण करवाया गया है। हर वर्ष भादवी छट और माघी सप्तमी पर यहां मैला लगता है।

बदनोर

भीलवाड़ा जिले का सीमान्त ग्राम बदनोर अपने गौरवशाली इतिहास के कारण पहचाना जाता है। पहाड़ियों से जुड़े परकोटे से घिरा बदनौर दुर्ग कभी सामरिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण स्थान रखता था। यहां का भव्य सात मंजिला राममहल आज भी बड़ी उदासी के साथ अपनी दास्तां सुना रहा है। महल के मूक दरों-दीवार काल के थपेड़े सहते-सहते अब थक हार चुके हैं और खण्डहरों में बदल रहे हैं।

बदनोर पैलेस की प्रत्येक मंजिल और उनमें बने कुल 130 अनोखे छज्जे, गुम्बद युक्त झरोखे महल की भव्यता में चार चांद लगा देते हैं। इस भव्य दुर्ग में दीवाने आम, दीप निवास, रनिवास, राजनिवास, हाथी ठाग, घुड़शाला, तोपखाना, भंडार गृह, बारूद भंडार, रसद भवन जलागार, सैनिक आवास, महफिल खाना, सूरजपोल आदि दर्शनीय है।

जनश्रुति के अनुसार परमार नरेश बदन ने ईसा से 845 वर्ष पूर्व बदनपुर या बरदनपुर गांव की स्थापना की जो बाद में बदनोर कहलाया। प्राचीन ग्रंथों में कन्नोज नरेश हर्षवर्द्धन द्वारा इसकी स्थापना का भी उल्लेख मिलता है। बदनोर, समय-समय पर चौहानों, परमारों और सोलंकियों के अधिकार क्षेत्र में रहा। बदनोर की पहाड़ियों में एक ऊंची चोटी पर स्थित बैराठ माता का मंदिर बहुत दर्शनीय है।

-ऑक्सीजन वर्ल्ड, 4F9,
आर.सी. व्यास कॉलोनी, भीलवाड़ा
मो. 9414815742

संस्मरण

सही दिशा, बेहतर जीवन

❑ मूलचन्द सैनी

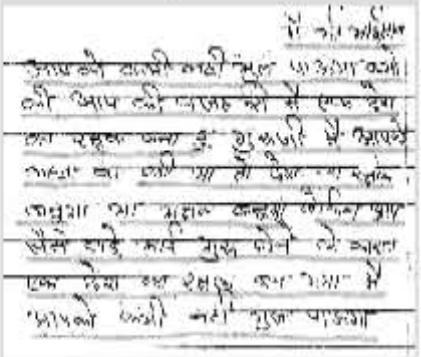

यह बात सत्र 1997-98 की है। जब मुझे जनवरी 1997 में राजकीय सेवा में रा.उ.प्रा.वि. दादूदा, फतेहपुर, जिला-सीकर में सेवा करने का सौभाग्य मिला। मैं गाँव के मध्य किराये के एक मकान में रहने लगा। मैं विद्यालय समय के अतिरिक्त सुबह-शाम बच्चों को प्रेरणा (Motivation), संस्कार शिक्षा देता। होनहार बच्चे बड़े चाव से मेरे पास आने लगे। बच्चों की खुशी में ही मेरी खुशी थी। इसी दौरान मेरा सम्पर्क गाँव के एक 8वीं पास कामकाजी युवक इकबाल खान से हुआ जिसने सेना में भर्ती होने का सपना संजो रखा था, परन्तु वह हर बार लिखित परीक्षा में असफल हो जाता था। फलस्वरूप वह दिशा भटक कर अवांछित गतिविधियों में शामिल होने लग गया। वो मुझे भी बार-बार कहता था कि गुरुजी मैं या तो देश का रक्षक बनूंगा अथवा भक्षक बनूंगा। मैंने उसको लगभग 2 माह तक लिखित परीक्षा की तैयारी करवायी एवं प्रेरणा दी अतः वह अपने अगले ही प्रयास में सेना में भर्ती हो गया और उसका सपना साकार हुआ। आज भी वह मेरे प्रति कृतज्ञ है पिछले दिनों अप्रैल 2013 में अपने परिवार सहित अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने मेरे घर पर एवं वर्तमान कार्यरत विद्यालय में आया। मेरे स्मृति पटल पर अतीत की यादें पुनः ताजा हो गई। मैं खुशी से गद्‌गद हो गया।

एक शिक्षक का दायित्व है कि वह अपने जीवन के प्रकाश से दूसरों के जीवन में उजाला लावे साथ ही शिक्षक का यह परम कर्तव्य बनता है कि वह राह से भ्रमित राही को सही दिशा दे ताकि उसकी ऊर्जा सृजन में काम आए। तभी एक शिक्षक को सही मायने में 'राष्ट्र निर्माता' कहलाने का अधिकार होगा।

-अध्यापक,
रा.उ.मा.वि., कोटड़ी खुमारवास (सीकर)
मो. 9413516983

संघर्ष की कहानी : शिक्षक की जुबानी

पढ़ाने के जुनून से मिला यश

❑ वृद्धि चन्द गोठवाल

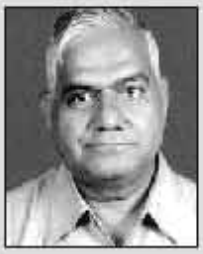

श्री वृद्धिचन्द गोठवाल एक आदर्श शिक्षक के रूप में लब्ध प्रतिष्ठित हैं। लगभग चार दशक की आपकी राजकीय अत्यन्त सराहनीय एवं अनुकरणीय रही है। सामाजिक सरोकारों के प्रति सजग भाई वृद्धि चन्द जी शिविरा के प्रबुद्ध पाठक एवं कुशल लेखक हैं। आपकी रचनाएं पत्र-पत्रिकाओं एवं आकाशवाणी से प्रकाशित/प्रकाशित होती रही है।

-सविनय सम्पादक

हम देखते हैं कि एक व्यापारी अपने कारोबार को बढ़ाने के लिए भरसक प्रयास करता है। एक सुरक्षाकर्मी देश रक्षा के लिए हरदम सावधान रहता है और एक अधिकारी समस्त व्यवस्था के निर्वाह में पूरी तरह सजग रहता है, तो क्या एक शिक्षक को बालकों को अच्छी तरह पढ़ाने एवं शिक्षा के विकास हेतु प्रयास नहीं करने चाहिए ? शिक्षा तो सबके लिए सुखी जीवन का आधार है। अतः शिक्षक समुदाय में पढ़ने और पढ़ाने का जुनून तो होना ही चाहिए। लोग प्राचीन शिक्षा और शिक्षक का आज भी गुणगान करते हैं, क्योंकि उनमें अहर्निश सेवा और कर्तव्य के प्रति पूर्ण निष्ठा थी। आजकल सबकुछ विपरीत हो गया है, किन्तु मेरी मान्यता है कि शिक्षक में पढ़ाने का जुनून सवार हो जाए तो गुणात्मक दृष्टि से शत-प्रतिशत सफलता प्राप्त करने में कहीं कोई कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता है, बल्कि वह सर्वत्र आदरणीय बन जाता है।

मैं हाई स्कूल पास हुआ और शिक्षक बन गया। मित्रों को उच्च शिक्षा की ओर बढ़ते देख मुझे लगा कि शिक्षा विभाग में शिक्षक की ही नौकरी करना है तो योग्यता बढ़ाना लाजमी होगा। जीवन के कई झंझावतों का सामना करते हुए सतत प्रयास से एम.ए., एम.एड. की योग्यता हासिल की। उस समय उच्च प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत था। मेरी मनःस्थिति में आया कि बोर्ड कक्षा के बालकों को पढ़ाने के अनुभव हेतु माध्यमिक विद्यालय में सेवा देनी चाहिए। लोग तो बाहर से अपने गांव आते हैं, पर उद्देश्य पूर्ति के लिए गांव छोड़ा। मैंने भूपालसागर माध्यमिक विद्यालय में स्वैच्छिक स्थानान्तरण करा लिया। 18 जुलाई, 1977 को ड्यूटी ज्वाइन तो कर ली किन्तु कुछ निराशा हुई। तत्कालीन प्रधानाध्यापक जी ने कहा कि कक्षा 9-10 में पढ़ाने का पीरियड देना संभव नहीं है। मुझे लगा कि मित्रों ने ठीक ही कहा कि प्रधानाध्यापक महोदय बहुत सख्त आदमी है। मेरे सम्मुख धैर्य एवं संतोष के अलावा कोई चारा नहीं था। जो कक्षाएं और विषय मिले उनका रुचिपूर्वक अध्यापन कराता रहा।

लगभग दो माह बीते कि कक्षा दस में हिन्दी पढ़ाने वाले शिक्षक लम्बे मेडिकल अवकाश पर चले गए। मैंने एम.ए. हिन्दी में ही किया था तो मुझे व्यवस्था कालांश में लगाया। अवसर पाकर पूर्णनिष्ठा से अध्यापन कराने लगा। पांच-सात दिन के दौरान प्रधानाध्यापक मोहन सिंह जी चौहान ने चुपके-चुपके मेरे शिक्षण का अवलोकन किया। इसका मुझे तो कुछ पता नहीं चला पर कतिपय छात्रों को इसकी भनक लग गई थी। उन्होंने बच्चों से भी शिक्षण प्रक्रिया के बारे में पूछताछ की तो सही-सकारात्मक उत्तर सुनने को मिला।

एक रोज ऑफिस में परीक्षा प्रभारी को भी बातचीत के दौरान उन्होंने कहा कि मिस्टर गोठवाल बहुत अच्छा पढ़ाता है अतः एक कालांश बोर्ड कक्षा का दे सकते हैं। मुझे सातवें कालांश में सहायक कर्मचारी ने कहा कि साहब बुला रहे हैं। मैं चौंका कि कोई चूक हुई है क्या ? क्योंकि ऐसी हवा थी कि जिसको भी साहब बुलाते हैं तो उस पर थोड़ी-बहुत बिजली गिरती है। पर मैं प्रसन्न मुद्रा में पहुँचा। मुझे बैठने का संकेत करते हुए पूछा- कक्षा दस पढ़ाने में कोई दिक्कत तो नहीं हो रही ? क्या, यदि आपको यह कालांश स्थाई रूप से दे दें तो शत-प्रतिशत रिजल्ट दे सकोगे ? यह शर्त मंजूर हो तो बोलो ? यह मेरे मन की बात थी कि इसी उद्देश्य के खातिर तो गाँव छोड़कर यहाँ आया हूँ। मैंने हर्षित होकर सहमति जतलाई-सर, ऐसा ही होगा।

दरअसल प्रधानाध्यापक जी कर्त्तव्य परायण, अनुशासन और शैक्षिक गति-विधियों के विकास की तरफ ध्यान देने वाले शिक्षक से प्रेम, सहानुभूति रखने वाले एक ईमानदार अधिकारी थे। उन्हें चुहुलबाजी करने वालों से लगाव नहीं था इसलिए सख्त कहा जाता। सशर्त कालांश और बोर्ड परीक्षा मेरे दिल-दिमाग में ऐसी समा गई कि मुझे पढ़ाने का जुनून सवार हो गया। हस्तलिखित प्रश्न-पत्र तैयार करके प्रतिमाह टेस्ट लेना, अतिरिक्त समय देकर पढ़ाना, बोर्ड के पुराने प्रश्न-पत्र हल कराना और कमजोर छात्रों पर व्यक्तिशः ध्यान देना प्रारम्भ किया। मेरी इस कार्यशैली से छात्रों में पूर्ण आत्मविश्वास पैदा हो गया। परीक्षा हो गई। परिणाम आया। शत-प्रतिशत छात्र अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुए। मेहनत सफल हुई।

फिर तो नए सत्र में निर्भय होकर उत्साहपूर्वक कार्य करने की मनःस्थिति बन गई और सत्रारम्भ से ही हर प्रकार से सावधान रहने लगा। कार्य की रुचि एवं प्रगति के आंकलन से इतिहास पढ़ाने का भी दायित्व मिला। दोनों विषयों का गुणात्मक दृष्टि से शत-प्रतिशत रिजल्ट और जब तक उस विद्यालय में सेवा दी परीक्षा परिणाम का ग्राफ नीचे नहीं गया। शैक्षिक उन्नयन मेरे लिए वरदान साबित हुआ। शिक्षा विभाग से उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम के उपलक्ष में प्रशंसा पत्र प्राप्त हुए। सन् 1983 के जनवरी में पदोन्नति से रिलीव हुआ तो सुखद जीवन का अहसास हुआ। पढ़ाने में कौन किस ग्रेड एवं पद पर है इसका कोई प्रभाव एवं फर्क नहीं पड़ता बस पढ़ाने का जुनून सेवानिवृति तक बना रहे यही मुख्य एवं महत्वपूर्ण बात है।

आज 72 वर्ष की आयु में जब बीते हुए दिनों के शिक्षण कार्य विधियों का स्मरण होता है तो शिक्षक बन्धुओं को आप बीती और अनुभव सुनाता हूँ कि विद्या रूपी धन को बालकों में न्यायपूर्वक बांटते रहना चाहिए। अच्छे अध्यापक पहले भी पूजनीय रहे और आज भी पूज्य है। बस हर स्तर के शिक्षण कार्य में एक जुनून ही तो चाहिए आत्मा के सन्तोष के लिए। पढ़ें और पढ़ाएँ की साधना एक शिक्षक के लिए शोभा युक्त है।

-पूर्व ज्यामाता (हिन्दी)
गौतम आश्रम के पास, पो. कपासन-312202
जिला चित्तौड़गढ़-राज.
मो.-9414732090

विचार धन

शिक्षा : क्या, क्यों और कैसे

❒ उदयलाल सेन

शिक्षा भी सीखने की प्रक्रिया है जो पालने से लेकर चिता तक चलती रहती है, किन्तु शिक्षा व्यक्ति मन को समाज-मन से जोड़ने का सेतु है। सेतु साध्य नहीं, साधन होता है, लेकिन आज शिक्षा का प्रयोग साध्य के रूप में किया जा रहा है। परिणामतया शिक्षा पर बल बना हुआ है और व्यक्ति-मन तथा समाज-मन पर से बल हटा है। शिक्षा के प्रभाव शून्यता से घिरने का भी यही कारण है। उसका सम्पूर्ण बल संस्था पर टिका हुआ होता है।

शिक्षा सत्ता का सोपान नहीं, सत्ता पर लगाया जाने वाला अंकुश है। सत्ता में है समाज का विश्वास उसका अपूर्व सौंदर्य- सत्य और शिव। समाज ने सत्ता को यह सब धरोहर के रूप में सौंपा है, ताकि जन चेतना के महोत्सवी महामन अनंत आनंद की अन्तर्गंगा में विलुप्त हो सृष्टि के कण-कण को सुवासित कर सके। लोकतंत्र में लोक चेतना केन्द्र में रहती है। शिक्षा लोकतंत्र का सेतु होनी चाहिए। शिक्षा सत्ता को जितना जोड़ेगी उतनी ही व्यक्ति और समाज के मन को शान्ति, प्रसन्नता और आनंद की अनुभूति होगी। शिक्षा संस्कारोन्मुखी चेतना के आत्म-साक्षात्कार का माध्यम है। वस्तुत: शिक्षा सोच की दिशा है, स्वावलम्बन की राह है और आत्म-बल का प्रकाश है। शिक्षा साथ-साथ चलने का शास्त्र है। शिक्षा व्यक्तिगत आस्था-सौंदर्य को समष्टिगत आस्था शिव सौंदर्य में महकाने का शिल्प है। शिक्षा अपने को जानने का विज्ञान है, अपने को जानकर सजाने का शिल्प है और सजे संवरे आस्था के निकेतन को सहर्ष उसके लिए समर्पित करने का संकल्प है। जो अपने को नहीं जानता, वह शिक्षित नहीं और जो शिक्षित नहीं, वह पराधीन है, निर्बल है, असहाय है और निर्धन-अपंग है।

शिक्षा भ्रम-सम्मोहन में फंसे इन्सान को उससे बाहर लाती है और नव नैसर्गिक तथा सह-जीवनीय आस्थाओं की मंगलधरा पर उसे खड़ा करती है। यहीं से ''जिओ और जीने दो'' के मंत्र का नि:शब्द उद्घोष उसमें जी उठता है और सह-अस्तित्व का निर्झर उसमें से स्वत: ही फूट पड़ता है समस्त संसृष्टि का मंगलाचरण बनकर। अन्त:प्रकाश कों बाह्य प्रकाश से संबद्ध करना ही शिक्षा है। मानव अभ्यंतर से अन्तर्निहित करुणा, प्रेम, दया, ममता, मुदिता, सत्य, अहिंसा, त्याग, सहानुभूति और सौहार्द इत्यादि के अक्षय स्त्रोत को ऋचाओं की भांति गुंजायमान हो जाने देना ही शिक्षा है। शिक्षा का सेतु अत्यंत संवेदनशील है। शिक्षा, व्यक्ति और समाज को संवेदनशीलता से ही तो परस्परबद्ध कर निखिल में परिव्याप्त कर ब्रह्मवत हो जाने का अवसर प्रदान करती है।

शिक्षा पुस्तक नहीं और न पुस्तक हो जाने का प्रयत्न मात्र है। शिक्षा की महत्ता सम्पूर्ण मानव समाज है, देश-विदेश की परिसीमाएँ नहीं। शिक्षा राष्ट्रीय संस्कार मात्र नहीं बल्कि उसका चिन्तन मानवीय संस्कार है। वह निरुद्देश्य नहीं सोद्देश्य है। उसके उद्देश्य और अनुद्देश्य का निर्धारण करना व्यक्ति और समाज से जन्मी समदृष्टि से ही सम्भव है। जबकि आज की शिक्षा यह सामर्थ्य जगाने में सफल सिद्ध नहीं हुई है। यही हमारे सबके दु:खों का मूल कारण है। नयी पीढ़ी के सामने कोई लक्ष्य नहीं है,सिवाय उपदेशों के भ्रम जाल में फंसाने और निकलने के प्रयत्नों के। सब में राजनीति का विष फैल चुका है। शिक्षा में आचार्य की भूमिका अपनी मौलिकता खो चुकी है। इससे नयी पीढ़ी में निराशा छा गई। इसे दो उपाख्यानों से समझने का प्रयास करते हैं-

1. एक तपस्वी जा रहा था वह जैसे-जैसे आगे बढ़ता जा रहा था, वैसे उसके पीछे कुछ लोग चलने लगे थे, उसके प्रभामंडल और तेजस्वी व्यक्तित्व से सम्मोहित होकर। वह तपस्वी बहुत दूर निकल आया। उसने अनुभव किया कि उसके पीछे खासी भीड़ चली आ रही है तो वह रुका। उसने मुड़कर देखा और पूछा, ''कहाँ जा रहे हैं आप लोग ? उन लोगों ने एक दूसरे का मुंह ताका और सोच में पड़ गए।

किसी को तपस्वी के प्रश्न का उत्तर नहीं देते देखकर उनमें से एक व्यक्ति ने अपने में साहस संजोया और धीमे स्वर में कहा, ''आपके पीछे।''

''मैं कहाँ जा रहा हूँ, वत्स?'', ''नहीं जानता।'' ''तब आप लोगों को मेरे पीछे चलने का कारण?'', ''नहीं मालूम।'', ''लेकिन... फिर भी, पीछे चल रहे हो?'', ''हाँ, महात्मन।'' ''पर क्यों?'', ''नहीं जानते।'', ''तब चल क्यों रहे हो? क्यों इतना निरर्थक परिश्रम?... मुझे अपना लक्ष्य ज्ञात है, मित्रों, इसलिए मैं चल रहा हूँ। जिन्हें अपना लक्ष्य ज्ञात नहीं है, वे भटक रहे हैं और भटकना ही दु:खों का मूल है।'' कुछ देकर रुककर वे आगे बोले, ''पहले लक्ष्य चुनो, फिर चलने का संकल्प लेकर चल पड़ो, रुको नहीं, चलते चले जाओ। अब चुपचाप लौट जाओ, यही आप सबके लिए श्रेयस्कर है।'' वे सब मौन धारण किए लौट पड़े।

2. एक निरंकुश राजा था। एक बार उसने एक नागरिक को मौत की सजा सुनाई। जब उस अपराधी से उसकी अंतिम इच्छा पूछने के लिए प्रशासक आया तो उसने कहा कि वह अपनी अंतिम इच्छा राजा के सामने ही प्रस्तुत कर सकता है। राजा आया। उसने राजा से वचन ले लिया केवल फाँसी से बचने की प्रार्थना को छोड़कर। वह बोला, ''हे राजन, आपने वचन दिया है और जानता हूँ कि क्षत्रिय राजा कभी अपने वचन से पीछे नहीं हटता।''

''निस्संदेह।'' राजा ने कहा। ''तो हे राजन्, मेरी अंतिम इच्छा है कि मेरे से पहले आपको फांसी दी जाए।'' ''मूर्ख, दुर्जन... तेरी यह हिम्मत कि...।'' राजन्, नाराज न हों। यह प्रतिक्रिया तो कोई मूर्ख भी व्यक्त कर सकता है। आप मूर्ख नहीं हैं, आप तो राजन् हैं-जनता के जनार्दन के शीश मुकुट !... क्रोध विवेक का शत्रु है और संयम का द्रोही । सोचो, राजन इससे क्या सिद्ध होता है? ''क्या? कहकर राजा अवाक् रह गया।''

''हे राजन्, आप इसलिए सजा दे रहे हैं क्योंकि आपको सजा देने वाला कोई नहीं है।... काश ! ऐसा नहीं हुआ होता तो...। क्या उसके अपराध के लिए वह भी उत्तरदायी है? कौन समझाए उसे ? लोक को विवश बनाकर न राज्य रहता है, न न्याय और न व्यवस्था।

''आप महान् हैं, संपूर्ण उत्तरदायित्वों से मुक्त हैं, निरंकुश है- कृपया अब मुझे फांसी पर चढ़वा दीजिए- यही मेरी अंतिम इच्छा है।'' जल्लाद आगे बढ़ा। राजा बेचैन। वह कुछ देर बाद बोला, ''ठहरो। आगे आप इन दोनों उदाहरणों

पर विचार करो और निर्णय लो। शिक्षा आपको निर्णय तक पहुँचाने का ही साधन है, देखना यह है कि आप क्या निर्णय लेते हैं।

राज्य खंडकाव्यीय चरित्र है। उसमें नायक और खलनायक दोनों हैं। आप उसके विवेचक निर्णायक हो। यह निर्णय आप कैसे करते हो, शिक्षा की उस दायित्व-बोध तक लाने में अहम् भूमिका है। लोक राज्य में ऊपर उठे और प्रभावी बने, शिक्षा की सकल, प्रक्रिया यही है। शिक्षा आचार्य से चले। आचार्य कुलों की पुनर्स्थापना हों। आचार्य कुल गाँव-गाँव बने, नगर-नगर बनें, और शहर-शहर बनें। उसमें नैतिकता और चरित्र का निर्बाध यज्ञ चलता रहे। शिक्षा पर से कल-कारखाने की एकरसता व निष्क्रियता की छाप हटे, उसमें जीवन चहके, मंत्र पढे. और सर्वोत्तम स्वरूप बने, यह आवश्यक है। स्थानान्तरणोन्मुखी शिक्षा के सकल पतन का हेतु है। उसमें संवाद बनने से पूर्व ही सपने टूट जाते हैं। उसमें पुष्प खिलने से पूर्व ही मुरझा जाते हैं। उसमें मानसिक भ्रूण हत्याओं की दुरभिसंधि चलती है। आज की शिक्षा की यही नियति है, यही त्रासदी है। इसका क्रंदन आज चतुर्दिक सुनाई पड़ रहा है।

शिक्षा ग्रंथियों के फंदों से मन को स्वतंत्र करने की पद्धति है, और सत्य को उजागर करने की अचूक शक्ति है। आज न व्यक्ति का अस्तित्व उभर पाता है, और न समाज का। आज व्यक्ति अपने विचार क्यों छिपाता है ? वह क्यों कृत्रिम विचारों को अभिव्यक्ति करता है ? शिक्षा मन खोलने का प्रयत्न है न कि मन छिपाने का। शिक्षा गुत्थियों को गांठ में बदलने का रास्ता नहीं, वह उन्हें सुलझाने का सहज तरीका है।

शिक्षा व्यक्ति और समाज दोनों को अपनी ओर आकर्षित करने का अमोघ तंत्र है। शिक्षा संस्कार संवर्द्धन और परिवर्धन का माध्यम है। शिक्षा सत्य का अहिंसा से संवाद है। अब यह निर्णय लेना सकल समाज का दायित्व है कि शिक्षा को प्रदूषण मुक्त कैसे करें और कैसे उसे जन-मन का आत्मीय अंग बनाएं ? इसके लिए जन पूर्व में दिए उदाहरणों पर मंथन कर निर्णायक दिशा का चयन कर सकता है और शिक्षा क्या है, उसको जीवन से जानने का भी अवसर प्रदान कर सकता है।

-व.शा.शिक्षक, रा.मा.वि. आसीन्द (भीलवाड़ा)
मो. 9414573636

माह : फरवरी, 2014

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
1.2.14	शनिवार	बीकानेर	12	परीक्षामाला		भूगोल
3.2.14	सोमवार	जयपुर	8	हमारा राजस्थान (सामा. विज्ञान)	10	हमारी विरासत का संरक्षण
4.2.14	मंगलवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		बसन्त पंचमी एवं सरस्वती जयन्ती
5.2.14	बुधवार	उदयपुर	12	परीक्षामाला		राजनीति विज्ञान
10.2.14	सोमवार	बीकानेर	12	परीक्षामाला		लेखाशास्त्र
11.2.14	मंगलवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत
12.2.14	बुधवार	जोधपुर	12	परीक्षामाला		हिन्दी साहित्य
13.2.14	गुरुवार	उदयपुर	6	संस्कृत	12	सोमशर्मपितु कथा
14.2.14	शुक्रवार	बीकानेर	12	परीक्षामाला		संस्कृत साहित्य
15.2.14	शनिवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		हमारा लोक साहित्य
17.2.14	सोमवार	जोधपुर	12	परीक्षामाला		कृषि
18.2.14	मंगलवार	उदयपुर	7	संस्कृत	15	लालनगीतम्
19.2.14	बुधवार	बीकानेर	9	विज्ञान	10	गुरुत्वाकर्षण
20.2.14	गुरुवार	जयपुर	9	हिन्दी	11	सवैये
21.2.14	शुक्रवार	जोधपुर	12	परीक्षामाला		इतिहास
22.2.14	शनिवार	उदयपुर	11	हिन्दी	9	भारत-माता
24.2.14	सोमवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		स्वामी दयानन्द जयन्ती
25.2.14	मंगलवार	जयपुर	8	संस्कृत	12	कः रक्षति कः रक्षित
26.2.14	बुधवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		ग्लोबल वार्मिंग
28.2.14	शुक्रवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

शिविरा पंचांग

फरवरी, 2014					
रवि		2	9	16	23
सोम		3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	

● **कार्य दिवस 23, रविवार 04, अवकाश 01, उत्सव 04** ● **1-15 फरवरी**-मीना मंच के अन्तर्गत मीना सुगमकर्ता, मीना प्रेरक ब्लॉक आरपी द्वारा सभी गतिविधियों का मूल्यांकन। **4 फरवरी**-बसन्त पंचमी एवं सरस्वती जयन्ती (उत्सव), गार्गी पुरस्कार समारोह। **6-8 फरवरी**-तृतीय परख (सभी कक्षाओं के लिए) **11-14 फरवरी**-जीवन कौशल विकास बाल मेला (राज्य स्तर) **15 फरवरी**-अभिभावकों एवं शिक्षकों की संयुक्त बैठक आयोजित कर तृतीय परख के प्रगति पत्र का विद्यार्थियों/ अभिभावकों को वितरण एवं शैक्षिक प्रगति हेतु विचार-विमर्श। **24 फरवरी**-स्वामी दयानन्द जयन्ती (उत्सव) **24-28 फरवरी**-शिक्षा संबलन का तृतीय चरण का आयोजन। **27 फरवरी**-महाशिव रात्रि (अवकाश-उत्सव) **28 फरवरी**-राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (उत्सव) **नोट : 1.** 24 व 25 फरवरी को दो दिवसीय द्वितीय संस्था प्रधान वाकपीठ का आयोजन। (प्राथमिक/उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक/उच्च माध्यमिक) **2.** कक्षा शिक्षण प्रक्रिया में सम्बलन के लिए अधिकारियों द्वारा विद्यालयों का अवलोकन करना। (प्रारम्भिक) **3.** माह के अन्त में निर्माण कार्यों व अन्य गतिविधियों के उपयोगिता प्रमाण पत्र प्रेषित करना। (प्रारम्भिक) **4.** राज्य व जिला स्तरीय प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण। **5.** केजीबीवी राज्य स्तरीय खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन।

सभी अच्छी पुस्तकों को पढ़ना पिछली शताब्दियों के बेहतरीन व्यक्तियों के साथ संवाद करने जैसा है।

-रेने इकार्टेस

-विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही अस्त्र है।

-जार्ज बर्नार्ड शॉ

आभौ नापता पांवड़ा (यात्रा वृत्तांत)/ पुष्पलता कश्यप/श्वेता बुक एजेन्सी, 89, शिव कॉलोनी, राजगढ़ रोड़, पिलानी/संस्करण 2013/पृ.सं. 112/मूल्य ₹ 200.00

'आभौ नापता पांवड़ा' ख्यातनाम साहित्यकार पुष्पलता कश्यप द्वारा लिखित यात्रा वृतांत है। राजस्थानी भाषा में लिखे इस यात्रा वृतान्त में सात प्रमुख स्थानों का सांगोपांग वर्णन किया गया है। वर्णन नहीं बल्कि कहना चाहिए कि चित्रण किया गया है। यात्रा वृतान्त को एक चुनौती बताते हुए कहा जाता है कि यात्रा वृतान्त में ऐसा शब्द संयोजन होना चाहिए जिसे पढ़कर एक चित्र पाठक के मनोमस्तिष्क में उभरे। यह चित्रण इतना सजीव हो, जिसे पढ़ते समय शब्दों के साथ स्थान विशेष के दृश्य पाठक को दिखाई देने लग जाए। पुस्तक को पढ़ते समय पुष्पलता जी यात्रा वृतान्त लिखने वालों से की जाने वाली इस अपेक्षा में सर्वथा खरी उतरती है।

कृति आभौ नापता पांवड़ा में कुमाऊं, दार्जिलिंग, काठमाण्डू, शिलांग, पंचकूला, काशी विश्वनाथ, अयोध्या तथा केवलादेवी घना अभ्यारण्य की यात्राओं आदि का वृतान्त शुमार किया गया है। इस संग्रह में न केवल सम्बन्धित स्थानों का दृश्यांकन ही शब्दबद्ध किया गया है, बल्कि वर्णन के समान्तर वहाँ तक जाने, ठहरने जैसी सुविधाओं की भी परोक्ष में जानकारी मिल जाती है। इसमें स्थान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। इससे पहले उनका यात्रा वृतान्त मन बंजारा प्रकाशित हुआ था। इस प्रकार यह उनका इस विधा में दूसरा प्रकाशन है। लेखिका ने दरअसल पूरे देश का भ्रमण किया है। अतः देश के विभिन्न प्रान्तों एवं भूभागों का सुन्दर तुलनात्मक विवेचन करने में वे सफल सिद्ध हुई है। वह कलम की धनी हैं।

एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा यानी देशाटन करते समय अलग-अलग जीवन शैलियों, रीति-रिवाजों, खानपान, आदि से रू-ब-रू होने का अवसर यात्री को मिलता है। ऐसी बहुतेरी यात्राएं किसी न किसी रूप में हम करते हैं, लेकिन कलम की धनी-माँ सरस्वती की उपासक पुष्पलता जी जैसे यात्री कम ही होते हैं जो देखे को लिखे में बदलते हैं तथा यात्रा के साथ-साथ यात्रा पूर्ण करने के बाद पूर्णाहुति के रूप में मन बंजारा एवं आभौ नापता पावड़ा जैसे उपयोगी प्रकाशन देश-दुनिया के सामने परोसते हैं। वे निश्चय ही बधाई एवं साधुवाद की अधिकारी हैं।

सारांशतः कहा जा सकता है कि कदाचित पुष्पलता जी द्वारा स्वान्तः सुखाय भाव से लिखा यह यात्रा वृतान्त बहुत सुन्दर बन पड़ा है। इसका रसास्वादन तो पढ़ने से ही मिल सकता है। समीक्षा की तो एक सीमा होती है। सार और विस्तार में फर्क होता है। इस सार को विस्तार देने के लिए पुस्तक को पढ़ा जाना चाहिए। पुस्तक कागज, कवर एवं मुद्रण की दृष्टि से श्रेष्ठ है। प्रूफ सम्बन्धी कतिपय त्रुटियों की बात न करें तो सब सुन्दर है। यात्रा के जिज्ञासु महानुभावों को पुस्तक का अवश्य पारायण करना चाहिए। इससे न केवल उन्हें इन स्थानों की यात्रा के रोमांच का यात्रा पूर्व अहसास होगा अपितु देखे को लिखे में बदलने की प्रेरणा भी मिलेगी।

–मंजू सारस्वत, कहानीकार
एफ-841, मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर

काव्य सुमन/चेतना उपाध्याय/अर्चना प्रकाशन, बी-6, दातानगर, रेम्बल रोड़, अजमेर/संस्करण 2013/पृष्ठ सं. 72/ मूल्य ₹ 100.00

कविता करना आसान कार्य नहीं है। मन के भावों को कम शब्दों में समेटना और एक अर्थ की झंकार पाठक के हृदय में अनुगुंजित करके छोड़ देना आसान कार्य नहीं होता। शब्दों की भागादौड़ के समय में जब हर व्यक्ति आसान होती तकनीक के साथ आड़े-टेढ़े वाक्यों को छपवा कर लेखक होने का भ्रम पाल कर दौड़ में शामिल है, ऐसे वक्त में जहां चुटकुले और छिछोरी प्रेम रचनाएं काव्य गिना जाने लगी हो तब किशोरमन की बुनियादी चिन्ताओं को लेकर उन्हें सरल शब्दों में मार्गदर्शन देने का प्रयास निस्संदेह सराहनीय है।

काव्य संग्रह "काव्य सुमन" दिशाबोधक बाल चिन्तन में कुल 69 कविताएं हैं जो काव्य उपवन में विभिन्न रंग, गंध और उपयोगिता के सुमन हैं। प्रारम्भ ही बच्चों की चाह से होता है वहां बचपन की तलाश है, बाल मन के नन्हें-नन्हें प्रश्न हैं जो अपनी बात रखते हुए, बड़ों से उसे समझने की कामना करते हैं।

स्वागत, गीत, रक्षाबंधन, खेल भावना, दीपोत्सव, प्रारम्भ नव वर्ष का, नव वर्ष उत्सव, नव वर्ष स्वागत जैसी रचनाएं जहां सीधे सपाट तरीके से पाठक से बतियाती है वहीं कुछ रचनाएं प्रश्नचिह्नों की भांति पाठक के सामने खड़ी हो जाती है।

वो क्या है जो अधूरा नहीं होता
भगवान भक्त के बगैर पूरा नहीं होता।

अधूरेपन की तलाश और उसकी पूर्णता का प्रयास पूरे काव्य संग्रह में स्थान-स्थान पर है। "वैज्ञानिक युग क्या था ?" नामक कविता भी विज्ञान के अति प्रयोग पर प्रश्न उठाती है, तथा भविष्य की चिन्ता भी करती है। "संतुष्टि स्तर" कविता में आगे बढ़ने हेतु "असंतुष्टि" की महत्ता को बतलाती है। यदि व्यक्ति संतुष्ट हो जाता है तो उसकी प्रगति रुक जाती है।

सन्तुष्टि, चलने तो देगी
प्रगति पथ पर साथ न देगी
असन्तुष्टि चलने में बाधक
प्रगति पथ पर साधक होगी.....

ऐसी ही बात थोड़े भिन्न तरीके से उदाहरण सहित अपनी कविता "आत्म सन्तुष्टि के स्वर" में उकेरती है जहां द्वितीय श्रेणी से प्रथम श्रेणी में आने पर खुशी नहीं है,क्योंकि मैरिट में स्थान तो नहीं बना..वहीं ऐसे छात्र भी हैं जो मात्र उत्तीर्णांक प्राप्त कर के भी मिठाईयां बांटते हैं।

संवेदनशील होना एक अध्यापक और लेखक का पहला गुण है और यह संवेदनशीलता पर्यावरण के प्रति चिन्ता में भी दिखती है। "नीम" कविता इसका उदाहरण है। संसार का प्रत्येक अंश प्रेरणा की ज्योति बनता है। सच्चा मनुष्य तभी बनता है जो प्राणिमात्र से गुणों को ग्रहण कर आत्मसात करे। "अपूर्ण शिक्षण" इस काव्य संग्रह की सशक्त रचना है...

तिनका-तिनका चुनना, नीड़ बनाना
हमने पक्षियों से है सीखा....
मगर नहीं सीख पायें
आवश्यकता उपरान्त निर्मोही हो
यों ही छोड़ कर, उड़ जाना.....

ऐसी ही खूबसूरती है "पत्थर और भगवान" को समर्पित "सलाम" कविता में...। आदर्शवादी भावों, को परोटती...अपने आस-पास को धन्यवाद ज्ञापित करती रचनाऐं, जिसमें गांधी, शास्त्री का वंदन है, विवेकानन्द का चिंतन है, हिंदी की चिन्ता है, अध्यात्म के बिखरे रंग भी हैं...। ये आशा बंधाती है कि आज का लेखक मात्र बाजार का गुलाम नहीं हुआ है। अपनी विरासत के प्रति कृतज्ञ है और भविष्य के प्रति सचेत भी है। वर्तमान की तमाम मुश्किलों.... मंथन के इस दौर में भी अपनी

सकारात्मकता को बराबर बनाये रखते हुए उम्मीद का दीपक जलाये रखने में सक्षम हैं।

यूं तो काव्य संग्रह विदुषी कवयित्री और शिक्षिका के गहन चिंतन का प्रतिबिम्ब है किन्तु कुछ कविताएं...अपनी गति और लय की तलाश करती प्रतीत होती है....कहीं-कहीं कथ्य छूटता सा लगता है। ''परीक्षा का बोझ'' कविता एक गंभीर विषय को लेकर चली, किन्तु विषयवस्तु थोड़ा भटक गयी। शब्द और वाक्य विन्यास से एक-दो रचनाएं श्रेष्ठ होने से थोड़ा पीछे रह गयी हैं जैसे ''दिशाएं''। लेखिका बाल मनोविज्ञान की ज्ञाता है... जिसका भरपूर लाभ उन्हें सृजन में मिला है...। समसामयिकता से ओतप्रोत रचनाएं भी काव्य सुमन में सम्मिलित हैं। किन्तु यदि कुछेक रचनाओं के चयन में सावधानी बरती जाती तो यह प्रयास श्रेष्ठतम की श्रेणी में आ सकता था।

''काव्य सुमन'' एक सजीला, संग्रह करने योग्य कविता संग्रह है, यदि लेखिका इसमें कविताओं की गेयता पर भी ध्यान देती तो रचनाएं स्वरबद्ध कर प्रस्तुत करने योग्य बन सकती थीं। उम्मीद है बालमन की पड़ताल करती ऊर्जावान, संभावनाशील लेखिका आगामी काव्य संग्रह में इस आकांक्षा को जरूर पूरा करेंगी। पुस्तक की छपाई, सुन्दर व उत्तम है और कवर पृष्ठ अपने उद्देश्य की पूर्ति का प्रतीक चिन्ह लगता है। शुभ व उज्जवल भविष्य की कामनाओं सहित। सरस्वती के बढ़ते भण्डार में उत्तम व पवित्र रचनाओं से श्री वृद्धि करेंगी, ऐसी कामना है।

–मोनिका गौड़, अध्यापिका
रा.प्रा.वि. खारी चारणान, कोलायत

परम्परागत आलोचना : आलोचना रै आंगणै/डॉ. नीरज दइया/बोधि प्रकाशन, जयपुर/संस्करण 2013/मूल्य ₹ 150.00

'आलोचना रै आंगणै' आलोचना की पुस्तक है। समीक्ष्य पुस्तक में कई विधाओं और राजस्थानी लेखकों को शामिल करने का प्रयास किया है जो अठारह अध्यायों में विभक्त है। डॉ. दइया द्वारा प्रस्तुत अधिकतर आलेख या तो पूर्व में प्रकाशित हो चुके अथवा किसी संगोष्ठी में पढ़े गए हैं, जिसका कारण आलोचना का स्वर विधा अनुरूप प्रस्तुत नहीं किया जा सका जिस प्रकार प्रथम अध्याय 'आधुनिक कविता रा साठ बरस' में राजस्थानी कवि और कविताओं का अध्ययन है और फिर 'श्री प्रेमजी प्रेम की सिरजण-जातरा' में उनकी काव्य जातरा को पूरा स्थान दिया गया। उचित होता कि कविता के अध्याय में इनका अध्याय शामिल होता। ऐसे में पाठक को आलोचना की दृष्टि से पढ़ने में आसानी ही रहती। अगर व्यक्ति परख देखा जाए तो आलोचना की पुस्तक में शख्सियत का सा सांगोपांग आभास होता है, श्री नानूराम संस्कर्ता श्री कन्हैयालाल सेठिया और श्री प्रेमजी प्रेम को पूरा स्थान दिया गया है।

आलोचक ने आधुनिक कविता के साठ वर्ष शीर्षक में राजस्थानी कवियों की कविता के विश्लेषण का प्रयास तो किया है परंतु कवियों के विस्तृत विश्लेषण के आधार पर और अधिक तर्क संगत आलोचना की गुंजाइश नजर आती हैं। आलोचक ने इस अध्याय में नई कविता के टॉप-टेन कवियों कमशः कन्हैयालाल सेठिया, भगवती लाल व्यास, मोहन आलोक, सांवर दइया, चन्द्रप्रकाश देवल, अर्जुन देव चारण और ओम पुरोहित 'कागद' को चुनकर उनकी काव्य यात्रा पर गंभीर विवेचन किया है। इस श्रेणी में मालचंद तिवाड़ी, वासु आचार्य, डॉ. आईदान सिंह भाटी, कुंदन माली एवं स्वयं नीरज दइया सहित अन्य महत्वपूर्ण कवियों की कविताओं पर भी समग्रता से विचार करने की अपेक्षा थी। इन दस कवियों का चयन ही क्यों किया गया इस पर भी तार्किक मंतव्य की आवश्यकता हैं।

पुस्तक में श्री अर्जुनदेव चारण के नाटकों में नारी को सार रूप में प्रस्तुत किया है। चूंकि आंगन आलोचना का है जिसमें अन्य राजस्थानी नाटकों को भी प्रस्तुत किया जा सकता था जिससे आलोचनात्मक परख पाठकों के सामने आती और पाठक को यह जानकारी भी प्राप्त होती कि राजस्थानी में किस प्रकार के नाटक लिखे जा रहे हैं, क्योंकि इस अध्याय में डॉ. दइया ने लिखा है 'नाटक री कथा रो रचाव किण ढाळै करीजे?' और 'इण गति रो लखाव बैवाव में बैवां तद ई हुय सकै। पाणी दैठै री जमी रो अंदाजो पाळ माथै ऊभैनी हुय सकै। गोतो लगायां इ ठाह लागै के मांय काई है, कितो है कठै है।' आलोचक के अनुसार ही कुछ और नाटकों का जिक्र अथवा अन्य नाटकों की परख इस पुस्तक में आलोचना के स्वर में आती तो परख करने की आसानी हो सकती थी।

तीसरे अध्याय-'आधुनिक कहाणी : शिल्प अर संवेदना' के प्रथम ढाई पृष्ठ में आलोचक ने शिल्प संवेदना के जरिये आधुनिक कहानी के रचाव को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। हालांकि आलोचक ने आधुनिक कहानी और कहानीकार की जोरदार व्याख्या करते हुए एक जगह स्पष्ट किया है कि 'आधुनिक कहाणी अेक रचाव है, जिण मायं आगूंच कोई पण कहाणी रो आदि-अंत तै-सुदा कोनी हुवै। कहाणीकार ने कलम लिया पछै ई ठाह कोनी हुवै कै आ कहाणी बणसी का कोनी बणै।' आलोचक राजस्थानी में कहानीकार के शिल्प पर कहते है कि 'आज री आधुनिक कहाणी मायं कहाणीकार री दखल कम सूं कम हुयगी है, सो कहाणी आपरी संवेदना में सांवठी निगै आवै।'

आलोचक संवदेना अर शिल्प री दीठ सूं लोक कथावां में ठैराव अेकरसता रै रूप में निगै आवै मान रहे हैं और आधुनिक कहानी को आलोचक कहाणी मायं तो हरेक कहाणीकार री आपरी निजू शैल्पिक खेचळ संवेदना नै परोटण पेटै देख सकां। लेखक भारतीय भाषाओं के साथ राजस्थानी कहानी को खड़ा मानते हैं। 'आ बात जुदा है कै आधुनिक कहाणी उण परंपरा सूं निकळी है या बगत री मांग स्वीकारता भारतीय भासावां रै जोड़ मांय आधुनिक बणावण खातर कहाणीकार इण नै नुवै सरूप में ऊभी करी है।' आलोचना की दृष्टि से आलोचक राजस्थानी कथाकारों को क्या सुझाव देना चाहते हैं? शेष पृष्ठों में प्रकाशित कहानियों के अंश प्रकाशित करते हुए कहानीकारों के नाम और कहानियों का उल्लेख करते हैं। आगे के अध्यायों में श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' और श्री मोहन आलोक के कथा-संसार को विस्तार देते हुए उन्हीं के कथा संग्रहों के परिपेक्ष्य में उन्हे बेजोड़ कथाकार के रूप में प्रस्तुत किया है। आलोचना की दृष्टि से उनकी कहानियों को अन्य कथाकारों की कहानियों के समकक्ष रखते हुए प्रस्तुत किया जा सकता था।

डॉ. नीरज ने 'लघुकथा री विकास-जातरा' को एक ही अध्याय में प्रस्तुत करते हुए पाठकों के लिए उपयोगी बना दिया है इसमें अनेक लघुकथाओं को स्थान दिया है। आलोचना रै आंगणै में उपन्यासों पर भी परख का जोरदार प्रयास किया गया है। 1999 के साहित्य दरसाव के रूप में भी एक अध्याय 28 पुस्तकों के आधार पर तथा शिक्षा विभाग के राजस्थानी प्रकाशन को भी प्रस्तुत किया है। डॉ. दइया ने राजस्थानी साहित्य के दस वर्षों की परख करते हुए चार पृष्ठों में दस बरसों के साहित्य की शानदार प्रस्तुति की हैं। राजस्थानी भाषा में विविध विधाओं में निरंतर सृजन हो रहा है किन्तु आलोचना के क्षेत्र में गंभीरता से लेखन करने वाले कम हैं।

–राजेन्द्र जोशी
तपसी भवन, नत्थूसर बास, बीकानेर

हमारे भामाशाह

विद्यालयों में उदारमना दानदाताओं के द्वारा लाखों रुपयों का सहयोग कर निर्माण एवं संसाधन जुटाने के महान कार्य किये जाते रहते हैं। प्रति वर्ष 28 जुलाई, भामाशाह जयन्ती के अवसर पर विभाग इन विभूतियों को सम्मानित करता है। इस कॉलम में प्रति माह आदरणीय भामाशाहों के अवदान का वर्णन कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। -वरिष्ठ संपादक

चित्तौड़गढ़

रा.उ.मा.वि., निकुम्भ को श्री मिठूलाल लोढ़ा, व.अ. से दो लोहे की अलमारी लागत 11,000 रुपये। श्री महावीर इण्टरनेशनल शाखा निकुंभ से टाइल्स युक्त की टंकी लागत 21,000 रुपये। श्री मिठूलाल लोढ़ा से DVP Amplifier मय माउथ लागत 5,100 रुपये। रा.मा.वि., देलवास (पं.स. डूंगला) में सर्व श्री भगवान दास वैष्णव, भंवर दास वैष्णव, रतनलाल धाकड़, सन्तोष लाल धाकड़ से प्रत्येक से 7500-7500 रुपये की लागत से पेयजल टंकी का निर्माण करवाया गया। सर्व श्री ओंकार दास वैष्णव, खेमराज मीणा मर्वर लाल नागदा, उदय दास वैष्णव, वृद्धि चन्द सालवी से प्रत्येक से 1,000-1,000 रुपये की लागत से चार दिवारी निर्माण में सहयोग। सर्व. श्री बगदीराम गमेती, सोहन लाल मेनारिया, उदयलाल रावत, हेमराज धाकड़, ओंकार लाल धाकड़, रमेश चन्द वैष्णव, राजेन्द्र प्रसाद भूखिया (व.अ.) प्रत्येक से 500-500 रुपये की लागत से चार दिवारी निर्माण में सहयोग।

चूरू

रा.उ.मा.वि., छापर को श्री बाबूलाल सारड़ा से एक माइक सेट (आहुवा) लागत 16,000 रुपये। श्री हुक्माराम शंकर लाल पलोड़ से ढोलक एवं हारमोनियम (चनि बुबलेट) लागत 12,000 रुपये। श्रीमती धनेश्वरी देवी तोषनीवाल (जसवन्तगढ़) से विद्यालय के छात्र-छात्राओं के लिए वाटर-कूलर की व्यवस्था लागत 55,600 रुपये। श्री कालीदेवी हुक्माराम पलोड़ चैरिटेबल ट्रस्ट, बड़ोदा द्वारा 11,000 रुपये की लागत से जीर्ण-शीर्ण पड़ी प्याऊ का जीर्णोद्धार। स्व. से. धनराज जी कन्हैयालाल दुधेड़िया परिवार से 13 दरियाँ (13×8) लागत 34,900 रुपये। श्री नरेन्द्र कुमार नाहटा से 10 कुर्सियाँ प्लास्टिक लागत 4,000 रुपये। श्री चिमनीराम रतावा (शर्मा) से एक टेबल टेनिस खेल हेतु टेबल (NELCO कम्पनी) लागत 18,000 रुपये। श्री बाबुलाल माली द्वारा 42,000 रुपये की लागत से कार्यालय एवं दरवाजा के पेन्ट एवं 24 ग्रिल। श्री गंगाधर चांडक द्वारा विद्यालय के छात्राओं को भोजन (M.D.M.) कुल खर्च 17,000 रुपये। श्री बाबुलाल सारड़ा द्वारा 18 छात्रों का शुल्क 5,250 रुपये। श्री गणपतराम लक्ष्मी नारायण

रतावा द्वारा 15,000 रुपये की लागत से टेबल टेनिस खेल हेतु लाईट व्यवस्था, श्री नारायण प्रसाद चाड़क से बास्केट बाल मैदान की लाइनिंग लागत 5,000 रुपये। श्री सुमित कुमार शर्मा द्वारा 38,250 रुपये की लागत से दक्षिण दिशा की विंग में पेन्ट, 2 पंखे, 6 बास्केट बाल, 2 वालीबाल आदि। श्री बसंत कुमार चांडक से 2 छत पंखे लागत 2,300 रुपये। श्री राकेश राठी (I.P.S.) से 17 खिलाड़ियों हेतु पोशाक लागत 6,240 रुपये। श्री रूपचन्द दुधेड़िया से छः बास्केट बाल, दो वालीबाल लागत 5950 रुपये। श्री श्याम सुन्दर लखोटिया द्वारा 36 छात्रा-छात्राओं का विद्यालयी शुल्क राशि 13,025 रुपये। श्री बाबुलाल बच्छावत द्वारा दो कमरों में पेन्ट लागत 12,000 रुपये। श्री सुनील कुमार अंसारी (पूर्व छात्र) द्वारा 12 बास्केट बाल खिलाड़ियों को जूते लागत 6,000 रुपये। श्री छतर सिंह छाजेड़ (पूर्व छात्र) से 10 क्रॉम्पटन पंखें लागत 11,350 रुपये। जन कल्याण रा.बा.उ.मा.वि., छापर को श्री रूपचन्द कन्हैयालाल दुधोड़िया परिवार द्वारा 1,00,000 रुपये (एक लाख रुपये) की लागत से इस विद्यालय को 25 बेन्च-टेबल का सैट सप्रेम भेंट। रा.पारख बालिका मा.वि., चूरू में श्री महेन्द्र पारख द्वारा विद्यालय में दो कक्षा-कक्ष मय बरामदा (18×13 तथा बरामदा 6×18) का निर्माण कार्य तथा क्षतिग्रस्त मंदिर का पुनः निर्माण कार्य साथ ही कक्षा-कक्षों में बिजली फिटिंग व दो पंखे भेंट। रा. कन्या उ.प्रा.वि., लम्बोर बड़ी (त. राजगढ़) को श्री सूर्य प्रकाश मित्तल (सी.ए.) से 50 पौशाक (ड्रेस) लागत 10,000 रुपये। स्व. श्री समुन्द्र सिंह फगेड़िया, निहाल सिंह फगेड़िया, सुरेश कुमार फगेड़िया, सोमवीर फगेड़िया से प्रत्येक से बिजली फिटिंग हेतु 2,000-2,000 रुपये नकद। श्री मनसा माता मन्दिर ट्रस्ट से वाटर कूलर 20,000 तथा चार दिवारी का निर्माण लागत 1,00,000 रुपये। श्री कृष्णकुमार मीणा (पूर्व सरपंच) से प्र.अ. कुर्सी एवं मेज लागत 10,000 रुपये। श्री राजेश शर्मा से मोटर व पानी की टंकी लागत 5,000 रुपये। श्री सुल्तान सिंह फगेड़िया से इन्वेटर कम बैटरी लागत 25,000 रुपये। स्व. श्री धूपसिंह फगेड़िया, अनिल फगेड़िया से बिजली मीटर प्रत्येक से 2,100-2,100 रुपये। श्री रणधीर सिंह फगेड़िया से एक पंखा लागत 1,500 रुपये।

प्रतिध्वनि

विज्ञान और दर्शन में अन्तर्सम्बन्ध

28 फरवरी भारत का राष्ट्रीय विज्ञान दिवस है। इस दिन भारत के महान वैज्ञानिक डॉ. चन्द्रशेखर वेंकट रमन ने रमन प्रभाव की खोज की थी। वे रसायनिक संरचना के गहन अध्येता थे। यह उल्लेखनीय है कि उन्होंने 2000 से भी अधिक योगिकों के अणुओं का अध्ययन कर निष्कर्ष दिए थे जिसे रमन प्रभाव नाम से प्रसिद्धि प्राप्त हुई। इस अद्भुत योगदान पर रमन सर को 1930 में नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ। वे विज्ञान के क्षेत्र में भारत के ही नहीं वरन सम्पूर्ण ऐशिया महाद्वीप के पहले वैज्ञानिक थे, जिन्हें नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ। दर असल रमन प्रभाव की खोज को जगजाहिर करने का ऐतिहासिक दिन 28 फरवरी 1928 था। तब से प्रति वर्ष यह दिन देशभर में विज्ञान दिवस के रूप में मनाया जाता है।

विज्ञान को यदि परिभाषित करें तो संघटित ज्ञान का नाम ही विज्ञान है, जिसे प्रयोग द्वारा सिद्ध करके दिखाया जा सकता हैं। विज्ञान का उद्देश्य मानवता के हित में शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व की मंगल भावना को पुष्ट करते हुए विश्व बन्धुत्व एवं मानवीय गरिमा को सुनिश्चित करना है। इस प्रकार विज्ञान की जवाबदेही उस दैविक सत्ता के प्रति भी हैं, जिसके द्वारा विश्व की भौतिक एवं उस पर विचरण करने वाले समस्त जीवों-मानव, पशु-पक्षी और यहाँ तक कि वनस्पति, पेड़-पौधों आदि की संरचना की गई है। मुंशी प्रेमचंद्र ने बहुत तल्ख अंदाज में कहा है कि विज्ञान यदि प्राणियों का उपकार न करे, तो उसका न होना ही अच्छा हैं। केवल जिज्ञासा शान्त करने, विलास में योग देने या यथार्थ की सहायता करने में सहयोग करना उसका दुरुपयोग करना है।

दरअसल यह मान्यता एवं विश्वास की बात है। हमारे यहां कहा जाता हैं कि माने तो देव और न माने तो कुछ नहीं। विश्वास को धर्म कह सकते हैं। विश्वास से फल प्राप्त होता है- विश्वासो फलदायकः। विश्वास की ताकत का भान होना ज्ञान है। यह विश्वास निश्छल होना चाहिए। रामचरित मानस में गोस्वामी जी ने लिखा है, 'निर्मल जन सो मोहि भावा, मोहि कपट छल छिद्र न भावा।' विश्वास का यह ज्ञान एवं इस ज्ञान में आस्था मानवीयता का आधार होती है। आइन्स्टीन ने एक बार कहा था, ''संसार में ज्ञान और विज्ञान दो वस्तुएं हैं।'' ज्ञान को विज्ञान और विश्वास को धर्म कहेंगे। इन दोनों के उपयुक्त सांमजस्य से ही संसार में सुख, शान्ति की स्थापना हो सकती है।

विज्ञान के नाम पर जिस ज्ञान से मानवता को खतरे में डाल दिया जाता हैं, वस्तुतः उसे विज्ञान कहना विज्ञान शब्द का अपमान करना है। वह अज्ञान है, कुज्ञान है। अतः धर्म एवं आध्यात्म से वास्ता जरूरी है। दरअसल आध्यात्म व धर्म को विज्ञान की तरह प्रायोगिक कदाचित नहीं किया जा सकता, मगर इसके अहसास को स्वीकार करना ही पड़ता है। जगत की निर्मित एवं अस्तित्व की जड़ें आध्यात्म में ही है। कम से कम भारत जैसे आध्यात्मिक एवं लोकमंगलमयी उदात्त दृष्टि सम्पन्न राष्ट्र के लिए तो इस दृष्टिकोण को नहीं मानने का कोई प्रश्न ही नहीं है। सूर्य की रोशनी व ऊर्जा, चन्द्रमा की शीतल चाँदनी, मेहपाणी, हजारों प्रकार की वनस्पतियाँ, पेड़-पौधे, मनभावन फल-फूल जिस सत्ता ने दिए हैं, वह आखिर हैं कौन? क्या हम उसे नकार सकते हैं? नहीं, कदापि नहीं। एक सुन्दर कवित्त रचना में कहा है, 'हे भगवान तेरी माया का पार नहीं पाया, धरती और आकाश बीच में खम्भा ना दर्शाया।' नीली छतरी वाले द्वारा बनाए इस अद्भुत घर को जिसने बनाया, वह धर्म है, वह आध्यात्म है। इसकी खोज व अनुसंधान जिसके द्वारा की जा रही है, वह विज्ञान है। इस प्रकार विज्ञान और आध्यात्म में निकट का सम्बन्ध है। आध्यात्म विज्ञान का बड़ा भाई बल्कि कहना चाहिए कि माँ-बाप है। विज्ञान का ही नहीं, हम सबका और समस्त व्यवस्था का।

डॉ. राधाकृष्णन् ने कहा है कि जहाँ विज्ञान हमें बाहरी दुनिया के निर्माण में सहायता करता हैं, वहीं दर्शन हमारे नैतिक और आध्यात्मिक जीवन का निर्माण करता है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का भी कहना था कि विज्ञान में शरीर, मन और आत्मा की भूख मिटाने की ताकत होनी चाहिए। इस प्रकार आध्यात्म और विज्ञान एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। विज्ञान यदि नाव है तो आध्यात्म उसकी पतवार। आध्यात्म जीवन को भीतरी सौन्दर्य प्रदान करता है, तो विज्ञान बाहरी सुख सुविधाएँ। भीतरी सौन्दर्य के अभाव में बाहरी सौन्दर्य मूल्यहीन है।

आध्यात्म और विज्ञान के सह-सम्बन्ध को जानने के लिए विख्यात वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन और प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के मध्य के संवाद को समझना पर्याप्त होगा। वर्ष 1950 में अपनी अमेरीका यात्रा के समय पण्डितजी आइंस्टीन महोदय से मिलने उनके घर गए। वहाँ टेबल पर गीता की पुस्तक देखकर सविस्मय इसका कारण पूछा। पण्डित जी को बड़ा अचम्भा हो रहा था इसके जवाब में आइंस्टीन ने कहा था, ''आपके लिए यह धार्मिक होगी, पर मेरे लिए तो यह एक वैज्ञानिक कृति है। इसमें लॉर्ड कृष्णा ने अपनी बात को जिस तरह से कहा है उसे अपनाने से दुनिया में शान्ति व सुख समृद्धि आ सकती है, अतः यह एक वैज्ञानिक पुस्तक है। आइंस्टीन ने अपना दर्शन इस प्रकार स्पष्ट किया- Religion without Science in blind as in India and Science without Religion in lame as in America but if we want to bring down a Utopia on this earth, we will have to admix them both. Then and then only human race can live in a blissful state.

महात्मा गाँधी ने सन् 1925 में सात प्रमुख सामाजिक विकृतियों की तरफ ध्यान आकृष्ट करते हुए उनसे बचने का आह्वान किया था। इन सात बुराइयों में एक है-मानवताविहीन विज्ञान। इसका आशय यह है कि वैज्ञानिक खोज एवं अनुसंधान के पीछे मकसद मानव कल्याण का होना चाहिए। जीव मात्र एवं सम्पूर्ण पृथ्वी को एक ही परिवार समझकर उसका हित संवर्द्धन भाव वैज्ञानिकों की दृष्टि में रहना चाहिए। जिस विज्ञान से असाध्य बीमारियों से इलाज की औषधियों के उपाय खोजे जाते हैं, उसी से एटम बम बनाने की राह ढूंढ़ी जाती है। यदि ऐसा होता है तो वह अमानवीय है और गाँधी जी के मतानुसार ऐसा मानवीयताविहीन विज्ञान सामाजिक बुराई है। इस प्रकार विज्ञान और दर्शन (Philosophy) दोनों का उचित तालमेल रहना चाहिए। मनीषि विद्वान पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने इस बात को मान्यता प्रदान करते हुए कहा था, ''विज्ञान को दर्शन के साथ तथा दर्शन को विज्ञान के साथ अपना तालमेल बिठाना पड़ेगा। यद्यपि यह आज कठिन दिखाई देता है, पर कल इसकी अनिवार्यता अनुभव की जाएगी। सत्य और तथ्य का उचित समन्वय करने से ही सर्वतोमुखी प्रगति के दोनों पहियें गतिशील हो सकेंगे।'' राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर हमें विज्ञान, दर्शन तथा आध्यात्म के अन्तर्सम्बध को समझकर अपनी सोच विकसित करनी चाहिए। इसी में विज्ञान की प्रतिष्ठा एवं मानव कल्याण का मार्ग निहित है।

-ओमप्रकाश सारस्वत, व.सं.
opsaraswat58@gmail.com

शिविरा पत्रिका मासिक/फरवरी 2014 अंक/प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक विकास एस. भाले, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा द्वारा डिपार्टमेन्ट ऑफ एज्यूकेशन गवर्नमेन्ट ऑफ राजस्थान, बीकानेर के लिए माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर-334011 से प्रकाशित एवं हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर से मुद्रित। © प्रधान सम्पादक : विकास एस. भाले

शिविरा, फरवरी–2014
चित्र समाचार

चौमूं (जयपुर)

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, चौमूं (जयपुर) द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयंसेवक बालिकाओं द्वारा जनहित चेतना रैली का दृश्य।

सूरजगढ़ (झुंझुनू)

राजकीय सार्वजनिक पंचायत समिति पुस्तकालय द्वारा पर्यावरण मित्र कल पुस्तकालय के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण जन चेतना रैली का आयोजन।

अलवर

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक एस.एम.डी. अलवर की राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयंसेवक बालिकाओं द्वारा नागरुकता रैली का आयोजन।

गोलूवाला (हनुमानगढ़)

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गोलूवाला (हनुमानगढ़) राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत पोस्टर का विमोचन हुआ।

जयपुर

गुरुनानक संस्थान भवन, जयपुर के व्याख्याता (चित्रकला) श्री तरुण राज पांचाल की चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन करतीं तत्कालीन माध्य. शिक्षा निदेशक महोदया।

जयपुर

अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेन्स ऑन मिनिचेचर पेन्टिंग्स 2013 में व्याख्याता योगेन्द्र सिंह नरुका को सम्मानित करते पद्मश्री अर्जुन प्रजापति।

डाक पंजीयन संख्या Jaipurcity/406/2014-16 द्विमासिक पत्रिका (मासिक) • फरवरी, 2014 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 फरवरी, 2014 पृष्ठ 52 • मूल्य : दो माह की 5, 6 तारीख

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

माण्डलगढ़ किला

राजस्थान के ऐतिहासिक किलों में भीलवाड़ा के माण्डलगढ़ किले का महत्वपूर्ण स्थान है। स्थापत्य कला एवं वास्तु की दृष्टि से अद्भुत माण्डलगढ़ किला भीलवाड़ा जिला मुख्यालय से 52 किमी दूर स्थित है। इसकी समुद्र तट से ऊँचाई 1850 फीट है। लगभग एक किलोमीटर की लम्बाई में फैले इस किले का निर्माण महाराणा कुम्भा ने करवाया। किला सामरिक दृष्टि से बहुत अहम रहा है जिसका वृतान्त 16वीं से 19वीं सदी के इतिहास में मिलता है। माण्डलगढ़ किले में अनेक प्राचीन मन्दिर स्थित हैं जिनमें जलेश्वर महादेव मन्दिर विशेष उल्लेखनीय है। यह किला देशी-विदेशी पर्यटकों के लिए प्रमुख दर्शनीय स्थल है।

संकलन : श्यामा माहेश्वरी, से.नि. पंजीयक, प्रिंटिंग विभागीय परीक्षाएं/मॉनीटरिंग सर्वे, भीलवाड़ा मो. 9414015741